अंधेरे से परे

अंधेरे से परे

सुरेन्द्र वर्मा

नींद सुबह धीरे-धीरे टूटी, एक तरह से तीन अवस्थाओं में। सबसे पहले सांस लेने का बोध हुआ और देह के स्पंदन का। फिर आसपास के सन्नाटे का आभास हुआ। इसके बाद लगा कि आज जागने में शायद कुछ देर हो गई।

करवट बदली। कुछ क्षण आंखें मूंदे पड़ा रहा। फिर तकिये के नीचे हाथ डाला—पौने आठ।···पल भर को खुशी हुई कि रोजाना के विपरीत पैंतालीस मिनट ज्यादा काटने के बोझ से बच गया।

उठकर बैठा। एक निगाह कमरे में देखा। सब कुछ हमेशा जैसा था। पहचाना। बेतरतीब।···एक लंबी सांस अपने-आप निकली और वहीं कोने में ऊंघता भीगे कंबल-सा बोझ जैसे लपक कर ऊपर छा गया।

चप्पलों में पैर फंसा कर बाहर निकला। बाथरूम में आ, बेसिन पर झुका। मुंह पर ठंडे पानी के पंद्रह-बीस छींटे मारे। आईने में चेहरे व बालों पर फिसलती नन्ही-नन्ही बूंदें देखी।···वही जाने-पहचाने नक्श। वही सूनी आंखें।···होंठों के कोनों पर अनजाने ही मुस्कराहट आ गई—अच्छा, तो आज की सुबह तुम फिर जिंदा पाए गए!

दबे पांव किचिन में आया। गैस के एक चूल्हे पर अंडे उबल रहे थे। केटिल में थोड़ा पानी था। जल्दी-जल्दी गिलास में चाय बनाई और कमरे में आ गया। खिड़की के सामने आ, आहट ली। फिर

चुपचाप बाहर निकला और बरामदे में मेज पर पड़ा अखबार झपट लिया।

बिस्तर पर आ, चाय की पहली चुस्की। तेज। गर्म।···पहला ही समाचार दुखद था। एक बड़ी हवाई दुर्घटना में सौ से ऊपर लोग मर गए थे। दायें-बायें, ऊपर-नीचे भी ऐसा कुछ नहीं था, जिससे जिंदगी पर आस्था होती। देश के एक प्रदेश में सांप्रदायिक दंगा हो गया था, तो दूसरे में अकाल पड़ रहा था। एक बड़े शहर में बाढ़ आ गई थी और एक छोटे गांव में अछूत शिशु की बलि दे दी गई थी। बढ़ती महंगाई की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए महिलाएं संसद के सामने धरना देने वाली थीं और एक बैंक के मैनेजर को तीन लाख के गबन के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया गया था। एक ओर वन्य पशु तेजी से विलुप्त होते जा रहे थे, तो दूसरी ओर एक अकेली युवती के साथ टैक्सी ड्राइवर ने बलात्कार किया था।

घटनाओं और स्थितियों में कोई संगति, रूप या तारतम्य नहीं था। सब कुछ तेजी से विशृंखलित होता जा रहा था। पल भर के लिए मेरा मन सिहर उठा।···इस दुनिया का क्या होगा? क्या बनेगा?

अगले पृष्ठ पर महरौली के निकट गुलाबों के फार्म की निगरानी के लिए किसी अवकाशप्राप्त फौजी अफसर की सेवाएं चाही गई थीं—बाक्स नंबर २६६३···एक गेहुएं रंग की सुंदर, ग्रेजुएट, सरकारी मान्यताप्राप्त स्कूल में पढ़ाने वाली तेईस वर्षीय खत्री युवती के लिए उपयुक्त वर की तलाश। दिल्लीवासी युवक को प्राथमिकता। शादी बहुत अच्छी और बहुत जल्दी। बाक्स नंबर २६६४···

जब संसार विनाश के कगार पर खड़ा है, तब लोगों को गुलाब सूंघने की पड़ी है। जब सारी व्यवस्था ध्वस्त हुई जा रही है, तब भी एक जोड़ी मां-बाप लाड़ली बेटी के प्यार में ऐसी असंगत मांगें कर सकते हैं···कि शालू दिल्ली नगर की सीमा से बाहर न जा पाए! इस पर शादी भी जल्दी···जबकि उम्र अभी मुश्किल से तेईस साल है!

···बारह-तीस पर बहनें दिल्ली 'ए' से अपने पत्रों का उत्तर सुनेंगी···आठ-पचास पर टेलीविजन पर स्पोर्ट्स पत्रिका 'खेल-खिलाड़ी'

…इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में पाँच बजे सूचना प्रसारण मंत्री द्वारा कॉमनवेल्थ एसोसिएशन ऑफ प्लैनर्स के वार्षिक सत्र का उद्घाटन…अब क्या प्लैन करोगे दोस्तो ! जो बचे हैं संग, समेट लो…और फेंको उन पर, जो अभी भी अपनी जिंदगी से उम्मीद बाँधे हैं ।

पर इन सबसे बेखबर लोग अपनी-अपनी योजनाओं में लगे हैं ।…एक लाभप्रद व्यवसाय के लिए कुछ पूंजी की आवश्यकता…दीपचंद डिपार्टमेंट स्टोर द्वारा सिल्क की कमीजों की रिडक्शन सेल…वयोवृद्ध संगीतकार का अभिनंदन…

अब किसी को संतोष का अधिकार नहीं है । अब किसी का सुकून पर दावा नहीं है ।

इतनी बेइंसाफी क्यों होती है दुनिया में ?…शालू को गेहुँआ रंग मिला है, वह सुंदर भी है और पढ़ी-लिखी भी । उसके पास अच्छी नौकरी भी है, और माँ-बाप का गहरा स्नेह भी पाए है और सिर्फ तेईस साल की आयु में वह अपने ही शहर के एक भले-से युवक के साथ व्यवस्थित होने जा रही है । यह गलत है ! यह सरासर धाँधली है शालू ! जब तक तुम्हारी उम्र के मेरे जैसे लोग जिंदा हैं, तब तक तुम्हें इस तरह आबाद होने का कोई हक नहीं पहुँचता ।…तुम अपने बाप के यहाँ से रामचंद्र कृष्णचंद्र स्टोर की सुनहरे काम वाली ब्राकेड की साड़ी का पल्लू सँभालते हुए निकलोगी और अपने सजे-सजाए कालकाजी के फ्लैट में चली जाओगी, जो अब तुम्हारा होगा, तुम्हारा अपना, तुम्हारा बिल्कुल अपना…जिसकी दीवारों में तुम्हारे लिए लगाव है, जिसकी फिजा में तुम्हारे लिए सरोकार है ।

एकटक अपने कमरे की चारों दीवारें देखता हूँ…आठ बाई दस का फैलाव, पीछे खुलने वाली काली सलाखों की खिड़की…एक बिस्तर, एक मेज, एक आलमारी…बाईं दीवार में बनी आलमारी में किताबों की कतारें…और गंध…बोझिल अतीत की गंध । दुष्कर वर्तमान की गंध । सूनापन…वीरानी…चौबीस सालों के झंखाड़े, अगाध बोझ की बू…

जब दूसरी बार बाहर निकला, तो दस बजने को थे। जाने वाले जा चुके थे, इसलिए किचिन में घुसते ही झिझक नहीं हुई···पर अपने इस अहसास पर शर्मिन्दगी, हल्की-सी···कोई देखने वाला हो, तो शर्म ज्यादा। न हो, तो कम।

अंडे थे। पर नहीं लिए। सिर्फ दो स्लाइसें सेंकी। मक्खन थोड़ा-सा, ताकि बस गले से उतर जाए। जैम बाहर ही रखा था। पर नहीं लिया और कुछ भी नहीं उठाया। न बिस्किट, न कार्न फ्लैक्स।···मग में एक चम्मच काफी डाली। उबला हुआ पानी। थोड़ा-सा दूध। एक चम्मच चीनी।

बाहर बरामदे में निकल आया। बेंत की कुर्सी पर बैठा। एक घुटना दूसरे घुटने पर रख, पांव मेज पर टिका लिया।···एक घूंट। गर्म-तल्ख। मिठास कुछ कम लगी। पर स्वाद के सुख के लोभ को मन से निकाल दिया।

सामने सड़क पर ट्रैफिक था। सुबह का ताजा, गतिशील ट्रैफिक। बीच-बीच में हॉर्न। उतावले। व्यग्र।

अहाते में धूप बिखरी थी। हवा की थिरकन से अस्त-व्यस्त होती। पौधों की पत्तियों पर तितली की तरह चौकन्नी।···गेट तक के कच्चे रास्ते पर टायरों के निशान। जहां-तहां सूखी पत्तियां।

मौन। ठहराव।

टन्न्-टन्न्···टन्न्···दो बार। तीन बार।

आखिरी घूंट लेकर अंदर घुसा। रिसीवर उठाया।

'हैलो···!'

'मिसेज बत्रा हैं क्या ?'

'जी नहीं, दफ्तर चली गईं।'

'ओह···' क्षणिक विराम, 'गुल्लू हो न ?'

'जी।'

'मैं मिसेज माथुर बोल रही हूं। कैसे हो ?'

'जी, ठीक···शुक्रिया···।'

क्लिक।

रिसीवर रखा। पैड पर लिखा—मिसेज़ माथुर का फ़ोन। दस-दस पर।

बस नंबर नौ-ए ने कृषि भवन के स्टॉप पर उतार दिया। शेड के नीचे से दो-चार लोग निकले और बुझते धुओं जैसी व्यग्रता से पायदान पर चढ़ गए।

यथाशीघ्र कदम सामने की तरफ़ चला और फ़ाइन आर्ट्स के गेट के सामने ठिठका। आधे मिनट के लिए खुली सड़क पर चलने से ही माथे पर पसीने की बूँदें उभर आईं।…ऊपर सूरज जल रहा था। धूप की तपिश से सड़क के दोनों किनारों पर कोलतार पिघलने लगा था। ऊपरी सतह की सपाट फ़िनिशिंग मिट चुकी थी और दलदले मिश्रजिस्म पर मोटर-टायरों के निशान थे।

लंबे कदमों से सड़क पार करके कंपाउंड में दाख़िल हुआ। लाइब्रेरी की खिड़कियों के शीशों में तपती चमक थी। सामने हरी घास की लंबी पट्टियों पर निगाह दौड़ाई, लेकिन ज़र्द हरियाली तनिक भी ठंडक नहीं पहुंचा सकी।

कांच का दरवाज़ा खोलकर अंदर घुसा। एयरकंडीशन की सर्द लहर आलिंगन की तरह बांधने लगी…ये कुछ क्षण, जब देह पर चुनचुनाहट की सिहरन को यह जगह कोमल, नम उंगलियों के समान छूती, सहलाती है। त्वचा सोखते की भांति इन स्पर्शों को अंदर जज़्ब करती है…और फिर बदन में स्वर-लहरियों के जैसी थिरकती शीतलता की तरंगें…।

पत्रिकाओं वाले हिस्से में आ, गिलास में ठंडा पानी भरा और छोटे-छोटे घूटों में खाली कर दिया।

वापस आ सामने ईशु-काउंटर पर लगी घड़ी देखी—एक-चालीस। सारी दोपहर यहां काटनी है।…असहाय-सी निगाह उस गोलाकार घड़ी पर गई…जब तक छोटी सुई पांच के कुछ पहले नहीं आती, तब तक…हम हैं, बचपन है, और मातम बासो-पर का है।… ढमढमढा, ढमढमढा, ढमढमढा, ढमढमढम…पमपमपमपम, पमप-

जब दूसरी बार बाहर निकला, तो दस बजने को थे। जाने वाले जा चुके थे, इसलिए किचिन में घुसते ही झिझक नहीं हुई···पर अपने इस अहसास पर शर्मिन्दगी, हल्की-सी···कोई देखने वाला हो, तो शर्म ज्यादा। न हो, तो कम।

अंडे थे। पर नहीं लिए। सिर्फ दो स्लाइसें सेंकी। मक्खन थोड़ा-सा, ताकि बस गले से उतर जाए। जैम बाहर ही रखा था। पर नहीं लिया और कुछ भी नहीं उठाया। न बिस्किट, न कार्न फ्लैक्स।···मग में एक चम्मच काफी डाली। उबला हुआ पानी। थोड़ा-सा दूध। एक चम्मच चीनी।

बाहर बरामदे में निकल आया। बेंत की कुर्सी पर बैठा। एक घुटना दूसरे घुटने पर रख, पांव मेज पर टिका लिया।···एक घूंट। गर्म-तल्ख। मिठास कुछ कम लगी। पर स्वाद के सुख के लोभ को मन से निकाल दिया।

सामने सड़क पर ट्रैफिक था। सुबह का ताजा, गतिशील ट्रैफिक। बीच-बीच में हॉर्न। उतावले। व्यग्र।

अहाते में धूप बिखरी थी। हवा की थिरकन से अस्त-व्यस्त होती। पौधों की पत्तियों पर तितली की तरह चौकन्नी।···गेट तक के कच्चे रास्ते पर टायरों के निशान। जहां-तहां सूखी पत्तियां।

मौन। ठहराव।

टन्न्-टन्न्···टन्न्···दो बार। तीन बार।

आखिरी घूंट लेकर अंदर घुसा। रिसीवर उठाया।

'हैलो···!'

'मिसेज बत्रा हैं क्या?'

'जी नहीं, दफ्तर चली गईं।'

'ओह···' क्षणिक विराम, 'गुल्लू हो न?'

'जी।'

'मैं मिसेज माथुर बोल रही हूं। कैसे हो?'

'जी, ठीक···शुक्रिया···।'

क्लिक।

रिसीवर रखा। पैड पर लिखा—मिसेज माथुर का फ़ोन। दस-दस पर।

बस नंबर नौ-ए ने कृषि भवन के स्टॉप पर उतार दिया। शेड के नीचे से दो-चार लोग निकले और डूबते हुओं जैसी व्यग्रता से पाय-दान पर चढ़ गए।

धनाशेक कदम सामने की तरफ़ चला और फ़ाइन आर्ट्स के गेट के सामने ठिठका। आधे मिनट के लिए खुली सड़क पर थमने से ही माथे पर पसीने की बूंदें उभर आईं।…ऊपर सूरज जल रहा था। धूप की तपिश से सड़क के दोनों किनारों पर कोलतार पिघलने लगा था। ऊपरी सतह की सपाट फ़िनिशिंग मिट चुकी थी और दलदले लिजलिजेपन पर मोटर-टायरों के निशान थे।

लंबे कदमों से सड़क पार करके कंपाउंड में दाखिल हुआ। लाइ-ब्रेरी की खिड़कियों के शीशों में तपती चमक थी। सामने हरी घास की लंबी पट्टियों पर निगाह दौड़ाई, लेकिन यह हरियाली तनिक भी ठंडक नहीं पहुंचा सकी।

शीशे का दरवाज़ा खोलकर अंदर घुसा। एयरकंडीशनर की सर्द लहर आलिंगन की तरह बांधने लगी…वे कुछ क्षण, जब देह पर चुन-चुनाहट की सिहरन को यह जगह कोमल, नम उंगलियों के समान छूती, सहलाती है। त्वचा सोखने की भांति इन स्पर्शों को अंदर जज़्ब करती है…और फिर बदन में स्वर-लहरियों के जैसी थिरकती शीतलता की तरंगें…।

पनिहाराओं वाले हिस्से में आ, गिलास में ठंडा पानी भरा और छोटे-छोटे घूंटों में खाली कर दिया।

वापस आ सामने ईशु-काउंटर पर लगी घड़ी देखी—एक-चालीस। सारी दोपहर यहीं काटनी है।…असहाय-सी निगाह उस गोलाकार घड़ी पर गई…जब तक छोटी सुई पांच के कुछ पहले नहीं आती, तब तक…हम हैं, वक्त है, और मानस शीशे-भर का है!…टकटकमटा, टकमटकमटा, टकमटकमटा, टकमटकमटक…पटमपटमटम, पटम-

पमपम, पपमपमपम पपमपमपम···इपिपपिप्पा, इपिपपिप्पा, इपिपपिप्पा, इपिपपिप्पा। अजी हम हैं, कफस है और मातम डमडमाडमडम···

खट्···बगल में ऊंची आहट से एक युवती ने कुर्सी पीछे खींची और बीटल बूट की खट्-खट् के साथ दरवाजे के निकट चैकिंग काउंटर तक पहुंची। उसकी अधपढ़ी पत्रिका के पन्ने सरसरा रहे थे···वीमेन्स वीकली···

सामने की तीन मेजों पर दस-ग्यारह लोग पत्रिकाएं पढ़ रहे थे—दो वृद्धा, तीन अधेड़, तीन लड़कियां, एक स्त्री और एक बच्चा···

टहलता हुआ सामने के हिस्से में आ गया।···एक कार्य-दिवस में ग्यारह बजे बाहर की सारी भाग-दौड़ से कटकर पैंतालीस व्यक्ति इस द्वीप में विद्यमान हैं। नौ-दस विद्यार्थियों को छोड़ दें, जिन्हें अपना भविष्य उज्ज्वल बनाना है तो शेष लोगों की मौजूदगी का कारण क्या हो सकता है ? क्या सभी को दूर-दराज के कोनों से यहां आने के लिए 'ज्ञान की पिपासा' ने प्रेरित किया है ?

यकायक महसूस हुआ कि सामने की युवती पढ़ नहीं रही है—हथेली पर चिबुक टिकाए एकटक देख जरूर रही है पृष्ठ की ओर, पर उस दृष्टि में विषय की तन्मयता नहीं, ध्यान कहीं और चले जाने का साक्ष्य है और पन्ना भी देर से पलटा नहीं गया है।

दूसरे क्षण आशंका हुई कि मैं अपना खालीपन दूसरों पर आरोपित कर रहा हूं।···अच्छा, पचास तक गिनता हूं। अगर पृष्ठ बदला नहीं गया, तो···

···दो···छह···आठ···युवती ने सहसा पर्स से रूमाल निकाला और आंखों पर दबा लिया। सफेद जमीन पर फीरोजी चौखाने वाला कोना होंठों तक के भाग को ढंके हुए था, इसलिए मालूम नहीं हुआ कि चेहरे पर आवेग का प्रतिशत कहां तक है।

एक क्षण के लिए मन में इस अचानक भावोद्वेलन का कारण जानने की उत्सुकता जागी। फिर अगले ही पल इस असभ्य इच्छा के सुगबुगाने पर शर्मिन्दगी हुई···।

दुख का सम्मान करो। दुख को एकांत दो।···निःशब्द उठा और

बगल के दोस्तों से घिरे गलियारे में आ गया। मेज पर बैठा। सामने एक पत्रिका थी। मुखपृष्ठ पर व्हाइट हाउस और उस पर गुटर-इंगेज टेप रिकार्डर···। स्थिति बिगड़ गई है। इम्पीचं की मांग हर तरफ से जोर पकड़ रही है। पर मजबूरी है।···क्यों?···राष्ट्रपति का आत्म-मेसक छुट्टी पर है।

मैं?···मैं क्या करूं? क्या विश्व-नागरिक की हैसियत से अपना कर्तव्य निभाऊं?

मेरे प्रिय देशवासियो,

अपने देश की स्थितियों के बारे में पहले भी मैंने व्हाइट हाउस से आपसे बातें की हैं। आज मैं आपसे कुछ भिन्न कहने जा रहा हूं। मैं आपको एक निर्णय के बारे में बतलाने जा रहा हूं, जो मैंने लिया है।

लेकिन इससे पहले कि मैं आपको इस निर्णय के बारे में बतलाऊं, मुझे कहने दीजिए कि राष्ट्रपति पद का भार आसान नहीं है, जैसा कि मुझे विश्वास है कि आप अच्छी तरह समझते हैं। इसके साथ वे दैनिक कार्य-कलाप जुड़े हुए हैं, जिनका असर घर और बाहर के करोड़ों लोगों पर पड़ता है।

राष्ट्रपति पद के सामान्य दायित्वों—जो वैसे असामान्य हैं—के साथ-साथ इस वर्ष मुझे वाटरगेट की अनीति भी झेलनी पड़ी है, अनेकानेक जांच समितियों की मांगें व दबाव सहने पड़े हैं और व्हाइट हाउस को निरंतर बढ़ते हुए आक्रमणों का शिकार होते देखना पड़ा है। मुझे बताया गया है कि दूरदर्शन के एक कार्यक्रम में मेरे चेहरे पर थकान के चिह्न स्पष्ट थे। चेतना की ऐसी स्थिति में इस पद के कार्य को संभालना बहुत कठिन है। लेकिन राष्ट्रपति की मुश्किलें उन दबावों और प्रतिरोधों के सामने कुछ भी नहीं हैं, जो वाटरगेट ने देश को दिए हैं। बाहर हमारी प्रतिमा खंडित हो रही है और अंदर देश टूटता जा रहा है।

अगर [redacted] आपसे कहूं कि वाटरगेट को लेकर मेरी अंतरात्मा बिल्कुल साफ है, तो मैं आपको पूरा सच नहीं बतलाऊंगा। गलतियां हुईं

हैं, दूसरों के द्वारा—और मेरे द्वारा भी। कहने की जरूरत नहीं कि मुझे उनके लिए दुख है, क्योंकि राष्ट्रपति को नैतिक लांछनों से परे होना चाहिए।

इसलिए, मेरे प्यारे देशवासियो, बहुत सोच-विचार के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि राष्ट्रपति पद का भार अब मैं और नहीं संभाल सकता। इस प्रसारण के बाद मुख्य न्यायाधीश उपराष्ट्रपति श्री फ्रैंक सिनाट्रा को संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के अड़तीसवें राष्ट्रपति की हैसियत से शपथ दिलवाएंगे और उसी क्षण से राष्ट्रपति पद की कार्यकारी शक्ति उनके हाथ में होगी।

इस प्रकार, मेरे प्यारे देशवासियो, राष्ट्रपति के रूप में मैं आपको आखिरी बार संबोधित कर रहा हूं। मेरे लिए यह बहुत दुख का क्षण है। पच्चीस से अधिक वर्षों तक मैंने भरसक आपकी सेवा की है। मेरे शब्द व मेरे काम सुरक्षित हैं और मैं उन्हें इतिहास के निर्णय पर छोड़ता हूं।

मैं जानता हूं कि अपने राजनीतिक विचारों के बावजूद आप नये राष्ट्रपति को वही सद्भावना और सहयोग देंगे, जो आपने मुझे दिया है, क्योंकि अंततोगत्वा महत्त्वपूर्ण राष्ट्रपति का पद है, व्यक्ति नहीं।

धन्यवाद ! शुभरात्रि और विदा !

एक गिलास पानी पिया। मनोविज्ञान का एक लेख पढ़ा। फिर एक गिलास पानी पिया और शेल्फ के पास खड़ा सोचता रहा कि कौन-सी पत्रिका देखूं। नारी-सौंदर्य की एक पत्रिका में अलग-अलग देशों की युवतियों का प्रतिनिधित्व था—जापान, ब्रिटेन, रूमानिया, स्वीडन, रूस ···अचानक प्रेमिका की याद आई।···

उतावले कदमों से संदर्भ के एक शेल्फ तक आया। दूसरे खाने के कोने में सुनहरी धारियों के साथ काली जिल्द वाली एनसाइक्लोपीडिया रखी थी। चेखव की जीवन-कथा वाले भाग में पृष्ठ चार सौ पैंतालीस ···बड़ा-सा चित्र, शीर्षक 'परिवार और मित्र', तिथि १८९०, स्थान सादोव्या कुद्रिन्स्क्या स्ट्रीट, अंगूर के बड़े-बड़े पौदों के नीचे···युवा चेखव, उसकी बहन, बहन के दोस्त, तीन भाई, सफेद दाढ़ी वाले पिता, बड़े

रिबन वाली टोपी में कान बाहर निकाले मां, स्कूल की पोशाक में जरूरत से ज्यादा बड़े हैट के साथ सरयोझा…और वही, दूसरी पंक्ति के दूसरे बायें कोने में, वह थी—मेरी प्रेमिका…बड़ा माथा, तराशी हुई चिबुक, संवरे बाल। तनिक मुस्कराती हुई। शीर्षक में उसका नाम था—अज्ञात मित्र। तस्वीर में वह उन्नीस-बीस की दिखाई देती थी—लाइका मिजिनोवा, चेखव की बहन की सहेली के बगल में बैठी, होंठों के कोनों से नामालूम-सी मुस्कराती निगाहें—गलत अंदाज से मुझे देखतीं…।

यह प्रेम-व्यापार साढ़े चार साल चला था।

पीले पड़े पन्ने से समय की गंध आई।…अगर जीवित है, तो अब लगभग सौ वर्ष की होगी—सोवियत यूनियन के किसी कोने में कृशकाय बूढ़ा, अगर विवाह हुआ हो, तो परनानी…अन्यथा मास्को के एक आधुनिक फ्लैट में शाम के नीम अंधेरे में दुबली, लंबी उंगलियों से प्यानो बजाती अकेली, एकाकी…मेरी तरह…

चेहरे की ऐसी कमनीय बनावट, निर्दोष ठोढ़ी, सकरी स्लाविक आंखें, तातारी गर्दन का खम, सफेद स्काफ में ढंके कंधों का आकर्षक कटाव…

'त्रिवेणी' की टैरेस। एक कोना। बगल के खंभे पर लगातार दो चिड़ियों की चूं-चूं। सामने थियेटर की नीचे चली गई सीढ़ियों पर जगह-जगह मिट्टियों के ढेर।

बेटर कॉफी छोटी मेज पर रख जाता है।…एक घूंट। गर्म। तल्ख।…सिगरेट का एक कश। लंबा। तीखा।

बाईं ओर न दिखाई देने वाली स्टेज पर कोई रिहर्सल चल रही है। नृत्य की। घुंघरुओं की छम-छम और तबले की थाप बीच-बीच में सुनाई दे जाती है।

एक घंटा हो गया।
पैसे मेज पर रखता हूं।
एक कॉफी के सहारे और कितनी देर बैठ सकता हूं!

रे-धीरे बंगाली मार्किट तक आता हूं। कोने की दूकान से सिग-ट लेता हूं। सुलगाता हूं।...अब कहां जाया जा सकता है? कहीं हीं। अब किससे मिला जा सकता है? किसी से नहीं।

ढलती शाम। गहरा चुका अंधेरा। काले शून्य में लटके लैंप-पोस्ट। कुछ दूर तक दिखाई देती सड़क की सतह।

...अपने ही कैनवास के जूतों की हल्की आहट। किताब बगल में दबी। दोनों हाथ जेब में।

कच्चा रास्ता। कहीं-कहीं घास-फूस।

गहरी पृष्ठभूमि में मकान की कुछ हल्की काली रूपरेखा। एक खुले दरवाजे से रोशनी। हल्की। पीली-सी।

गेट से भीतर दाखिल हुआ। तुरंत गीली घास की गंध। फूलों की महक से मिलीजुली। पाइप से पानी के बहने की मद्धिम आवाज। झिल्लियों की निरंतर झन-झन। आहट से चौंक कर दो-चार कड़ियां कटीं। फिर वही अनवरत बुनावट।

एक बार लगता है, जैसे इस अंधेरी शाम को इस घर में, अभी-अभी, पहले भी प्रवेश कर चुका हूं। बाहर से भीतर जाने का यह सिल-सिला बहुत आवृत्तिमय है...जैसे मैं होश संभालने से लेकर अब तक बस, यही करता रहा हूं—आना और जाना, जाना और आना...

बरामदे में दाईं ओर ममा थी। मेज और बायां हिस्सा खंभे की ओट में, इसलिए तीन-चार कदम चलने के बाद ही बिंदो दिखाई पड़ी।

'हैलो...!' उसने देखते ही पुकार लगाई। ताजी-ताजी लग रही थी, कहीं जाने को तैयार।

बिंदो के लिए हल्की मुस्कान के साथ सामने बैठ गया।

ममा की निगाह पहले की तरह अखबार पर थी।

'कहां से आ रहे हो?' बिंदो ने एक दूसरे कप में पानी डालते हुए पूछा।

ममा के होंठों के कोने व्यंग्यभरे ढंग से तनिक सिकुड़ते लक्षित हुए

मन ही मन थोड़ा संकुचित हुआ। बिंदो को अक्सर ख्याल नहीं रहता कि कहां क्या कह रही है।

'लाइब्रेरी से।'

'क्या पढ़ते रहे आज?'

'ऐसे ही…एक-दो मैगजीन…'

उसने चीनी चलाकर कप सामने रख दिया। 'क्या लाए हो?'

किताब उसके हाथ में दे दी। वह यहां-वहां से पन्ने पलटकर देखती रही। एकाध जगह कुछ पढ़ा, 'मुझे देना। आज पढ़ने को नहीं है कुछ।'

हामी में सिर हिलाया।

'देखूं ज़रा।' ममा ने बिंदो से किताब ले ली।

चाय का एक घूंट लिया।

'सुबह मेरे देखते-देखते एक एक्सीडेंट हुआ, जयसिंह रोड पर। एक आदमी साइकिल पर सीधा-सादा जा रहा था कि पीछे से एक मोटर साइकिल निकली। दाईं तरफ से उसे ओवरटेक करने में…' बिंदो ने आंखें आधी बंद करके सिहरने का अभिनय किया, 'उफ, मुझसे आदमी का खून नहीं देखा जाता।'

सहसा ममा ने भौंहें चढ़ाकर मेरी ओर देखा, 'बड़ी ऊंची नौकरी मिल गई है!' फिर बिंदो की ओर, 'अमेरिकन प्रेसीडेंट के स्पीच-राइटर हो गए हैं!'

और कागज बिंदो के सामने कर दिया। वह ध्यान से पढ़ने लगी।

'बहुत अच्छा लिखा है गुलशन!' बिंदो ने चटखारा-सा लिया।

'अगर ये सब हिमाकतें छोड़कर ज़रा संजीदगी से सोचो कि तुम क्या हो और क्या होने जा रहे हो…'

'ममा!…' बिंदो के स्वर में आपत्ति थी।

फोन की घंटी बजी। फिर जित्तन ने झांका।

'ममा, आपका फोन…'

बिंदो ने कलाई मोड़कर घड़ी देखी।

'थोड़ी चाय है क्या?' जित्तन दरवाजे पर ही ठिठके थे।

'हूं…' बिंदो ने कहा और चाय के पानी से ही अपना कप साफ

कर लिया ।

'तुम जा रही हो कहीं ?' जित्तन ने बगल की कुर्सी खींच ली ।

'हूं···' विदो विचारमग्न-सी, सिर झुकाए दूध मिला रही थी ।

'कहां ?'

'लतिका के साथ···।' और कप जित्तन के सामने खिसका दिया । फिर पर्स से दो सफेद-गोलियां निकालीं । रैपर से पहचाना, ये उसकी मूड ऐलीवेटिंग गोलियां थीं ।

कुछ क्षण चुप्पी रही । अंदर से बीच-बीच में ममा की आवाज सुनाई दे जाती थी, 'अच्छा···रियली···? फिर ?'

विदो ने एक बार छड़ी की ओर देखा और एक बार जित्तन की ओर, 'तो मैं क्या जवाब दूं लतिका को ?'

जित्तन की आंखों में तनाव कौंध गया । उन्होंने सामने देखते हुए चुपचाप दो-तीन घूंट भरे ।

'बोलो ?' विदो का स्वर समतल था, पर उसमें चेतावनी की भनक थी ।

'कह तो दिया था मैंने !' जित्तन चिढ़े-से बोले ।

'और मैंनें भी तुमसे कह दिया था ।'

'क्या कह दिया था ?'

'कि फिर सोचकर देख लो ।'

'क्या सोचकर देख लूं ! इतनी बड़ी कंपनी की असिस्टेंट मैनेजरी के बाद चार सौ रुपल्ली के लिए दर-दर भटकना···'

विदो कुछ क्षण एकटक देखती रही । उसके चेहरे पर कई भाव आए और गए, 'देखो, थोड़ी देर ठंडे दिल से सोचो ।' उसका स्वर शांत था, 'हमें तो लतिका के डैडी का अहसान मानना चाहिए, वरना तुम्हारी जो हालत है, उसमें कोई ऐसी नौकरी भी नहीं देगा ।'

पल भर को जित्तन का चेहरा बुझ गया । पर अगले ही क्षण वह फिर भभक पड़े, 'क्यों ? क्या है मेरी हालत ?···चार दिन बाद केस का फैसला,हो जाएगा, तो···'

'केस का फैसला अभी पांच साल और नहीं होगा ! इस मुल्क की

अदालतों को तुम जानते नहीं हो ? और मान लो, रिश्वत का जुर्म साबित हो गया, तो ?' थोड़े मौन के बाद बिंदो ने आवाज नीची कर ली, 'सस्पेंड हुए पूरा साल होने को आ रहा है। जो थोड़ा-सा बचाया था, खा-पीकर बराबर कर चुके हैं···अपना नहीं, मेरा नहीं, कम से कम बच्चे की तो सोचो।'

जित्तन ने सोचा। फिर झुंझला पड़े, 'घर-घर जाकर स्टेनलेस स्टील के बर्तनों का ऑर्डर लेना···मेरे जैसे आदमी के लिए कितनी जलालत का काम है।'

बिंदो जित्तन का चेहरा देखती रही, जैसे कुछ रेखाएं पहली बार देख रही हो, 'एक बात पूछूं ?' उसका स्वर धीमा था।

जित्तन ने सवालिया निगाह से देखा।

'ससुराल में इस तरह रहते हुए तुम्हें कोई जलालत महसूस नहीं होती ?'

कमरा खोला। बत्ती जलाई। सब कुछ वैसा ही था, जैसा सुबह छोड़ा था। जीन्स कुर्सी पर पड़ी थी। कुर्ता बिस्तर पर। एक चप्पल तिपाई के पास। दूसरी पलंग के पाए के निकट। खुली किताब उल्टी रखी हुई, जहां पढ़ते-पढ़ते छोड़ी थी।

वही मनःस्थिति जैसे कमरे में ठहरी हुई थी—जाल फैलाए। दिन भर की बाहरी उन्मुक्तता इस चारदीवारी में आकर फिर सिमटने लगी। सुबह की उस व्यग्रता पर बोझिल शर्म आई, जिसने इस तरह बाहर निकलने पर विवश किया था।

कुछ क्षण कमरे को उसी तरह देखता रहा।···स्टिल लाइफ··· जब बाहर खुली धूप के विस्तार में था, भीड़ की चहलपहल में, ऊंचे शोरगुल व कोलाहल के बीच, तब भी सुबह दस-पंद्रह पर छोड़ी गई वह निष्क्रिय, सर्द उदासी इस फर्श पर रेंग रही थी, घड़ी की अनवरत टिक्-टिक् के साथ इसी उलझे जाल के ताने-बाने बुनती जा रही थी।

वही मनःस्थिति यहां स्थिर थी—प्रतीक्षालीन।

खुले नल के नीचे। पानी की धार—मोटी। तेज। दिन भर बाहर रहने के बाद खाल पर गुनगुनी चींटियों-सी अनुभूति को धोती। सिर पर गिरती, कंधों पर फिसलती, नीचे उतर जाती। शीतलता पहले सतह पर। फिर त्वचा सोख्ते की तरह ठंडक को भीतर जज्ब करती हुई।

देह पोंछना। कपड़े पहनना। कमरे में वापसी।

दरवाजे पर खड़े-खड़े कुछ देर भीतर निहारना।…अच्छा, तो यह कमरा है!

खिड़की खोलना। पर्दा हटाना।

सोचना, कि अब क्या करना है! क्या किया जा सकता है?

रेडियो?

इस समय प्रादेशिक समाचार, लोकसंगीत या फिल्मी गीत…। नहीं।

कोई प्रार्थना-पत्र लिखने को?

सुबह अपने लायक कोई विज्ञापन नहीं।

…तो पढ़ूं?

और किया ही क्या जा सकता है!

पर क्या पढ़ूं?

बहुत कुछ है। बारी-बारी से ये तीन-चार किताबें।

…बिस्तर पर तकिया आड़ा लगाया। पीठ पीछे लगाकर बैठ गया।

सबसे ऊपर की किताब मेज से उठा ली।

पैरों पर किसी मुलायम चीज का स्पर्श…एकदम झपटकर सीधा हुआ।…पंजे सीधे किए, पूंछ उठाए जुगनू तनकर खड़ी थी—कान चौड़े। मुझे चौंका देख उसने मुंह खोला और जैसे आश्वासन के लिए 'म्याऊं' कहा।

'तू कहां थी?' उसे गोद में ले लिया और पीठ सहलाई, 'सोमू कहां है?'

सोमू दरवाजे पर दिखाई दिया, 'घर में कोई नहीं?' स्वर में

हलकी निराशा, जैसे कोई वादा पूरा न किया गया हो।

उसकी ओर न देखते हुए इनकार में सिर हिलाया।

वह बढ़कर बगल की कुर्सी पर बैठ गया, 'पापा कहां गए हैं ?'

क्षण भर ठहर कर कहा, 'मालूम नहीं।' और जुगनू के दोनों पंजे अपनी दोनों हथेलियों पर रख, उसे पिछले पंजों के सहारे चलाने की कोशिश की।

'तुमसे बोलकर नहीं गए ?'

पल भर रुक कर फिर नाहीं में सिर हिलाया, 'मैं तो अंदर था।'

सोमू गोद में रखी कापी देखता रहा।

'तुम कहां थे ? बबली के यहां ?'

'हां।' उसने निगाह ऊपर उठाई।

'होमवर्क कर लिया ?'

'हूं...।'

मौन।

'भूख लगी है।' उसने कापी बंद की।

'चलो।'

ग्यारह बज गया होगा, जब बिंदो ने दरवाजे पर दस्तक दी, 'गुल्लू...।'

'हां।' किताब सामने से हटाई।

बिंदो अंदर आ गई। चेहरे की रेखाएं तनी हुई, 'जितन कहां है ?'

'मुझे पता नहीं। मैं तो तुम्हारे सामने ही बरामदे से उठ आया था।'

बिंदो थकी-सी कुर्सी पर बैठ गई—सामने देखती। एक गहरी सांस ली, 'तंग आ चुकी हूं इस रोज-रोज की चिकचिक से। और ये लड़का भी अजीब है। बाप नहीं है, तो सोएगा ही नहीं!' मेरी ओर देखा, 'खाना तो उसने खा लिया था न ?'

'हां। हमने साथ ही खाया था।'

'तुम तो वहां थे। बोलो, मैंने ऐसी कौन-सी बात कह दी थी, जो...?' होंठ काटते हुई वाक्य बीच में ही छोड़ दिया। असहा भाव से

मुट्ठियां भींचीं। फिर खोल दीं, 'होंगे वहीं मुकुंद के यहां।···कल के दिन चित्रा मिलेगी तो दस तरह से सुनाएगी।···कि सात पिए थे स्कॉच के।···मैं तो तभी समझ गई थी कि लड़कर आए हैं। आपको भी यह चाहिए विंदो जी कि···।' विद्रूप से मुंह विचकाया।

तभी दरवाजे पर आहट हुई, 'नंबर क्या है मुकुंद का ?' ममा ने पूछा।

विंदो ने देखा। चेहरे पर कुछ अनिश्चय का भाव था।

'अच्छा नहीं लगता। फिजूल चार लोग सुनेंगे और बात बनाएंगे।' ममा ने समझाने के स्वर में कहा, 'ससुराल में ठहरा हुआ है। सोचेगा कि जब हमारे दिन···'

'ठहरा हुआ नहीं, रह रहा है।' विंदो बीच में ही झपट पड़ी, आठ-नौ महीने डेरा डाले रहना भी कहीं मेहमानवाजी होती है ?'

'यह तो मेरे देखने की बात है।'

'क्यों ? सिर्फ तुम्हारे देखने की क्यों ? क्या मेरी जिंदगी पर इसका असर नहीं पड़ता ?'

'किसने कहा कि नहीं पड़ता, लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि चौबीस घंटे सिर पर आसमान उठाए रहो !'

'जरूर ऊठाऊंगी, अगर वैसा करने की जरूरत महसूस करूंगी तो।'

मुझे संकेत करते हुए ममा बाहर निकल गईं। पीछे-पीछे ड्राइंगरूम में आया, तो वह फोन के पास रखे पैड का पन्ना पलट रही थी।

'क्या नंबर है मुकुंद का ? कंपनी के नाम से है न ?'

पैड में यहां-वहां देखकर कहा, 'तीन-पांच-आठ-छह-एक···'

ममा ने नंबर डायल किया, हेलो···मुकुंद साहब हैं क्या ?··· हूं···अच्छा···।' रिसीवर रखते हुए मेरी तरफ देखा, 'जित्तन शाम को आए थे, पर आध घंटे बाद तीनों बाहर चले गए। मुकुंद ने कहा था कि खाना बाहर ही खाएंगे।···तुम जानते हो, कहां हो सकते हैं वे लोग !'

'मुकुंद की एक-दो जगहें हैं।'

ममा ने एक गहरी सांस ली, 'तो देखो जरा।' पल भर का विराम,

'मेरी अच्छी मुसीबत है'''करो तो मुश्किल, न करो तो मुश्किल।'

बीस मिनट बाद होटल जनपथ में घुसा। चेम्सफोर्ड क्लब से होता हुआ आया था। लॉबी में आते ही चित्रा को देखा।

'हैलो'''!'

मुकुंद इस ओर पीठ किए काउंटर पर कोहनी टेके फोन कर रहे थे।

'जितन अंदर हैं, बार में।' चित्रा बोली, 'अच्छा हुआ, तुम आ गए। हम लोग उन्हें इस तरह छोड़कर जाते हुए बुरा महसूस कर रहे थे।' चित्रा एक कदम पास आ गई। स्वर दबाकर पूछा, 'हुआ क्या है?'

'बिंदो से कुछ कहा-सुनी हो गई। खास कुछ नहीं।'

मुकुंद ने मुड़कर देखा और हाथ हिलाया।

'अच्छा?' उसकी आंखों में कुछ अविश्वास था, 'हमें तो कुछ ऐसा लगा, जैसे'''' वह उपयुक्त शब्द के चुनाव में ठिठक गई।

तब तक मुकुंद रिसीवर रखकर इधर मुड़े।

'यार गुलशन, हमें एक जगह खाने पर जाना है।' उनका स्वर नम्र था, 'बिजनेस का मामला है। पहले ही इतनी देर हो चुकी है कि'''' उन्होंने कलाई घुमाकर घड़ी देखी।

'हां-हां, बिल्कुल जाइए।'

'जितन से इतना इसरार किया था कि घर छोड़ देते हैं, पर वो तैयार नहीं हुआ।'

'कोई बात नहीं। मैं ले जाऊंगा।'

'एकाध पैग से ज्यादा अब और मत पीने देना उसे।'''अच्छा?' उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखा।

हल्की मुस्कान से कहा, 'कोशिश करूंगा।'

'ओके'''गुडनाइट!'

'गुडनाइट!'

मुट्ठियां भींचीं। फिर खोल दीं, 'होंगे वहीं मुकुंद के यहां।'''कल के दिन चित्रा मिलेगी तो दस तरह से सुनाएगी।'''कि सात पिए थे स्कॉच के।'''मैं तो तभी समझ गई थी कि लड़कर आए हैं। आपको भी यह चाहिए विंदो जी कि'''।' विद्रूप से मुंह बिचकाया।

तभी दरवाजे पर आहट हुई, 'नंबर क्या है मुकुंद का ?' ममा ने पूछा।

विंदो ने देखा। चेहरे पर कुछ अनिश्चय का भाव था।

'अच्छा नहीं लगता। फिजूल चार लोग सुनेंगे और बात बनाएंगे।' ममा ने समझाने के स्वर में कहा, 'ससुराल में ठहरा हुआ है। सोचेगा कि जब हमारे दिन'''

'ठहरा हुआ नहीं, रह रहा है।' विंदो बीच में ही झपट पड़ी, आठ-नौ महीने डेरा डाले रहना भी कहीं मेहमाननवाजी होती है ?'

'यह तो मेरे देखने की बात है।'

'क्यों ? सिर्फ तुम्हारे देखने की क्यों ? क्या मेरी जिंदगी पर इसका असर नहीं पड़ता ?'

'किसने कहा कि नहीं पड़ता, लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि चौबीस घंटे सिर पर आसमान उठाए रहो !'

'जरूर उठाऊंगी, अगर वैसा करने की जरूरत महसूस करूंगी तो।'

मुझे संकेत करते हुए ममा बाहर निकल गई। पीछे-पीछे ड्राइंगरूम में आया, तो वह फोन के पास रखे पैड का पन्ना पलट रही थी।

'क्या नंबर है मुकुंद का ? कंपनी के नाम से है न ?'

पैड में यहां-वहां देखकर कहा, 'तीन-पांच-आठ-छह-एक'''

ममा ने नंबर डायल किया, हेलो'''मुकुंद साहब हैं क्या ?''' हूं'''अच्छा'''।' रिसीवर रखते हुए मेरी तरफ देखा, 'जित्तन शाम को आए थे, पर आध घंटे बाद तीनों बाहर चले गए। मुकुंद ने कहा था कि खाना बाहर ही खाएंगे।'''तुम जानते हो, कहां हो सकते हैं वे लोग !'

'मुकुंद की एक-दो जगहें हैं।'

ममा ने एक गहरी सांस ली, 'तो देखो जरा।' पल भर का विराम,

'मेरी अच्छी मुसीबत है'''करो तो मुश्किल, न करो तो मुश्किल।'

बीस मिनट बाद होटल जनपथ में घुसा। चेम्सफोर्ड क्लब से होता हुआ आया था। लॉबी में आते ही चित्रा को देखा।

'हैलो'''!'

मुकुंद इस ओर पीठ किए काउंटर पर कोहनी टेके फोन कर रहे थे।

'जितन अंदर हैं, बार में।' चित्रा बोली, 'अच्छा हुआ, तुम आ गए। हम लोग उन्हें इस तरह छोड़कर जाते हुए बुरा महसूस कर रहे थे।' चित्रा एक कदम पास आ गई। स्वर दबाकर पूछा, 'हुआ क्या है?'

'विंदो से कुछ कहा-सुनी हो गई। खास कुछ नहीं।'

मुकुंद ने मुड़कर देखा और हाथ हिलाया।

'अच्छा?' उसकी आंखों में कुछ अविश्वास था, 'हमें तो कुछ ऐसा लगा, जैसे''' वह उपयुक्त शब्द के चुनाव में ठिठक गई।

तब तक मुकुंद रिसीवर रखकर इधर मुड़े।

'यार गुलशन, हमें एक जगह खाने पर जाना है।' उनका स्वर नम्र था, 'बिजनेस का मामला है। पहले ही इतनी देर हो चुकी है कि''' उन्होंने कलाई घुमाकर घड़ी देखी।

'हां-हां, बिल्कुल जाइए।'

'जितन से इतना इसरार किया था कि घर छोड़ देते हैं, पर वो तैयार नहीं हुआ।'

'कोई बात नहीं। मैं ले जाऊंगा।'

'एकाध पैग से ज्यादा अब और मत पीने देना उसे।'''अच्छा?' उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखा।

हल्की मुस्कान से कहा, 'कोशिश करूंगा।'

'ओक्के'''गुडनाइट!'

'गुडनाइट!'

दाईं ओर काउंटर पर कोहनियां टेके, दरवाजे की ओर पीठ किए जित्तन बैठे थे, बिल्कुल कोने के स्टूल पर।

बगल में बैठ गया, 'हैलो···!'

वे एक हथेली पर ठोड़ी टिकाए, एकाग्र दृष्टि से सामने देख रहे थे। मेरे स्वर से उनकी तन्मयता टूटी। माथे पर एक शिकन पड़ी। धीरे-धीरे उन्होंने सिर घुमाया, जैसे एनीमेटेड कार्टून की अलग-अलग तस्वीरें हों।

'अरे गुल्लू !' वे मुस्करा दिए।

सांत्वना मिली।

वे कुछ क्षण सामने आईने में देखते रहे। फिर एकाएक हाथ ऊपर उठाकर हवा में चुटकी बजाई, 'ब्वॉय !'

बैरा तुरंत आया, 'यस सर ?'

'एक डबल, साहब के लिए !' एक नजर दार्शनिक दृष्टि से अपना गिलास देखा, फिर एक घूंट में खाली कर दिया, 'और मेरे लिए भी।'

'चियर्स !' जित्तन हवा में गिलास उठाए बोले, और एक घूंट लिया, 'सिगरेट है ?'

पैकेट निकालकर सिगरेट दी। उन्होंने तीन बार कोशिश की, पर तीली माचिस की मसाले वाली पट्टी को नहीं छू पाई। तब मैंने सिगरेट जला दी।

वे दो लंबे कश खींच कर बोले, 'थेंक्यू।'

भुनी मूंगफली के दो-तीन दाने चबाए। पीछे पतली खिलखिलाहट सुनाई दी, तो कुछ तिरछे होकर देखा। नीम-अंधेरे कोने के सोफे पर एक जोड़ा था।

'गुल्लू !'

'हां ?' मैं तुरंत सामने देखने लगा।

उन्होंने एक लंबा कश खींचा। फिर बोले, 'मैं तेज आंधी में उड़ता हुआ ऐसा पत्ता हूं, जो नहीं जानता कि वो कहां जा रहा है ! हालांकि इस बारे में दो रायें हो सकती हैं कि वो आंधी आई कैसे ?' फिर चुप्पी।

'गुल्लू···!'

'हूं ?'

'तुम जानते हो कि तुम मेरे सबसे अच्छे दोस्त हो।'

'हां, मैं मन ही मन तुम्हारी बहुत इज्जत करता हूं।'

'मुझे पता है।'

'जब मैं तुम्हें देखता हूं, तो मानवता पर मेरी आस्था गहरी होने लगती है।'

आसपास देखा। फिर धीमे स्वर में कहा, 'जितन भाई, अगर हम लोग घर की तरफ···मेरा मतलब है, जहां हम लोग खाते-पीते-सोते हैं, वहां चलें, तो अच्छा होगा, क्योंकि रात काफी हो गई है।'

उन्होंने ध्यान से मेरी तरफ देखा, जैसे पहचानने की कोशिश कर रहे हों। फिर एक घूंट लिया और बोले, 'गुल्लू!'

'हां।'

'तुम मनोविज्ञान के पंडित हो।'

'ऐसी तो खैर कोई बात नहीं।'

बेटर ने झुककर नम्रता से बिल रख दिया, 'सिगनेचर कर दीजिए···मिस्टर मुकुंद के अकाउंट के लिए···'

जितन ने बड़े-बड़े अक्षरों में दस्तखत कर दिए।

फिर उनका एक हाथ धीरे-धीरे ऊपर उठा। एक बार लगा कि शायद वे मेरे ऊपर प्रहार कर देंगे। पर उन्होंने शाबाशी के ढंग से मेरा कंधा थपथपा दिया और आंखों में आंखें डाल कर बोले, 'गुल्लू!'

'हूं····'

'मुझे कई बार विश्वास नहीं होता कि बिंदो तुम्हारी बहन है यानी तुम उसके भाई हो।'

चुप रहा।

उन्होंने मेरे कंधे से हाथ हटाकर काउंटर पर हल्का घूसा मारा और घोषणा की, 'बिंदो सैडिस्ट है!' यकायक मेरी तरफ देखा और स्वर धीमा कर लिया, 'मैं जानता हू कि तुम्हें बुरा लगेगा। लेकिन मुझे क्षमा कर देना। यह मेरे अंतर्मन की आवाज है और दुनिया की कोई ताकत इसे दबा नहीं सकती।'

आखिरी घूंट लेकर गिलास परे खिसका दिया। इधर-उधर देखा।

'गुल्लू !'

उबासी रोककर कहा, 'हूं ?'

'क्या मेरा आत्मसम्मान उस गुब्बारे की तरह है, जिसकी हवा चाहे जब निकाली जा सकती है ?'

'नहीं।'

'क्या मैं दीवार पर चिपका वह इश्तहार हूं, जिसे कोई भी नोच सकता है ?'

'नहीं।'

वे एकटक मेरी ओर देखते रहे। फिर यकायक झुककर मेरा हाथ पकड़ लिया और बदले स्वर में आग्रह-भरी कातरता से बोले, 'वो ऐसा क्यों करती है गुल्लू ? वो क्यों मुझे इस तरह चोट पहुंचाती है ?'

वे कुछ पल उत्तर की प्रतीक्षा करते रहे। फिर नीचे झुके और हाथों में मुंह छिपा लिया।

विंदो पैडस्टल लैंप के पास बैठी थी। गोद में एक रंगीन पत्रिका लिए। आहट पाते ही उसने निगाह ऊपर उठाई। फिर दोनों हाथ वक्ष पर बांध लिए और स्थिर दृष्टि से हमारी ओर देखती रही।

सामने आ हम ठिठके। पल को सन्नाटा रहा।

'तो तुम सही-सलामत हो ?' विंदो ने आरोप के स्वर में पूछा।

जित्तन ने प्रश्न पर विचार किया। फिर स्वीकृति में सिर हिलाया।

'और यहां हम लोगों का खून सर्द था !'

विंदो की आवाज में पश्चात्ताप स्पष्ट था। इस विशिष्ट लहजे को जित्तन ने भी लक्ष्य किया। उन्होंने सुनी जा सकने वाली गहरी सांस ली। फिर सोफे की तरफ बढ़े और उस पर गिरते हुए से बैठ गए। दोनों हथेलियों से आंखों के आसपास का हिस्सा सहलाने लगे। फिर यहां-वहां देखा और दार्शनिक ढंग से बोले, 'रात खामोश है, मजदूर के होंठों की तरह…।'

विंदो ऊबी-सी उनकी ओर देखती रही, 'मैं तुमसे एक सवाल पूछ

सकती हूं ?' दोनों हाथ हाउसकोट की जेबों में डाल लिए, 'तुम यह सब नाटक किसलिए करते हो ?'

'मैं तुमसे एक सवाल पूछ सकता हूं ?' जित्तन यकायक सीधे हो गए।

बिंदो प्रश्नसूचक दृष्टि से देखती रही।

जित्तन ने एक बार देखा। फिर बिंदो की ओर। फिर गंभीर स्वर में बोले, 'क्या मैं दीवार पर चिपका वह इश्तहार हूं, जिसे कोई भी ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा नोच कर फेंक सकता है।'

बिंदो ने ध्यान से जित्तन को देखा, 'हां, क्योंकि इश्तहार उस दीवार पर चिपका हुआ है, जिस पर पहले से ही बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था—यहां इश्तहार लगाना मना है।'

'इस बात का क्या मतलब है ?'

'और तुम्हारी बात का क्या मतलब है ?'

'मतलब यही है कि मैं उस राहगीर की तरह हूं, जो चौराहे पर से गलत रास्ता पकड़कर बहुत लंबा सफर कर लेने के बाद एक गहरे नाले के सामने रुक गया है। शाम ढल रही है। आकाश में बादल छा रहे हैं। अब क्योंकि यह बदनसीब न तो यहां बसेरा ले सकता है और न पिछले पड़ाव पर वापस लौट सकता है। इसलिए अब मजबूर होकर उसे···'

'तुम्हारे साथ यही बुनियादी गड़बड़ है। तुम हमेशा उपमा और रूपक का सहारा लेते हो, इसलिए सच्चाई छिप ही जाती है। तुम्हारा सिंटेक्स भी ठीक नहीं है। काम्प्लेक्स वाक्य बनाते समय तुम्हारे विचार उलझ जाते हैं। स्पष्टता के लिए जरूरी है कि तुम छोटे-छोटे वाक्यों में सोचो···राम जाता है, सीता खाती है···।' बिंदो ने मेरी ओर देखा, 'ठीक है न ?'

सामने की वाल-हैंगिंग देखते हुए हल्के से मुस्कराई। जित्तन आशंका से मेरी ओर देखने लगे थे। बिंदो पर चिढ़ हुई, मुझे बीच में क्यों घसीटती है ?

एक सिगरेट निकालकर जलाई। हल्की रुखाई से कहा, 'यह तुम लोगों का निजी मामला है।'

'व्याकरण किसी का निजी मामला नहीं होता। भाषा सार्वजनिक

संपत्ति है।' विंदो वोली।

'तव फिर तुम्हें आपत्ति क्यों है, अगर जित्तन अपने ढंग से उसका इस्तेमाल करते हैं, तो ?'

'क्योंकि इस अपने ढंग से उनका वह मतलव मुझ तक नहीं पहुंचता, जो वे पहुंचाना चाहते हैं। किसी तक नहीं पहुंचता। खुद उन तक भी पहुंचता है, इस वारे में भी मुझे शक है।'

कमरे से वाहर आते ही ठिठक गया। खिड़की की सलाखें पकड़े सोमू एक कोने में दुवका था। वगल में जुगनू को दवाए। आहट पाते ही सीधा हो गया। उसने सोने के कपड़े पहन रखे थे। वाल माथे पर विखरे हुए।

'तुम यहां क्या कर रहे हो ?' उसके सिर पर स्नेह से हाथ रखा।

'देखने आया था कि पापा आ गए हैं या नहीं।' वह फुसफुसाया।

पर्दे के किनारे से जित्तन कुछ वोलते हुए दिखाई दे रहे थे। उसका हाथ पकड़कर चलने लगा, 'आ गए हैं और मम्मी से वात कर रहे हैं। किसी की प्राइवेट वातें सुनना अच्छा नहीं माना जाता।'

'पापा की भी ?'

'प्राइवेट वात प्राइवेट होती है, चाहे पापा की हो, चाहे हंप्टी-डंप्टी की।'

एक पल ठहरकर वह वोला, 'तव फिर तुम क्यों सुन रहे थे ?'

'जव तक मैं वहां था, वात उतनी प्राइवेट नहीं थी। जैसे ही होने लगी, मैं चला आया।'

सोमू को उसके विस्तर पर लिटा दिया। चातर उढ़ा दी। उसके नीचे जुगनू वरावर हिलडुल रही थी।

'पापा गुस्सा होकर कहां चले गए थे ?'

'पास ही एक जगह थे।'

'उन्होंने फिर व्हिस्की पी होगी ?'

मद्धिम नाइट-लैंप की ओर देखने लगा, 'तुम काफी वेकार की वातें करते हो।'

'मुझे पता चल जाता है, जब वो किस्सी करने आते हैं, तो।'

'अच्छा, अब सो जाओ। बहुत देर हो गई है।' और झुककर उसके माथे से होंठ छुआ दिए।

'जुगनू को भी।'

चादर हटाकर जुगनू की गर्दन के मुलायम फर का चुंबन लिया, 'गुडनाइट!'

'गुडनाइट!'

दरवाज़ा बंद करते हुए देखा, उसने जुड़ी हथेलियां सिर के नीचे लगा ली थीं और विचारमग्न-सा ऊपर देख रहा था।

हाथ बढ़ाकर स्विच दबाया। बिस्तर। किताबों की आलमारियां। छोटा-सा वार्डरोब। रिलेक्सिंग कुर्सी। नन्ही तिपाई। कोने में मेज़। और मेरी अपनी गंध।

स्विच फिर दबाया। अंधेरे में बिस्तर पर बैठा। फ़ीते खोले। जूते उतारे। लेट गया। जेब से पैकेट व माचिस निकालकर सिरहाने रख दी।

कुछ क्षणों बाद करवट बदली। तिरछे होकर मुड़ी हुई कोहनी सिर के नीचे लगा ली। अपने-आप से कहा, 'सो जाओ।'

विराम।

'कहीं कुछ नहीं है।'

विराम।

'जो कुछ है, वो सब फ़िज़ूल है।'

सुबह जब नींद खुली, तो रोमाना की तरह मान के बजाय आठ बज चुके थे। पल भर को संतोष हुआ कि दिनचर्या में एक घंटा काटने का संकट अपने-आप मिट गया। अगर किसी तरह हर दिन ऐसा होता रहे, तो कितना अच्छा हो।

संयोग से बाथरूम खाली था। बेसिन पर झुक मुंह पर ठंडे पानी के छींटे मारे। बरामदे में आकर अख़बार उठाया। रसोई में आ एक कप चाय बनाई और कमरे में आ गया।

'हैलो गुल्लू !' उन्होंने मुझसे निगाह नहीं मिलाई।

'गुड मार्निंग।'

'लो, सिगरेट पियो।' उन्होंने पैकेट मेरी ओर बढ़ाया।

एक सिगरेट निकाली। सुलगाई।

'कहां चले?'

'पहले तो मिस्टर दत्ता के यहां जाऊंगा। कुछ काम होगा। फिर शायद पैसे भी मिल जाएं। महीने का पहला हफ्ता हो गया है। आपका क्या प्रोग्राम है?'

वे तनिक बुझ से गए, 'प्रोग्राम क्या होगा! ये मैगजीन पढ़ूंगा। थोड़ी देर सोऊंगा।'

पल भर ठिठका, 'ठीक है, फिर शाम को मुलाकात होगी।'

कम्पाउंड में घुसा तो देखा, कार गैराज के बाहर खड़ी थी और ड्राइवर एक कांच साफ कर रहा था।

घास का बड़ा-सा टुकड़ा पार किया और क्यारियों के बीच की छोटी-सी पगडंडी से होते हुए पिछवाड़े तक आया।

दफ्तर का कमरा खुला था। मिस्टर गोयल मेज पर एक फाइल देख रहे थे।

'गुड मार्निंग, मिस्टर गोयल!'

'गुड मार्निंग, गुलशन!' उन्होंने निगाह ऊपर उठाई, 'चार-पांच चीजें हैं टाइप के लिए।' उन्होंने ट्रे की ओर संकेत किया, 'अगर घंटे भर में कर दो, तो अपने साथ लेता जाऊं।'

'जी!' मैंने कागज उठाए।

वे फाइल पर झुकते-झुकते यकायक ठिठके, 'हां,' दराज खोलकर लिफाफा निकाला, 'मिस्टर दत्ता दे गए हैं।'

'थैंक्यू!'

लिफाफा लिया, जेब में रखा और कोने की मेज पर आ बैठा। टाइपराइटर का ढक्कन हटाया। दराज से दो कागज निकाले और बीच में कार्बन लगाकर उन्हें रोलर पर चढ़ाया।

'आज १२ नवंबर, १९७० को श्री गंगाराम और श्री सुदर्शनकुमार के बीच यह करार पाया गया कि जब तक...'

बस स्टॉप पर सिर्फ पांच-छह लोग और थे। दफ्तर वालों की भीड़ छंट चुकी थी। दो लड़कियां शेड की दीवार से टिकीं गुपचुप बातों में लगी थीं। मूंगफली, सिगरेट वाले सनातन प्रतीक्षा में। ठंडे पानी वाला उसी के निकट।

जेब से लिफाफा निकाला। हमेशा की तरह एक नोट सौ का, पांच दस-दस के।

एक खंभे से टिका खड़ा रहा। सामने लगातार कारें, टैक्सियां, स्कूटर। आते हुए, जाते हुए। दाईं से बाईं तरफ, बाईं से दाईं ओर। सबका एक गंतव्य, एक लक्ष्य। इस प्रवाह में सबके अपने निश्चित उद्देश्य हैं। इन्हें एक निश्चित समय एक खास जगह पहुंचना है—किसी को स्टेशन, किसी को बैंक, किसी को ऑफिस...मेरा क्या गंतव्य है? मेरा क्या उद्देश्य है? मुझे कहां पहुंचना है?...ये लाल बत्ती होने पर विवशता में रुक जाते हैं, पर फिर रास्ता खुलते ही गति बढ़ाकर उस कमी को पूरा कर लेते हैं। देर हो जाने पर इनका नुकसान है, पर देर हो जाने पर मेरा क्या हर्ज होगा? समय से पहुंचने पर मुझे क्या लाभ होगा?

समय से!...मेरे लिए इन शब्दों का अर्थ क्या है?...मैं समय के लचीले विस्तार में जीवित हूं। मैं घड़ी के अंकों को रबर की तरह खींचता हूं। कब से खींचे जा रहा हूं। दूसरी ओर से कभी तनाव का एहसास नहीं होता। बिना अंत की ढील के लिए मैं अभिशप्त हूं।

घर्र-घर्र से ध्यान टूटा। तीन नंबर बस आकर रुकी थी।

दरवाजे से दूसरी सीट खाली थी। बैठकर पंद्रह पैसे निकाले और कंडक्टर के बढ़े हाथ पर रख दिए थे। टिकट लिया। छठी संख्या के पास का कोना फटा हुआ। यहां से छठा स्टाप मेरा गंतव्य, मेरा लक्ष्य...।

गोल मार्किट, मद्रास होटल, कंडक्टर की सीटी। बस का रुकना।

कंडक्टर की सीटी। बस का चलना। केवल महिलाओं के लिए···कृपया धूम्रपान न करें···टिकट लेने के लिए निश्चित रेजगारी दें···शिकायत-पुस्तक संवाहक के पास है···चलती बस से चढ़ना व उतरना मना है···।

स्टेट्समैन···मॉडर्न स्कूल···मंडी हाउस···।

सड़क पार कर गेट में दाखिल हुआ। धूप बाईं ओर ऊपर चढ़ आई थी। इमारत की सफेदी को और चमकाती हुई। सामने वाले दरवाजे से एक जीप तेजी से घुसी और ब्रेक की क्रिच-क्रिच के साथ पार्किंग शेड में रुक गई।

लाइब्रेरी के कांच वाले दरवाजे को खोलकर अंदर घुसा···एक···दो···तीसरे पल से एयरकंडीशन की शीतल तरंगों में लिफाफे की तरह बंद होने लगा।

बायें कोने तक आया। कागज का छोटा गिलास कूलर के ठंडे पानी से भरा। दो घूंटों में खाली किया। नीचे फेंका।

छोटे-छोटे कदमों से मेजों तक आया।···एक अधेड़ पुरुष चश्मा लगाए गुलाब के पौदों पर लेख पढ़ रहा था···कि कैसे गुलाब के बीज सुरक्षित रहते हैं, क्यारी में काली मिट्टी डालनी चाहिए, दिन में इतनी बार पानी देना चाहिए, इस तरह पौदों की छंटाई करनी चाहिए।

सन्नाटा। बिल्कुल स्थिर खामोशी। आते-जाते की दबी पदचाप।

सांवली, मोटी लड़की के सामने एक किताब है···साहित्य मानवीय अनुभवों का सार है। साहित्य एक पीढ़ी के अनुभव दूसरी पीढ़ी तक ले जाता है। साहित्य में महत्त्वपूर्ण मानवीय अनुभूतियां हमेशा के लिए सुरक्षित रहती हैं···साहित्य जीवन को रूप देता है, वेदह मेरे और इस लड़की जैसे लोग, जिनके जीवन में कोई रूप नहीं है···हमारे जीवन को तो साहित्य को ही रूप देना होगा।

धीरे-धीरे किताबें देखता हुआ बाहर निकला···खामोशी के बीच···रात के अंधेरे में···मेरे कमरे का जंगल···एक शीर्षक देखकर चौंका। पॉलीथीन चढ़े कवर को खोला। कविता की कतार में सालाना बजट के

आंकड़े। ऐसा कैसे होता है? क्या लोगों की संवेदना इतनी कुंद होती है या वे जानबूझकर ऐसा करते हैं? अपने जीवन के रूपाकार की कमी का बदला लेने के लिए? व्यवस्था के विरोध का जन्म यहीं होता है। यह बुतशिकनी की खतरनाक ट्रेनिंग है। साहित्य, जो जीवन को रूप देता है—ये उसी की व्यवस्था को तोड़ते हैं।

चालीसेक वर्ष की महिला तल्लीन है। इंडेक्स कार्ड देखने के बहाने खुला पन्ना देखता हूं।···इंग्रिड वक्ष पर हाथ दबाए रिकॉर्ड प्लेयर तक आई। सिम्फनी नौ से मद्धिम तरंगें बुलबुलों की तरह फूट रही थीं, रंगीन परों वाली तितलियों के समान इधर-उधर फुदक जाती थीं। हाथ के कप से काली कॉफी का घूंट लेते हुए उसने देखा, कोने की मेज पर पत्र उसी तरह रखा था। वह एकटक उसी तरफ देखती रही। यकायक झपटी और वॉल्यूम फुल पर कर दिया। वही लहरें, जो स्नेह स्पर्श-सी सहला रही थीं, वेगवान आक्रामक ज्वार के समान दीवारों की चट्टान पर सिर पटकने लगीं। वह घुटनों के बल फर्श पर झुकी और दोनों हाथों में मुंह छिपा लिया। कुछ क्षणों बाद सहसा प्रवाह का गर्जन टूटा और वातावरण में किरच-किरच भर गई···एकरस। अनवरत।

'इंग्रिड।' होंठों ही होंठों में कहा, 'स्विच बंद कर दो, वरना सुई टूट जाएगी।'

उस स्त्री ने पन्ना नहीं बदला। हथेली पर गाल टिकाए, देर तक नीचे देखती रही। मुट्ठी में दबे रूमाल का कोना शायद आंखों से भी छुआया। उसे इंग्रिड की सुई से सरोकार नहीं था···वह अपने कमरे में कोने की मेज पर कोई पत्र छोड़कर आई थी।

हम सब, जो दिन के साढ़े ग्यारह बजे यहां आए हैं, अपनी-अपनी दबाव डालती दीवारों से भागकर···हमारी जिंदगी में कितना खालीपन है! वह अधेड़ व्यक्ति, यह स्त्री, वह लड़की···हमारे जीवन में कोई रूपाकार नहीं है, हम अपने शून्य को इन काली इबारतों से भरना चाहते हैं···साहित्य, हमें रूप दो! हमारी भोंड़ी, बदरंग जिंदगी पर सुघड़ चौखटे के समान जड़ जाओ!

'क्या मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूं ?' आप देर से कुछ ढूंढ़ रहे हैं।

चौंककर निगाह उठाई। अटककर कहा, 'अम्...मैं वो...एग्री-कल्चर का शेल्फ कौन-सा है ?'

बस से उतरकर चार कदम ही चला था कि सड़क के किनारे धूल व सूखे पत्तों का पहला बगूला उठा—पहले गज भर सीधा ऊपर, फिर आड़ा-तिरछा...अपने आकार में टूटता-छितराता हुआ...और साथ ही तुरंत डालियों की खड़र-खड़र के साथ तेज हवा...फिर एक साथ कई बगूलों के अनवरत सिलसिले—और बड़े, और ऊंचे। झोंकों में उड़ती हुई गर्द...पूरी सड़क को अपनी लपेट में लिए हुए...खंभों की रोशनियां थोड़ी धुंधली...।

तेज हवा का प्रतिरोध कर आगे बढ़ने की कोशिश...बालों में धूल के भरने का एहसास...पलकें तनिक-सी खोलने पर ही कोनों पर किर-किराहट...पैर आगे, मुंह पीछे...नई तरह का भूत...हल्का कौतूहल कि रेगिस्तान में कैसे चला जाता होगा।

हवा के परस्पर विरोधी थपेड़े—आक्रामक-से, लहराती-सी धूल की हिलोरें और वातावरण में तेज शोर के बावजूद निस्तब्धता की अनुभूति, जैसे कुछ विशेष घटने वाला हो। सधी हुई चुप्पी...।

गेट तक आते-आते लगा कि धूल से लथपथ हो गया हूं। कपड़ों के नीचे त्वचा पर जैसे गर्द की एक परत और चढ़ गई हो। बालों में बारीक कीड़े जैसे रेंगते हुए...।

हवा में गेट का ढांचा बज रहा था। फूलों वाले सिरे बार-बार खंभों के किनारों से टकरा रहे थे। मेहंदी की बाड़ की ऊपरी सतह पर सांप के रेंगने-जैसी थिरकनें...सूखे पत्ते अहाते से उड़कर बरामदे में आ गए थे और इस कोने से उस कोने तक सरसरा रहे थे।

गलियारा पार करते-करते लगा कि अपने कमरे की खिड़की के पल्लों के टकराने की आवाज सुनी है। सिटकनी हटाई। दरवाजा खोला। अंदर घुसते-घुसते फ्रेम पर टकराहट की ऊंची आवाज हुई।

आंकड़े। ऐसा कैसे होता है ? क्या लोगों की संवेदना इतनी कुंद होती है या वे जानबूझकर ऐसा करते हैं ? अपने जीवन के रूपाकार की कमी का बदला लेने के लिए ? व्यवस्था के विरोध का जन्म यहीं होता है। यह बुतशिकनी की खतरनाक ट्रेनिंग है। साहित्य, जो जीवन को रूप देता है—ये उसी की व्यवस्था को तोड़ते हैं।

चालीसेक वर्ष की महिला तल्लीन है। इंडेक्स कार्ड देखने के बहाने खुला पन्ना देखता हूं।…इंग्रिड वक्ष पर हाथ दबाए रिकॉर्ड प्लेयर तक आई। सिम्फनी नौ से मद्धिम तरंगें बुलबुलों की तरह फूट रही थीं, रंगीन परों वाली तितलियों के समान इधर-उधर फुदक जाती थीं। हाथ के कप से काली कॉफी का घूंट लेते हुए उसने देखा, कोने की मेज पर पत्र उसी तरह रखा था। वह एकटक उसी तरफ देखती रही। यकायक झपटी और वॉल्यूम फुल पर कर दिया। वही लहरें, जो स्नेह स्पर्श-सी सहला रही थीं, वेगवान आक्रामक ज्वार के समान दीवारों की चट्टान पर सिर पटकने लगीं। वह घुटनों के बल फर्श पर झुकी और दोनों हाथों में मुंह छिपा लिया। कुछ क्षणों बाद सहसा प्रवाह का गर्जन टूटा और वातावरण में किरच-किरच भर गई…एकरस। अनवरत।

'इंग्रिड।' होंठों ही होंठों में कहा, 'स्विच बंद कर दो, वरना सुई टूट जाएगी।'

उस स्त्री ने पन्ना नहीं बदला। हथेली पर गाल टिकाए, देर तक नीचे देखती रही। मुट्ठी में दबे रूमाल का कोना शायद आंखों से भी छुआया। उसे इंग्रिड की सुई से सरोकार नहीं था…वह अपने कमरे में कोने की मेज पर कोई पत्र छोड़कर आई थी।

हम सब, जो दिन के साढ़े ग्यारह बजे यहां आए हैं, अपनी-अपनी दबाव डालती दीवारों से भागकर…हमारी जिंदगी में कितना खालीपन है ! वह अधेड़ व्यक्ति, यह स्त्री, वह लड़की…हमारे जीवन में कोई रूपाकार नहीं है, हम अपने शून्य को इन काली इबारतों से भरना चाहते हैं…साहित्य, हमें रूप दो ! हमारी भोंड़ी, बदरंग जिंदगी पर सुघड़ चौखटे के समान जड़ जाओ !

'क्या मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूं ?' आप देर से कुछ ढूंढ़ रहे हैं।

चौंककर निगाह उठाई। अटककर कहा, 'अम्...मैं वो...एग्रीकल्चर का शेल्फ कौन-सा है ?'

बस से उतरकर चार कदम ही चला था कि सड़क के किनारे धूल व सूखे पत्तों का पहला बगूला उठा—पहले गज भर सीधा ऊपर, फिर आड़ा-तिरछा...अपने आकार में टूटता-छितराता हुआ...और साथ ही तुरंत डालियों की खड़र-खड़र के साथ तेज हवा...फिर एक साथ कई बगूलों के अनवरत सिलसिले—और बड़े, और ऊंचे। झोंकों में उड़ती हुई गर्द...पूरी सड़क को अपनी लपेट में लिए हुए...खंभों की रोशनियां थोड़ी धुंधली...।

तेज हवा का प्रतिरोध कर आगे बढ़ने की कोशिश...बालों में धूल के भरने का एहसास...पलकें तनिक-सी खोलने पर ही कोनों पर किरकिराहट...फेर आगे, मुंह पीछे...नई तरह का भूत...हल्का कौतूहल कि रेगिस्तान में कैसे चला जाता होगा।

हवा के परस्पर विरोधी थपेड़े—आगमहत्ने, लहराती-सी धूल की हिलोरें और वातावरण में तेज शोर के बावजूद निस्तब्धता की अनुभूति, जैसे कुछ विशेष घटने वाला हो। सधी हुई चुप्पी...।

गेट तक आते-आते लगा कि धूल से लथपथ हो गया हूं। कपड़ों के नीचे त्वचा पर जैसे गर्द की एक परत और चढ़ गई हो। बालों में बारीक कीड़े जैसे रेंगते हुए...।

हवा में गेट का ढांचा बज रहा था। चूलों वाले सिरे बार-बार खंभों के किनारों से टकरा रहे थे। मेहंदी की बाड़ की ऊपरी सतह पर सांप के रेंगने-जैसी थिरकनें...सूखे पत्ते अहाते से उड़कर बरामदे में आ गए थे और इस कोने से उस कोने तक सरसरा रहे थे।

गलियारा पार करते-करते लगा कि अपने कमरे की खिड़की के पल्लों के टकराने की आवाज सुनी है। सिटकनी हटाई। दरवाजा खोला। अंदर घुसते-घुसते फ्रेम पर टकराहट की ऊंची आवाज हुई।

हाथ स्विच की ओर बढ़ाया।

कागज मेज से उड़कर फर्श पर बिखर रहे थे। रैक से कुछ किताबें बिस्तर पर गिर गई थीं। कमीज ने उड़कर बिस्तर को ढंक लिया था। पत्रिकाओं के पन्ने यहां-वहां फड़फड़ा रहे थे।

कुछ पल जैसे दूर से यह दृश्य देखता रहा। अस्तव्यस्त...बेतरतीब ...किवाड़ की खट्खट्...कागज की सरसराहट...पीछे कहीं तेज हवा...।

सौ का नोट सामने रख दिया।

'पैसे मिले हैं।'

ममा ने पत्रिका से निगाह हटाकर नोट देखा। कहा, 'कुछ बढ़ाने को नहीं कहते दत्ता से ? महंगाई कितनी बढ़ गई है।'

'डैडी का खयाल करके रखे हुए हैं वो। वरना उन्हें क्या जरूरत है ? उनका जूनियर खुद टाइप जानता है, करता है।' अनायास ही स्वर कुछ तेज हो गया था।

'ओह, तो खैरात है !'

लंबी खींची गई ध्वनियों की कंपकंपाहट जैसे कुछ क्षण वातावरण में टंगी रही। झालर-सी स्थिर। झिलमिलाती।

इंडिया गेट। शाम ढल रही थी। राजपथ की चिकनी सतह पर कारें दोनों दिशाओं में फिसलती जा रही थीं। सड़क के दोनों ओर ऊंचे खंभों पर लगे फैस्टून हवा में लहरा रहे थे। दाईं तरफ रफी मार्ग वाले चौराहे पर सहसा लाल बत्ती हो जाने पर ट्रैफिक का द्विमुखी अनवरत प्रवाह रुक गया। डबल-डैकर के पहियों की अजगर-सी फुंकारें भरती घिसटन।

उन दिनों इतवार को कभी-कभी हमारे घर अनाथालय का बैंड आता था—पांच-छह से लेकर पंद्रह-सोलह साल तक के लड़के। उनमें एक लड़का बिगुल बजाता था। दुबला-पतला। सांवला। बजाते समय गाल फूले और जबड़े की हड्डियां उभरी हुईं। उसके चेहरे पर हमेशा

आक्रामक क्रूरता का भाव रहता था। वह बराबर बात करता था चिढ़े हुए ढंग से, जैसे यह उसका अधिकार हो। उसे कुछ दीजिए, तो ऐसे लेगा, जैसे सूदखोर पठान अपनी माहवारी किस्त वसूल कर रहा हो। वह ऐसा अहसास कराता था, जैसे उसके अनाथ होने में कहीं न कहीं हमारा कसूर है। कुछ पलों की चुप्पी के बाद जितन असहाय-से मुसकराए, 'यह बचपन भी क्या चीज है!'

राजपथ ब्लाक के गुंबद पर आड़े-तिरछे झंडे लहरा रहे थे। इंडिया गेट की ऊपरी सतह पर बीचोंबीच बहुत हल्की लौ का आभास। एक छोर से दूसरे छोर तक चला गया हरी घास का सिलसिला। पीछे घने पेड़ों पर कहीं-कहीं पत्तियों के झुरमुटों का चहकना।

मां मुझे बहुत प्यार करती थी। दुख के समहों में और भी ज्यादा। जब भी मैं बाहर से मार खाकर आता, दौड़ में पीछे छूट जाता, या टैस्ट में नंबर कम पाता, तो मां हमेशा अतिरिक्त प्यार से कमी पूरी कर देती। कभी-कभी मुझे लगता था कि वो ऐसे मौकों की ही तलाश में रहती है। गहरी सांस। मेरी परवरिश ही इस तरह हुई थी कि मैं असफल बनूं।

गोपू ने झुककर जुगनू को गेंद दिखाई और फेंक दी। वह पीछे-पीछे भागी—घास पर कुदती-फुदकती। गोपू दोनों हाथ कमर पर रखे, कौतूहल से देखता हुआ।

बांह सिर के नीचे लगाए चुपचाप लेटा रहा। आसमान में यहां-वहां बादलों के बटाव धुंधलाने लगे थे। उद्योग भवन के ऊपर फीके तारों का एक गुच्छा।

'पुरानी आदत की वजह से कभी-कभी अब भी मुझमें वह मां जाग उठती है।' जितन के स्वर में सँप-भरी करुणा थी।

तत्क्षण मेरे सामने बिंदो का चेहरा आ गया—भावहीन, डरा। बिना पलक झुकाए, स्थिर दृष्टि से देखता हुआ। होंठों के वक्र कोनों की व्यंग्यभरी भंगिमा। मुझे लगा कि मैंने उसकी आवाज सुनी है—हूं!

पल भर को लगा कि शायद जितन को भी कुछ ऐसा ही लगा है।

वे कोहनियों के वल सीधे हुए। आसपास देखा। फिर सिगरेट निकालकर सुलगाने लगे।

पीछे वोट क्लब के रेस्तरां में वातचीत की भनभनाहट थी। बीच-बीच में छोर। संकरी नहर में चप्पुओं के चलने की आहट। डोंगियों के पास आने और दूर जाने के साथ हंसी-खिलखिलाहट।

'जव कभी मेरे साथ ऐसा व्यवहार होता है, तो मैं अपनी जगह जैसे उसी विगुल वाले लड़के को खड़ा हुआ महसूस करता हूं।' जित्तन चेहरे पर तनाव के साथ सोमू को देखते रहे, जो एक हाथ में जुगनू और दूसरे में आइसक्रीम लिए झुककर रेलिंग पार कर रहा था।

'तुम्हारा इस वारे में क्या ख्याल है?'

'किस वारे में?' तनिक ठहरकर पूछा।

'वही, जो मैं अभी कह रहा था। वचपन की खुशी और वाद की जिंदगी पर पड़ने वाले उसके असर के वारे में···।'

शायद मन ही मन कहा···खुशी···वचपन···। सामने की हरियाली धीरे-धीरे धुंधली हुई और आड़े-तिरछे वदरंग धव्वों में वदल गई। एक-दूसरे में घुलते-मिलते और गहरे होते हुए, वहुत पीछे कहीं तेजी से फिसलना, फिर यकायक झटके से थम जाना।

वह एक छुट्टी की सुवह थी—शांत। स्थिर। जव अचानक पर्दा हिला और ममा अंदर आई। उचटती निगाह से उसे देखकर पूर्ववत् हाथ की किताव पढ़ता रहा। वह आलमारी तक गई और खोलकर देखने लगी, कुछ ऐसी तन्मयता से, जैसे उसी के लिए आई हो। फिर कुछ किताबें देखने के वाद डिक्शनरी उठा ली। पन्ने पलटते हुए यकायक ठिठकी। एक वार मेरी ओर देखा—कुछ क्षण लगातार।

'यह खिड़की तुम क्यों वंद रखते हो हमेशा?'

अपने पृष्ठ को देखते हुए कहा, 'मुझे पसंद नहीं।'

'क्या?'

'इतनी रोशनी।'

कुछ देर वातावरण में वेचैन अस्थिरता लटकी रही।

'और यह क्या है ?' शब्दकोश के तीन-चार पन्ने खोले, जहां पेंसिल से निशान लगे थे।

फिर सामने देखने लगा। चप्पलों की आहट पास आने लगी। उस स्वर की प्रतीक्षा करने लगा, जिसमें हमेशा क्षोभभरी ठंडक होती थी और बर्दाश्त करने की मजबूरी की शालीन खनक।

'उदासी…दुख…विषाद…निराशा।' प्रश्नभरी आंखों से मेरी ओर देखा, 'ये निशान इसलिए लगाए हैं, क्योंकि ये शब्द तुम्हें पसंद हैं ?'

फिर लंबा विराम आया, जिसमें ऊपर से नीचे की पंक्तियां गिनने लगा।

'यह पढ़ क्या रहे हो ?' कहते हुए झुककर देखा, 'मैकबेथ…यह तुम्हारे कोर्स में है ?'

इनकार में सिर हिलाया।

'तुम सुबह होते ही ऐसी मनहूस किताब पढ़ते हो ?' झुककर पृष्ठ देखा, 'और इस पर भी उस औरत का स्लीपवाकिंग सीन। कह दो कि यह भी तुम्हें पसंद है ?'

चुप्पी के अगले दौर में सिरहाने कुर्सी पर बैठ गई, 'अगर जिंदगी की तरफ यही तुम्हारा रुख है, तब तो…।' गहरी सांस के साथ वाक्य को अधूरा छोड़ दिया। पल भर चुप रहकर फिर आवेश से कहा, 'लेकिन क्यों ?' सवाल फिर चाबुक की तेज फटकार की तरह माहौल में भर गया।

'कल तुम्हारे स्कूल से एक चिट्ठी और तुम्हारी यह कापी आई थी।' उसके हाथों में अपनी कापी इस दौरान पहली बार लक्ष्य की। ऊपर लंबा, बादामी लिफाफा था, 'इसमें तुम्हारा असाइनमेंट है, जिसमें तुमने कुछ इस तरह के विचार प्रकट किए हैं कि…अंधेरे का एक रंग और खुशबू होती है। इन्हें हरएक देख और महसूस नहीं कर सकता। इसके लिए अकेलेपन का अहसास बहुत जरूरी है। जिसे बहुत गहराई तक ऐसा अनुभव है, उसी में यह योग्यता हो सकती है। यह सब क्या है ? क्या यह किसी सेहतमंद दिमाग की उपज है ?' थोड़े विराम के बाद जोर से कहा, 'मैं क्या पूछ रही हूं ?'

'मैं किसी को तंग तो नहीं कर रहा ?'

'अपने-आपको तो कर रहे हो ? खुद को ही सताने का यह ढंग तुम्हें कहां ले जाकर फेंक देगा, पता है ?'

'पता नहीं !' सहसा आ गए आवेग में किताब पटककर उलटा हुआ और तकिये में मुंह छिपाए रुंधे स्वर में कहा, 'मुझे कुछ पता नहीं !'

६

बाहर चिलचिलाती धूप थी।

मैक्समूलर भवन लाइब्रेरी जाते हुए ओडियन के सामने अचानक ठिठक गया था। रंगीन पोस्टर पर निगाह पड़ी और दिनचर्या के प्रति भीतर कहीं दबा हुआ प्रतिरोध एकदम ऊपर उभर आया। वहां जाकर क्या करूंगा ? फिर वही किताबों के शेल्फ, छपे पृष्ठों का फिर वही काल्पनिक जगत्—मिथ्या। मायावी। इस जिंदगी की सचाइयों को कितनी देर तक झुठला सकता है वह ?···आज वह छद्म न सही, यह सही।

लॉबी में घुसते हुए जेब टटोली। टिकट खिड़की के कटे कांच के नीचे से तीन रुपये पच्चीस पैसे खिसकाए और प्लैन के एक कोने की ओर संकेत किया।

हाल में अंधेरा था। तेज नृत्य-धुन पर कमर्शियल शॉर्ट चल रहे थे। 'अशर' ने टिकट का नंबर देखा और टार्च का लिश्कारा मारकर कोने वाली सीट दिखला दी।

बैठा। हत्थों पर कुहनियां टिकाईं। हाल की ठंडक को भीतर तक महसूस किया।

घुटने पर घुटना रखा। देखा कि सांस की दुर्गंध दूर करने के लिए एक विशेष गोली का सेवन करने के बाद सफलता किस तरह पैर चूमती है।

फिल्म शुरू हुई। सब कुछ सुंदर। रंगारंग। आकर्षक। जिंदगी हंसी व मुस्कानों के साथ आगे बढ़ती हुई।

चेतना के एक तल पर इस समय लाइब्रेरी में होने का विकल्प झलका। एक कोने में। अकेली मेज पर। हथेली पर ठुड्डी टिकाए।

बीच-बीच में ध्यान बंटना। ममा का भावहीन चेहरा…अंधेरे व सन्नाटे में अपने कमरे का दरवाजा खोलना…उनराय की चहल-पहल से बच-बचकर चलना…फिर संतोष की लहर…कि वह सब अभी दूर है, घुमना है…

बाहर चिलचिलाती धूप थी।

जिस मनःस्थिति से अलग होकर अंदर घुसा था, वह वहीं खड़ी थी—शीशे के बड़े फाटक वाले दरवाजे के पास। बाहर कदम रखते ही उसने हाथ थाम लिया।

जून के पहले हफ्ते में दोपहर के ढाई बजे की धूप। ऊपर निगाह उठाते ही आंखों में चुभती चकाचौंध भर गई। और तत्काल पलकें बंद कर लेने के बाद भी लगा, जैसे आंख के सारे सफेद व काले हिस्से पर तपिश की एक परत चुन गई हो।

गोल डाकखाने से गुरुद्वारे तक पूरी सड़क बिल्कुल सुनसान थी। किनारों पर जहां-तहां डामर पिघलता हुआ…हवा तेज। तीखी। पेड़ों को झकझोरती हुई। पत्तों में ऐसी तरल सरसराहट, जैसे रुदन कर रहे हों। सड़क के दोनों किनारों पर जब-तब उड़ते धूल के बगूले—मेंढक-से फुदकते हुए। बीच-बीच में सूखे पत्तों को दुलराते।

हवा के बावजूद वातावरण में निस्तब्धता। हांफती। सूखी जीभ बाहर चिलचिलाती। कभी डैने फड़फड़ाते, एक पेड़ से दूसरे के लिए उड़ते किसी परिंदे की चीख। लंबी। कातर। असहायता की यह पुकार झुलसती धूप में पल भर के लिए जैसे उमड़े स्फुलिंग की तरह चमकती। फिर बुझ जाती।

बस स्टॉप पर तीन-चार लोग थे। शेड के बीच में सिमटे हुए।

एक कोने में खड़ा हो गया।

तपती छत। तपती रेलिंग।

'तीन नंबर गई है क्या ?'

किसी ने पूछा। किसी ने आहिस्ता से सिर हिलाया।

देखा, बस आने की दिशा में। दूर, जहां सड़क मुड़ती थी, धूसर

तरल था—धुंधला। चीजें एक-दूसरे में गड्डमड्ड हो गई-सी लगती थीं—सड़क का सिरा, दोनों ओर फुटपाथ, दाईं ओर बिजली का खंभा, बाईं ओर पेड़ का तना···आपस में कुछ-कुछ जज्ब हो गए-से। हल्के-हल्के कंपकंपाते-से।

कुछ देर बाद त्वचा की सतह पर सुगबुगाहट। सबसे पहले पीठ पर नन्हें बुलबुले फूटने-सा अहसास। फिर कंधों पर। माथे पर। नमी का अंदर कपड़ों में रिसना। सिर पर, बालों की जड़ों में अंखुए की तरह बूंदें फूटना···पास-पास सिमटना···आपस में मिल जाना···गर्दन पर बहुत बारीक-सी फिसलन की अनुभूति।

बस ठसाठस भरी हुई। चमड़े की पट्टी का सहारा। मोड़ पर पैर फैलाकर संतुलन संभालना। लू का गर्म झोंका और मानवीय पसीने की भभक, हर स्पर्श से वितृष्णा···।

आंखें खुलीं। लगा कि शायद किसी आहट से···अंधेरा तनिक विराम···और फिर ऐसी आवाज, जैसे कोई फूलों के पौदों पर छड़ी चला रहा हो। समझ में कुछ नहीं आया और तभी खिड़की के कांच पर तड़-तड़ सुनाई दी—बारिश की तिरछी बौछार की आवाज।

मेज से घड़ी उठाई—आठ-बीस। पल-भर के लिए ऐसे चौंका, जैसे कोई जरूरी गाड़ी छूट गई हो। फिर उठा। पांव चप्पलों में डाले। तो दोपहर से अब तक सोता रहा!

खिड़की के सामने आ, पर्दे का एक किनारा समेटकर बाहर देखा—बहुत धूमिल आलोक पर छाई बारिश की परत। कमरे में अंधेरा था और बाहर वर्षा के बावजूद गहरा सन्नाटा, जैसे कहीं कोई न हो। लगा, जैसे किसी निर्जन जहाज में हूं, जो आधी रात की ठोस कालिमा और निस्तब्ध मौन के बीच आक्षितिज में फैले किसी सूने समुद्र में फंस गया है। फिर बाहर कहीं लंबा हॉर्न कंपकंपाया और उसके सुर धीरे-धीरे बिखरते हुए खामोशी में जज्ब हो गए।

माथे के भीतर कहीं एक नस तड़क उठी और निकट के तंतुजाल पर हलकी थरथराहट का आभास हुआ। अजीब बात है। कम सोने से

भी दर्द होता है और ज्यादा सोने से भी। लेकिन आज की यह नींद बिल्कुल अनावश्यक थी। इसकी कोई चाह नहीं थी। बिन बुलाए मेह-मान की तरह यह नींद आई और अपना स्वागत करा ले गई। लेकिन अब रात को क्या होगा?

गहरी सांस लेकर उठा और बाथरूम में आ गया। बेसिन पर झुका। आंखों व चेहरे पर पानी के लगातार छींटे दिए। वापस कमरे में आ तौलिये के ताजी धुलाई की गंध वाले मुलायम रेशों में मुंह छिपा लिया।

सामने की कुर्सी पर आंखों के दो पीले सितारे चमक रहे थे।

'जुगनू।'

वह मुलायमियत अपनी बांहों में भर ली। वह अपने दायें गाल वाला हिस्सा मेरे गले से रगड़ने लगी।

'तू कहां से आ गई? सोनू कहां है?'

जुगनू ने दोनों कान फड़फड़ाए। फिर एक पंजा ऊपर उठा दिया।

'क्या बात है?' पंजे की नर्म लंबाई टटोली, 'कहीं दब गया था क्या?'

'कौन?…कौन है?'

अचानक बिंदो का स्वर बाहर सुनाई दिया। फिर कुछेक कदमों की हल्की आहट दरवाजे पर आ ठिठक गई।

मैंने लैंप का स्विच दबाया।

'तुम यहीं हो? अंधेरा देखकर मैं तो समझी थी कि…'

'सो गया था।'

बिंदो की मंद मुस्कान होंठों में सिमटने लगी, 'तो अभी उठे हो?'

'हूं।' जुगनू को नीचे उतारने लगा।

'चाय पियोगे? पानी उबल रहा है।'

'कॉफी—ब्रू की। खूब स्ट्रांग।'

'अच्छा!'

कुछ मिनटों बाद बिंदो ने आकर कप थमा दिया और अपना

प्याला हाथ में लिए कुर्सी पर बैठ गई।

तुर्श कॉफी। पांच-छह घूंटों के बाद नस की तड़कन कम होती-सी लगी। नस जैसे एक सूखी टहनी थी, जो जलती धूप में ऐंठ रही थी। ठंडी फुहार के बाद अकड़न खोने लगी।

'तुम कब आई हो ?'

'अभी। बीस मिनट पहले।'

'बारिश कब से हो रही है ?'

'करीब आधे घंटे से।'

'और कोई है घर में ?'

'न•••।'

विंदो ने पांव चप्पलों से निकाले और सामने मेज पर फैला लिए। कप बायें हत्थे के सिरे पर संभाल कर रखा और सिर पीछे टिका लिया। दोनों हाथ सीधे। आंखें ऊपर लगी हुईं, 'बहुत खलता है••• दिन भर की जद्दोजेहद के बाद खाली घर में आते हुए।' चुप्पी, 'तुम कहीं बाहर गए थे आज ?"

'नहीं।'

विंदो ने पर्स से दो स्ट्रिप निकालीं। रैपर से पहचाना, छोटी गुलाबी गोली चिंता या उसकी आशंका से बचाव की थी। दूसरी पीली थी—डिप्रेशन के लिए। एक पल सोचा, फिर गुलाबी गोली मुंह में रख ली। कप उठाकर एक घूंट भरा, 'इस इंटरव्यू का क्या हुआ ?'

'अभी तो कोई इत्तला नहीं मिली।'

'कहा क्या था ?'

'यही कि जल्दी ही सूचित करेंगे। शायद आजकल में रिगरेट लेटर आ जाएगा।'

विंदो ने स्थिर दृष्टि से देखा, 'तुम इस तरह क्यों सोचते हो ?' कुछ दुखभरे आवेश से कहा, 'तुम हमेशा बुरे परिणाम के लिए अपने को तैयार कर लेते हो। बल्कि जैसे उत्सुकता से उसी की प्रतीक्षा करते हो।' अब स्वर में केवल आवेश था, 'हालांकि सच्चाई यह है कि उम्र के जिस चढ़ाव पर तुम हो, उसमें सिर्फ आशा और उत्साह की उमंगें होनी

चाहिए।' अब स्वर में केवल दुख था।

मग नीचे रखा और दोनों हाथों की उनकी उंगलियों पर ठोड़ी टिका ली।

'कुछेक भावनाओं को शब्दों में प्रकट करने में मुझे उलझन होती है, लेकिन तुम्हारे लिए मैं जिस तरह से कंसर्न्ड महसूस करती हूं, उसमें मुझे लगता है कि···'

वाक्य झंडियों व फैस्टूनों की तरह वातावरण में टंग गया। कुछ क्षणों के लिए व्यग्र आंखों का केंद्र बना। फिर मन में सुगंधि की सूक्ष्म-सी तरंग छोड़ते हुए विलुप्त हो गया।

'सवाल दुनिया में अपनी जगह जानने का और उसके साथ किन्हीं शर्तों पर जुड़ने का है। उस आत्मविश्वास का है, जो तुम्हें अंदर-बाहर से मजबूत बनाएगा, तुम्हारे व्यक्तित्व को ही बदल देगा। एक उम्र के बाद आर्थिक निर्भरता, चाहे वह कितनी ही कम और किसी से भी हो, कई तरह की ग्रंथियों को जन्म दे सकती है। इसी घर में इस सच्चाई का एक कड़वा उदाहरण तुम्हारे सामने है। मैं कभी नहीं चाहूंगी के तुम्हारे माध्यम से मुझे दूसरा नमूना देखना पड़े।'

पंखे की एकरस घर्र-घर्र। चुप्पी।

'जब तुम यहां से निकलकर बाहरी दुनिया का सामना करते हो, तब ?'

'मुझे अजीब-सी झिझक और हीनता महसूस होती है।'

'क्यों ?'

'मुझे लगता है कि मुझसे कुछ न कुछ गलत हो जाएगा। थोड़े तनाव से ही मेरे तलवों व हथेलियों पर पसीना छूटने लगता है, और जी चाहता है कि लोगों के बीच से भागकर कहीं एकांत में जा छिपूं।'

'मगर तुम क्यों करते हो ऐसा महसूस ?' बिंदो जैसे जिद से बोली।

'छोड़ो बिंदो !' निढाल स्वर में कहा, 'शायद असफलता ही मेरी नियति है।'

प्याला हाथ में लिए कुर्सी पर बैठ गई।

तुर्श कॉफी। पांच-छह घूंटों के बाद नस की तड़कन कम होती-सी लगी। नस जैसे एक सूखी टहनी थी, जो जलती धूप में ऐंठ रही थी। ठंडी फुहार के बाद अकड़न खोने लगी।

'तुम कब आई हो ?'

'अभी। बीस मिनट पहले।'

'बारिश कब से हो रही है ?'

'करीब आधे घंटे से।'

'और कोई है घर में ?'

'न···।'

बिंदो ने पांव चप्पलों से निकाले और सामने मेज पर फैला लिए। कप बायें हत्थे के सिरे पर संभाल कर रखा और सिर पीछे टिका लिया। दोनों हाथ सीधे। आंखें ऊपर लगी हुईं, 'बहुत खलता है··· दिन भर की जद्दोजेहद के बाद खाली घर में आते हुए।' चुप्पी, 'तुम कहीं बाहर गए थे आज ?"

'नहीं।'

बिंदो ने पर्स से दो स्ट्रिप निकालीं। रैपर से पहचाना, छोटी गुलाबी गोली चिंता या उसकी आशंका से बचाव की थी। दूसरी पीली थी—डिप्रेशन के लिए। एक पल सोचा, फिर गुलाबी गोली मुंह में रख ली। कप उठाकर एक घूंट भरा, 'इस इंटरव्यू का क्या हुआ ?'

'अभी तो कोई इत्तला नहीं मिली।'

'कहा क्या था ?'

'यही कि जल्दी ही सूचित करेंगे। शायद आजकल में रिगरेट लेटर आ जाएगा।'

बिंदो ने स्थिर दृष्टि से देखा, 'तुम इस तरह क्यों सोचते हो ?' कुछ दुखभरे आवेश से कहा, 'तुम हमेशा बुरे परिणाम के लिए अपने को तैयार कर लेते हो। बल्कि जैसे उत्सुकता से उसी की प्रतीक्षा करते हो।' अब स्वर में केवल आवेश था, 'हालांकि सच्चाई यह है कि उम्र के जिस चढ़ाव पर तुम हो, उसमें सिर्फ आशा और उत्साह की उमंगें होनी

चाहिए।' अब स्वर में केवल दुख था।

मग नीचे रखा और दोनों हाथों की उलझी उंगलियों पर ठोड़ी टिका ली।

'कुछेक भावनाओं को शब्दों में प्रकट करने में मुझे उलझन होती है, लेकिन तुम्हारे लिए मैं जिस तरह से कंसर्न्ड महसूस करती हूं, उसमें मुझे लगता है कि···'

वाक्य झंडियों व फेस्टूनों की तरह वातावरण में टंग गया। कुछ क्षणों के लिए व्यग्र आंखों का केंद्र बना। फिर मन में सुगंधि की सूक्ष्म-सी तरंग छोड़ते हुए विलुप्त हो गया।

'सवाल दुनिया में अपनी जगह जानने का और उसके साथ किन्हीं शर्तों पर जुड़ने का है। उस आत्मविश्वास का है, जो तुम्हें अंदर-बाहर से मजबूत बनाएगा, तुम्हारे व्यक्तित्व को ही बदल देगा। एक उम्र के बाद आर्थिक निर्भरता, चाहे वह कितनी ही कम और किसी से भी हो, कई तरह की ग्रंथियों को जन्म दे सकती है। इसी घर में इस सच्चाई का एक कड़वा उदाहरण तुम्हारे सामने है। मैं कभी नहीं चाहूंगी कि तुम्हारे माध्यम से मुझे दूसरा नमूना देखना पड़े।'

पंखे की एकरस घर्र-घर्र। चुप्पी।

'जब तुम यहां से निकलकर बाहरी दुनिया का सामना करते हो, तब ?'

'मुझे अजीब-सी झिझक और हीनता महसूस होती है।'

'क्यों ?'

'मुझे लगता है कि मुझसे कुछ न कुछ गलत हो जाएगा। थोड़े तनाव से ही मेरे तलवों व हथेलियों पर पसीना छूटने लगता है, और जी चाहता है कि लोगों के बीच से भागकर कहीं एकांत में जा छिपूं।'

'मगर तुम क्यों करते हो ऐसा महसूस ?' बिंदो जैसे जिद से बोली।

'छोड़ो बिंदो !' निढाल स्वर में कहा, 'शायद असफलता ही मेरी नियति है।'

९ मई

अकेलापन कैसा सघन और ठोस है—वर्फ की तरह जमा हुआ। इसने चारों तरफ से मुझे घेर रखा है। जैसे वर्फ की सिल्लियों के बीच रखी चीज खराव नहीं होती, वैसे ही शायद मेरी यह अनुभूति भी अक्षुण्ण रहेगी। यह अहसास कितना मूर्त है! मैं हाथ वढ़ाकर इस सघनता को छू सकता हूं, उंगलियों से खरोंच सकता हूं, चाकू से इसकी परतें काट सकता हूं—पतली, वारीक।

२१ मई

आज पूरा दिन घर में ही काट दिया—अखवारों, पत्रिकाओं और कितावों के सहारे।

'आज तुम्हारी छुट्टी थी ?'

'नहीं।'

'तुम आज काम पर थे ?'

'नहीं।'

ये कैसे उत्तर हैं—तर्क से परे!

'खैर···दिन भर तुमने क्या किया ?'

'कुछ नहीं।'

'कल क्या करोगे ?'

'कुछ नहीं।'

'तुम्हारे जवावों में 'नहीं' वहुत आता है ?'

'मैं कम से कम अपनी नकारात्मक भावनाओं के वारे में आश्वस्त हूं।'

सुवह से दोपहर हुई। दोपहर से शाम। शाम से रात। मेरे लिए कोई अंतर नहीं पड़ा।

किस सन् का कौन-सा महीना है, क्या दिन है, कौन-सी तारीख है—इन सवकी मेरे निकट कोई प्रासंगिकता नहीं। घड़ी और कैलेंडर, दोनों मेरे लिए अर्थहीन हैं। मैं समय के अनंत विस्तार में जीवित हूं। तीव्र, स्वच्छंद प्रवाह में वहा जा रहा हूं।

३ जून

जिंदगी सबके लिए बदलती है—घूरे तक के लिए। इन पंक्तियों का लेखक घूरे से भी बदतर है। अगर मुझसे कहा जाए कि कुछ रेखाओं में अपनी जिंदगी को समेटकर दिखाओ, तो मैं कुछ इस तरह की चीज बनाऊंगा। शाम का झुटपुटा है। एक पुराने ठूंठ से टिका एक व्यक्ति बैठा है। बगल में उसकी पोटली रखी है। वह दूर, नदी के पार डूबती लाली को देख रहा है—और उस नाव को, जिसका उसे हफ्तों, महीनों, बल्कि सालों से इंतजार है। एकाएक पानी की सतह पर झुकी निचली शाखाओं के झोंकों के बीच से कोई परिंदा बोल उठता है और उसकी कातर चीत्कार छुरे की धार-सी, वातावरण की स्तब्धता को आरपार काट देती है।

लेकिन नहीं, आवाज कैसे ? यह तो रेखाचित्र है !

१६ जून

बाद में सोने वाला होने की वजह से रोशनियां बुझाने की जिम्मेदारी मेरी है। विदो-जित्तन के दिल्ली आ जाने के बाद भी यह क्रम टूटा नहीं। ग्यारह और बारह के बीच जब भी सोने को होता, तो बाहर निकलकर पहले पोर्टिको, फिर बरामदा, फिर ड्राइंगरूम, फिर गलियारा, फिर खाने के कमरे की तरह इस्तेमाल होने वाला सहन, गुसलखाना, फिर अपना कमरा।

यहां से वहां तक बिखरी उज्ज्वल, जीवंत आलोक-लहरियां हलकी खट् के साथ ही एकाएक धूमिल हो जातीं। अंधेरे में उनके जज्ब होने की प्रक्रिया···प्रारंभिक क्षणों का निष्प्रभ विस्मय···फिर काले तानों-बानों का सहसा तीव्रता से फूलना-फैलना। जहां-तहां किरन या पंखुरी के आकार के बहुत हलकी धुंधलाहट के चकत्ते—तेजी से कालिमा में घुलते हुए···कुछ पलों के बाद अंधकार गाढ़ा, स्थिर।

स्विच पर उंगली रखते हुए कई बार याद आती—प्रमथ्यु की···।

२३ जून

सारी शाम अहाते में बैठे-बैठे काट दी।

धुंधलके के साथ अचानक लगा कि आज किताबों के सहारे शाम नहीं बीत पाएगी। पता नहीं क्यों, यह कविता :

नसों में ठंडा पारा महसूस करते हुए
भींचे जाते हुए पीड़ा के काले, फौलादी शिकंजे में
कसे जाते हुए निर्ममता से कद्दूकस पर···
ऐसे में कभी-कभी
सुनाई देता है
—वह शुद्ध संगीत : रोशनी की धुन।
पावन, शीतल, शांतिभरा
भीतर का अनहद नाद—
वहीं—मानवीय यातना के बीच···

पढ़ते-पढ़ते अचानक लगा कि बस, अब और नहीं···किताब उछालकर एक कोने में फेंक दी, जैसे मानवीय यंत्रणा को ही फेंक दिया हो। 'पटाक' की आवाज के साथ सुना कि जैसे किसी रुंधे गले का हाहाकार भी सुना हो। तुरंत बिस्तर से उतरा, झपटकर दरवाजा खोला—कुछ ऐसी उतावली से कि कहीं आर्तनाद के स्वर पैरों से न उलझ जाएं।

बाहर बैठे-बैठे शाम को रात में ढलते हुए देखा—रंगों का शोर के धीमेपन के साथ फीका पड़ते-पड़ते धुंधला जाना। फिर उस धुंधलाहट का सन्नाटे के साथ हलके कालेपन में घुलना। उस कालिमा का धीरे-धीरे गहराना—हलकी आवाजों के साथ। कीड़ों-मकोड़ों की झनझनाहट···पौदों का सरसराना। आसमान की स्याही में धीरे-धीरे इक्के-दुक्के तारों का चमकना।

और बैठे-बैठे दिमाग में दुनिया-जहान की बातें—उलटी-सीधी, बेतरतीब। बिना किसी सिलसिले के, असंबद्ध आवाजों के साथ बिंबों व शब्दों के गुंथाव और तस्वीरों का भीतर झिलमिलाते जाना। अंधेरा···उसे काटती रोशनी की शहतीरें···टुडे'ज एंगेजमेंट्स···लाल

बत्ती···चिं च्यं च्यूं चीं च्वी के साथ पहियों का थमना···स्टालिन···अजमलखां पार्क में शाम के छह बजे···पहाड़, पहाड़ को काटती नहर···किनारे खजूर के पेड़···सा रे ग म प ध नी सा···क्रिस्टीन कीलर···मार्टिन लूथर किंग···क्या कहने, जी चाहता है, प्यास लगे···आसमान···जैट···जूम···खिड़की···कांच···पत्थर···छन्न !

ढलती हुई शाम। अंधेरा बढ़ता है, आहिस्ता-आहिस्ता। मटमैले आसमान की पृष्ठभूमि में जब इमारतें, मकान और पेड़ धीरे-धीरे आउट आफ फोकस होने लगते हैं। तारों के चमकने की शुरुआत के साथ शाम व रात की वह मिलन-रेखा, जब सन्नाटा गहरा होने लगता है। आहटें व गूंजें कुछ तीखी, तीव्र।

ऐसे में खाली मकान की खामोशी कुछ बढ़ती-सी मालूम होती है। आसपास की मद्धिम आहटें चारदीवारी के मौन को गहरा कर देती हैं। और अगर घर के व्यस्त लोगों का बाहर निकलना लक्षित किया गया हो, तो इस सूनेपन में उदासी घुलमिल जाती है।

कुछ देर पहले वे लोग यहीं थे—चाय पीते हुए, बातचीत करते हुए। शायद इस निश्चितता के साथ कि शाम खाली नहीं है। मन में इस बात का हिसाब था कि तैयार होने में कितना समय लगेगा, और पहुंचने में कितना···और वह बिंदु आते ही वे उठ खड़े हुए। बीच-बीच में अंदर से आती आहटें। गुसलखाने में गिरते पानी की आहट, आलमारी खुलना, कमरे के दरवाजे का बंद होना।

पहले ममा बाहर निकलीं—औसत चाल से। जैसे यह भी सुबह दफ्तर की तरह का एक अनिवार्य प्रस्थान हो। गाड़ी का दरवाजा खुला, बंद हुआ। इंजिन की यकायक थरथराहट। गाड़ी बाहर निकली और दाईं ओर मुड़ गई।

दृश्य के फ्रेम में जैसे क्षण-भर कंपकपाहट रही—एक तत्त्व के बाहर निकल जाने पर।

फिर बिंदो···एक हाथ में पर्स लिए। दूसरे से पल्लू संभालती। चाल में हलकी उतावली, जैसे देर होने पर अपना दाय मिलने में कोई कमी रह जाएगी। लहर-सी सीढ़ियां उतरी, गेट से आगे बढ़ते हुए हाथ

हिलाया। सड़क के किनारे पहुंच ठिठकी, यहां-वहां देखा। पीछे से आता स्कूटर-रिक्शा रोका, फुर्ती से बैठी। पिछले कटाव में से गर्दन व जूड़े की एक झलक···और रिक्शा बाईं ओर मुड़ गया।

धीरे-धीरे अंधेरा गहरा होता गया। मकानों व पेड़ों के बीच के फासले मिटते गए। पास से किसी गीत की धुन आई—मद्धिम, अंधेरे में हलकी आशंकित-सी। धीरे-धीरे ऊंची और आश्वस्त, खिड़की के रोशनी-जड़े चौखटे में से ध्वनियों की तरंगें निकलीं। कोई कल-कल करती क्यारियों में छितराई, कोई गुलाब के ऊपर भौंरे-सी मंडराई, कोई बाड़ के साथ-साथ ऊंची घास में सरसराई···

अचानक घंटी। खाली मकान में और ऊंची, गूंजभरी, तेज धार जैसी। पल में सब कुछ छिन्न-भिन्न हो गया।

घंटी। आतुर। व्यग्र।

उठा। बरामदे की सीढ़ियां चढ़ीं। ड्राइंगरूम का दरवाजा खोला। बिना बत्ती जलाए टटोलकर रिसीवर उठाया।

'हैलो!'

'क्या मैं बिंदो से बात कर सकता हूं?'

'वो बाहर गई हैं।'

'कहां?'

'कहकर नहीं गईं। जान सकता हूं कि कौन साहब बोल रहे हैं?'

एक क्षण की चुप्पी।

'नेवर माइंड।'

और रिसीवर रख दिया गया।

खाने की मेज पर शांति थी। आम तौर से रहती है, पर आज कुछ अजीब-सी थी। यों बिंदो सोमू से बात करती रहती है, लेकिन आज वह भी चुप-चुप थी। बस, कभी-कभी चम्मच की खनखनाहट···या प्लेट की खनक।

लक्ष्य किया कि जिसन कुछ विचलित-से हैं। शायद उन्हें मौन अपने विरुद्ध अभियोग जैसा लगता है। उन्होंने एक निवाला तोड़ा।

चबाया। पानी का एक घूंट भरा। इधर-उधर देखा। फिर बोले, 'शंकर रोड पर आज एक डबल डेकर उलट गई।'

मैंने और सोमू ने निगाह उठाकर उनकी ओर देखा। अन्य व्यक्ति आत्मलीन थे।

कुछ क्षणों के मौन में जित्तन ने निर्णय ले लिया कि उन्हें हतोत्साहित नहीं होना है।

'कितने लापरवाह होते हैं ये ड्राइवर। कुछ लोग तो वहीं, आनन-फानन मर गए।'

'होम-वर्क कर लिया ?' बिंदो ने सहसा सोमू की ओर देखा।

सोमू ने हामी में सिर हिलाया।

'गुड। जल्दी सो जाना। कल की तरह देर तक मत पढ़ते रहना।'

ध्वनियां कुछ पल हवा में थमी रहीं—कंपकंपाती।

अपनी प्लेट देख रहा था—रोटी का टुकड़ा, आलू-प्याज और टमाटर के कतरे, साथ की प्याली में दाल।

'मैं निरुला के सामने सवा आठ तक इंतजार करती रही।' बिंदो ने ममा को देखा।

'मोटर खराब हो गई है।'

कुछ पल चुप्पी रही।

'क्यों ? क्या हुआ ?' जित्तन का स्वर था। सरोकार वाला।

'बैटरी डाउन हो गई है।'

'गाड़ी छोड़ी कहां है ?' जित्तन ने पूछा।

'मिसेज चड्ढा के यहां। गनीमत थी कि वहीं बिगड़ी।'

'सुबह मैं ले आऊंगा।' जित्तन तत्परता से बोले।

'अभी तो इतने रुपये नहीं होंगे घर में। बैंक जाना पड़ेगा कल, तब कहीं…।'

'मेरे पास हैं।' बिंदो बोली—मेज पर कुहनी, हथेली पर कनपटी, विचारपूर्ण ढंग से निवाला कुतरती।

जित्तन जैसे कुछ चौंके। सीधी दृष्टि से बिंदो को देखा। बिंदो ने लक्ष्य किया और अनदेखा कर दिया। वैसा ही खोया-खोया भाव। वैसी

ही तटस्थ मुद्रा।

पेट में एक मरोड़-सी उठी और ऊपर तक बिखरती चली गई। याद आया कि दोपहर को न खाने के बराबर खाया था, सिर्फ दस-बारह चम्मच चावल अपनी पात्रता के अनुरूप। सामने खाना और दोपहर का एकांत होते हुए भी। एकदम हाथ कटोरदान तक बढ़ाया, रोटी उठाई। एक उंगली ढक्कन से टकराई और उसका सिरा खट की आवाज के साथ मेज से जा लगा।

मम्मा ने सिर उठाया। देखा।

लगा कि पढ़ते-पढ़ते कुछ समय हो गया है। घड़ी देखी। पैंतालीस मिनट हो गए थे। पलटने को पन्ने भी पलटे थे, बीस-बाईस। पर बिना ध्यान के।

किताब बंद की। आंखें मूंदीं। अंदर दिमाग में कोई नस तड़क गई। थकान, अंदर और बाहर की।

बंद आंखों के अंधेरे में हाथ कटोरदान की ओर बढ़ा, रोटी उठी और नजर सामने कौंध गई। शायद वह पांचवीं रोटी थी। तीन रोटियां खाने वाले हाथ ने पांचवीं उठाई थी।

क्या था उस दृष्टि में ?—भर्त्सना ? विरक्ति ? क्षोभ ?

कहीं कुछ गिरा। लगा कि शायद इसी कमरे में। हाथ बढ़ाकर स्विच दबाया···नहीं, यहां नहीं।···स्विच फिर दबाया।

करवट ली। खिड़की की राह आसमान का टुकड़ा। तारे।

कितनी देर हो गई लेटे-लेटे, शायद दो या तीन घंटे। एक बार कमजोरी आई मन में कि घड़ी देखूं। पर उसे वहीं दबाने की कोशिश की।

कुछ ऐसा सोचो, जिससे नींद आए। वातावरण में रंगबिरंगी हिलोरें, धरती की सतह से धीरे-धीरे ऊपर उठना-तैरना। ऊपर, और ऊपर—पानी को काटने की तरह हाथ चलाना। पीछे को बहते बादलों के टुकड़े—सन-से सफेद, पारदर्शी।

नहीं, कोई फायदा नहीं।

उठा। थोड़ा पानी पिया। फिर बैठा। फिर उठ खड़ा हुआ। घड़ी देखी। दो।

खिड़की के आगे आ खड़ा हुआ। ढली रात का मौन। नीरवता। कितनी रातें इस तरह काटी हैं। कितनी और काटोगे?

ढक्कन की तरफ और उठी हुई निगाह—ग्लानि? क्रोध? वितृष्णा।

छोटी सुई चार पर। बड़ी आठ पर।

अब? लेना होगा! निर्णय लेना होगा।

कितना कुछ तो देख लिया। हुआ क्या? कुछ नहीं। कोई नहीं। है हिम्मत?

कुछ क्षणों वैसे ही खड़ा रहा। मेज से सटा। स्थिर।

तुम्हारे लिए कुछ भी बदलने वाला नहीं है। बस, इसी तरह सुबह से शाम करते जाना।

तेजी से बाहर निकला। गलियारा पार किया। बरामदे के कोने में जित्तन सो रहे थे। शांत।

वापस लौटा। तिरे के दरवाजे पर उंगली रखी। कुछ ठेला। खुला था।

निःशब्द भीतर घुसा। नाइट लाइट। मसहरी के भीतर से मद्धिम सांस।

मेज पर टटोला। पर्स। दराज खोली। बहुत हलकी आहट—काठ घिसने की। कई स्ट्रिप थी। टटोलीं। एक बाहर निकाली। धुंधली रोशनी में देखी। ठीक।

दराज बंद की। फिर बहुत हलकी किर्र-किर्र।

बाहर निकला। किवाड़ भेड़ दिया।

कमरा। लैंप जलाया।

मन बिल्कुल शांत था। निरुद्विग्न।

कागज फाड़ा। एक गोली निकाली। सफेद। मुंह में रखी। एक

ही तटस्थ मुद्रा।

पेट में एक मरोड़-सी उठी और ऊपर तक बिखरती चली गई। याद आया कि दोपहर को न खाने के बराबर खाया था, सिर्फ दस-बारह चम्मच चावल अपनी पात्रता के अनुरूप। सामने खाना और दोपहर का एकांत होते हुए भी। एकदम हाथ कटोरदान तक बढ़ाया, रोटी उठाई। एक उंगली ढक्कन से टकराई और उसका सिरा खट की आवाज के साथ मेज से जा लगा।

ममा ने सिर उठाया। देखा।

लगा कि पढ़ते-पढ़ते कुछ समय हो गया है। घड़ी देखी। पैंतालीस मिनट हो गए थे। पलटने को पन्ने भी पलटे थे, बीस-बाईस। पर बिना ध्यान के।

किताब बंद की। आंखें मूंदीं। अंदर दिमाग में कोई नस तड़क गई। थकान, अंदर और बाहर की।

बंद आंखों के अंधेरे में हाथ कटोरदान की ओर बढ़ा, रोटी उठी और नजर सामने कौंध गई। शायद वह पांचवीं रोटी थी। तीन रोटियां खाने वाले हाथ ने पांचवीं उठाई थी।

क्या था उस दृष्टि में ?—भर्त्सना ? विरक्ति ? क्षोभ ?

कहीं कुछ गिरा। लगा कि शायद इसी कमरे में। हाथ बढ़ाकर स्विच दबाया…नहीं, यहां नहीं।…स्विच फिर दबाया।

करवट ली। खिड़की की राह आसमान का टुकड़ा। तारे।

कितनी देर हो गई लेटे-लेटे, शायद दो या तीन घंटे। एक बार कमजोरी आई मन में कि घड़ी देखूं। पर उसे वहीं दबाने की कोशिश की।

कुछ ऐसा सोचो, जिससे नींद आए। वातावरण में रंगबिरंगी हिलोरें, धरती की सतह से धीरे-धीरे ऊपर उठना-तैरना। ऊपर, और ऊपर—पानी को काटने की तरह हाथ चलाना। पीछे को बहते बादलों के टुकड़े—सन-से सफेद, पारदर्शी।

नहीं, कोई फायदा नहीं।

उठा। थोड़ा पानी पिया। फिर बैठा। फिर उठ खड़ा हुआ। घड़ी देखी। दो।

खिड़की के आगे आ खड़ा हुआ। ढली रात का मौन। नीरवता। कितनी रातें इस तरह काटी हैं। कितनी और काटोगे?

ढक्कन की खट और उठी हुई निगाह—ग्लानि? क्रोध? वितृष्णा।

छोटी सुई चार पर। बड़ी आठ पर।

अब? लेना होगा! निर्णय लेना होगा।

कितना कुछ तो देख लिया। हुआ क्या? कुछ नहीं। कोई नहीं। है हिम्मत?

कुछ क्षणों वैसे ही खड़ा रहा। मेज से सटा। स्थिर।

तुम्हारे लिए कुछ भी बदलने वाला नहीं है। बस, इसी तरह सुबह से शाम करते जाना।

तेजी से बाहर निकला। गलियारा पार किया। बरामदे के कोने में जित्तन सो रहे थे। शांत।

वापस लौटा। सिरे के दरवाजे पर उंगली रखी। कुछ ठेला। खुला था।

निःशब्द भीतर घुसा। नाइट लाइट। मसहरी के भीतर से मद्धिम सांस।

मेज पर टटोला। पर्स। दराज खोली। बहुत हलकी आहट—काठ घिसने की। कई स्ट्रिप थीं। टटोली। एक बाहर निकाली। धुंधली रोशनी में देखी। ठीक।

दराज बंद की। फिर बहुत हलकी किर्र-किर्र।

बाहर निकला। किवाड़ भेड़ दिया।

कमरा। लैंप जलाया।

मन बिल्कुल शांत था। निरुद्विग्न।

कागज फाड़ा। एक गोली निकाली। सफेद। मुंह में रखी। एक

ही तटस्थ मुद्रा।

पेट में एक मरोड़-सी उठी और ऊपर तक बिखरती चली गई। याद आया कि दोपहर को न खाने के बराबर खाया था, सिर्फ दस-बारह चम्मच चावल अपनी पात्रता के अनुरूप। सामने खाना और दोपहर का एकांत होते हुए भी। एकदम हाथ कटोरदान तक बढ़ाया, रोटी उठाई। एक उंगली ढक्कन से टकराई और उसका सिरा खट की आवाज के साथ मेज से जा लगा।

ममा ने सिर उठाया। देखा।

लगा कि पढ़ते-पढ़ते कुछ समय हो गया है। घड़ी देखी। पैंतालीस मिनट हो गए थे। पलटने को पन्ने भी पलटे थे, बीस-बाईस। पर बिना ध्यान के।

किताब बंद की। आंखें मूंदीं। अंदर दिमाग में कोई नस तड़क गई। थकान, अंदर और बाहर की।

बंद आंखों के अंधेरे में हाथ कटोरदान की ओर बढ़ा, रोटी उठी और नजर सामने कौंध गई। शायद वह पांचवीं रोटी थी। तीन रोटियां खाने वाले हाथ ने पांचवीं उठाई थी।

क्या था उस दृष्टि में ? --भर्त्सना ? विरक्ति ? क्षोभ ?

कहीं कुछ गिरा। लगा कि शायद इसी कमरे में। हाथ बढ़ाकर स्विच दबाया...नहीं, यहां नहीं।...स्विच फिर दबाया।

करवट ली। खिड़की की राह आसमान का टुकड़ा। तारे।

कितनी देर हो गई लेटे-लेटे, शायद दो या तीन घंटे। एक बार कमजोरी आई मन में कि घड़ी देखूं। पर उसे वहीं दबाने की कोशिश की।

कुछ ऐसा सोचो, जिससे नींद आए। वातावरण में रंगबिरंगी हिलोरें, धरती की सतह से धीरे-धीरे ऊपर उठना-तैरना। ऊपर, और ऊपर—पानी को काटने की तरह हाथ चलाना। पीछे को बहते बादलों के टुकड़े—सन-से सफेद, पारदर्शी।

नहीं, कोई फायदा नहीं।

उठा। थोड़ा पानी पिया। फिर बैठा। फिर उठ खड़ा हुआ। घड़ी देखी। दो।

खिड़की के आगे आ खड़ा हुआ। ढली रात का मौन। नीरवता। कितनी रातें इस तरह काटी हैं। कितनी और काटोगे?

धड़कन की खट और उठी हुई निगाह—ग्लानि? क्रोध? वितृष्णा।

छोटी सुई चार पर। बड़ी आठ पर।

अब? लेना होगा! निर्णय लेना होगा।

कितना कुछ तो देख लिया। हुआ क्या? कुछ नहीं। कोई नहीं। है हिम्मत?

कुछ क्षणों वैसे ही खड़ा रहा। मेज से सटा। स्थिर।

तुम्हारे लिए कुछ भी बदलने वाला नहीं है। बस, इसी तरह सुबह से शाम करते जाना।

तेजी से बाहर निकला। गलियारा पार किया। बरामदे के कोने में जित्तन सो रहे थे। शांत।

वापस लौटा। सिरे के दरवाजे पर उंगली रखी। कुछ ठेला। खुला था।

निःशब्द भीतर घुसा। नाइट लाइट। मसहरी के भीतर से मद्धिम सांस।

मेज पर टटोला। पर्स। दराज खोली। बहुत हलकी आहट—काठ घिसने की। कई स्ट्रिप थी। टटोलीं। एक बाहर निकाली। धुंधली रोशनी में देखी। ठीक।

दराज बंद की। फिर बहुत हलकी किर्र-किर्र।

बाहर निकला। किवाड़ भेड़ दिया।

कमरा। लैंप जलाया।

मन बिल्कुल शांत था। निरुद्विग्न।

कागज फाड़ा। एक गोली निकाली। सफेद। मुंह में रखी। एक

घूंट पानी।

यकायक पेड़ पर निगाह पड़ी। सामने खींचा। पेन उठाया। कुछ पल सोचा, 'मैं हमेशा के लिए जा रहा हूं। विदा!'— गुलशन

दो-तीन बार पढ़ा। नहीं, नाटकीय है।

सफा फाड़कर भींचा। टोकरी में फेंक दिया।

'मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं। इस मृत्यु के लिए मैं खुद जिम्मेदार हूं।'—गुलशन

एक निगाह कागज देखा। पेपरवेट के नीचे दबा दिया।

सरसरी नजर कमरे में डाली···यूसुफे-जिंदा···।

स्ट्रिप फाड़ी। गोलियां मेज पर···विरक्ति मन में जागी···जल्दी करो यार, खत्म करो···।

एक गोली, एक घूंट···एक गोली, एक घूंट···एक गोली, एक घूंट।

दीवार स्थिर थी—कैलेंडर नहीं। दरवाजा स्थिर था—पर्दा नहीं। हवा के झोंकों से रह-रहकर पन्ने फड़फड़ा जाते थे और पर्दे में हिलोरें उठती थीं। दीवार बहुत सफेद थी। इतनी उजली कि पृष्ठभूमि में कैलेंडर के रंग और गहरे मालूम होते थे।

खिड़की खुली थी। पर आवाजें नहीं थीं। बहुत दूर होने का सिर्फ आभास। छना हुआ, बारीक कोलाहल। कहीं दूर।

एक जगह की हिलोर और दूसरी जगह का हलका नीला रंग, दोनों मिले और ज्वार दूर-दूर तक बिखरता चला गया···फेनिल लहरें, तेज, बौराई, जैसे हड्डियां तोड़ने वाले शिकंजों से अभी, इसी पल उन्मुक्त हुई हों। पहले आवेग में ही इस छोर से उस छोर तक को भिगो देने वाली, चट्टानों पर टकरातीं, छींटे दूर-दूर तक उड़ातीं···।

हलकी नीली लहर बीच से चीर दी गई और एक चेहरा भीतर घुसा। दंत-पंक्ति का एक हिस्सा झलकाता···।

हवा में दूर कटी पतंग की तरह दूर से तैरता एक नाम आया और उस चेहरे के नीचे लग गया। बिंदो···।

'लो देखो।'

खुला लिफाफा। एक टाइप की हुई चिट्ठी।

'परसों तुम्हारा इंटरव्यू है।'

कॉफी-हाउस। बीच-बीच में प्यालियों की टकराहट और आवाजें। उनका दबाव। उनकी खनक। उनकी गूंज।

जित्तन ने कॉफी का एक घूंट भरा। एक सिगरेट सुलगाई। दो-तीन कश खींचे।

'यार गुल्लू!'

एक गहरी सांस ली और तैयार हो गया, 'हां!'

'तुमने उसकी कोशिश की है, जो मुझे करना चाहिए।'

'जी?' चौंका।

'लेकिन मैं बहुत कायर हूं। मुझमें इतनी हिम्मत कहां कि···।'

'यह आप क्या कह रहे हैं!'

'आखिर जो जिंदगी मैं जी रहा हूं, उसका कोई मतलब है?' जित्तन की आंखों में दयनीयता थी दुत्कारे हुए कुत्ते जैसी, जो फिर भी ड्योढ़ी पर रेंगते हुए अपनी सार्थकता प्रमाणित करना चाहता है।

'ऐसा मत कहिए। मेरी और आपकी हालत में बहुत फर्क है।'

'क्या फर्क है?'

'मेरे साथ किसी की जिंदगी जुड़ी नहीं है।'

'और मेरे साथ किसकी जिंदगी जुड़ी है?' जित्तन का स्वर उद्धत था—चोट खाये बच्चे-सा, जो अपनत्व-भरा सांत्वना का स्पर्श चाहता है। और साथ ही अधिकार छिन जाने वाला आहत भाव।

'कम-से-कम बच्चे के लिए सोचिए।'

'कब तक सोचूं गुल्लू! मैं नहीं होऊंगा, तो उसकी मां उसकी देख-भाल कर लेगी।' जित्तन के चेहरे की मांसपेशियां कसी थीं, जैसे यह निर्णय तुरंत, तत्काल लेना हो—सचमुच। इस जलालत-भरी जिंदगी से तो···।'

तेज रोशनी और कोलाहल। वातावरण में मानवीय विद्यमानता

इस तरह भरी, जैसे गुब्बारे में गैस···इस तरह ठूंस-ठूंसकर कि स्वर फटने-फटने को आ जाए। आंखें खोलकर यहां देखते हुए यह सोचना भी कठिन था कि कोई कैसे निपट अकेलेपन के उस संत्रस्त कर देने वाले बिंदु तक पहुंच सकता है, जहां जिंदगी का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

मुझे लगा कि मेरे कान लाल होने लगे हैं, जैसे किसी ने एक गंदी गाली दे दी हो।

११ जुलाई, मंगलवार

तो यह भी करके देख लिया—आत्महत्या···नहीं, उसकी कोशिश, 'हरएक संवेदनशील व्यक्ति कभी-न-कभी आत्महत्या की कोशिश करता है।' तो अब तुम संवेदशील होने का दावा कर सकते हो।

साले, कद्दू कहीं के !

हवाएं, हलकी हवाएं।

पच्छिमी कानों से।

सागर के पार अनजानी दिशाओं से—

कितनी सदियों से दुहराती हैं गीत ये···।

लिम्का का आखिरी घूंट लेकर गिलास परे खिसका दिया। नैपकिन हलके से होंठों पर फिराया।

बहुत मद्धिम रोशनी में दीवारें अस्पष्ट, धुएं में डूबी-सी, बातचीत की बहुत हलकी भनभनाहट। बीच-बीच में छुरी-कांटे का प्लेट से टकरा जाना।

'मिस्टर रोहतगी ने कहा कि मुझे कोई एतराज नहीं है, पर औपचारिकता के नाते मिस्टर नारंग से पूछना होगा, क्योंकि तकनीकी लिहाज से देखें तो सेक्शन उनके मातहत है।' बिंदो के स्वर में पूरी नाटकीय व्यग्रता थी, और आशंका का तनाव, पर निश्चितता के हलके स्पर्श के साथ, क्योंकि अंत सुखद हो चुका था और उसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता था, 'नारंग साहब ने बहुत ध्यान से अर्जी पढ़ी। मुझे लगा कि उनकी भौंहों पर बल पड़ गए हैं। उन्होंने पेन का ढक्कन खोला

और सोचते हुए अचानक रुक गए।'

प्रिंटिड सैमन की आरगेंजा। एवान की धीमी गंध।

एयरकंडीशन की ठंडक की फुहारें, खुली बाहों की त्वचा पर धीरे-धीरे जमती हुई⋯।

'उनके चेहरे के भाव से लगता था कि 'स्वीकार नहीं' या 'खारिज' लिखेंगे, पर कागज सामने खिसकाया, तो देखा 'कोई एतराज नहीं'। मैंने तो ऐसी सुधबुध खोई कि उस समय शुक्रिया भी अदा नहीं किया।'

बिंदो के चेहरे पर वही मुस्कान थी, जो कभी-कभी अपनी भूल पर आती है। खुद से ही प्यारभरी।

हवाएं, हलकी हवाएं।

स्पर्श-सी दुलारतीं।

पंखों-सी छूती—घड़ी भर को⋯।

कुनर एक पैर पर बोझ डाले, कोमल भंगिमा से कमर तनिक लचकाए खड़ी थी। उंगलियों में माइक गुलदस्ते जैसी नफासत से थामे हुए।

'एक्सपोर्ट सेक्शन में कितनी सहूलियत हो जाएगी।' बिंदो की दृष्टि सामने थी—आगामी दिनों की दिनचर्या देखती-सी। एक तो चार मंजिल चढ़कर ऊपर नहीं जाना पड़ेगा। दूसरे एयरकंडीशन केबिन, तीसरे⋯।

पल भर को ध्यान ढीला हुआ और दो ओर से आती ध्वनियां एक-दूसरे में गुंथने लगीं—जंजीर की कड़ियों की तरह। कानों की सतह पर सिर्फ यह खनखनाहट सुनाई देती रही—अनवरत, यान्त्रिक प्रवाह⋯।

'गुल्लू! कहां हो तुम ?'

खनखनाहट जैसे सहसा तेज धार से काट दी गई हो। ध्वनि-तरंगों के बारीक रेशे जैसे पल भर कपकंपाते रहे।

बिंदो कुछ क्षण स्थिर दृष्टि से देखती रही। हलके से सिर झटका, 'चलो, खाओ।'

कुछ देर चुप्पी रही। काठ के स्टैंड पर तपी हुई स्टील की रकाबी,

मशरूम, चिकिन सूकियाकी, चावल पर चिकन के टुकड़े, सोयाबीन सॉस···।

विदो दाईं कोहनी मेज पर टिकाए थी—उंगलियों में चाप-स्टिक।

कुछ पलों बाद अपराध का बोध हुआ। लगा कि कुछ कहना चाहिए। विदो की ओर देखा, पर वह जैसे सोच में डूबी थी। लगा कि शायद जैसे टोके जाना नहीं चाहती।

जैस्मीन चाय का एक घूंट लेकर विदो ने गला तनिक साफ किया। मैं समझ गया, वह क्षण आ गया है।···एक बार ध्यान आसपास लगाने की कोशिश की। बातचीत की हलकी भनभनाहट, आर्केस्ट्रा में ड्रम की थपथपाहट···।

'गुल्लू! तुमने ऐसा क्यों किया?'

कई बार कुछ कहना कितना मुश्किल होता है! कुछ क्षणों सामने देखता रहा, जहां बड़े पेट और लंबी मूंछों वाली एक चीनी आकृति थी—आत्मसंतुष्ट और किंचित् आत्ममुग्ध भी। रेस्तरां में अगर ऐसे ही चेहरे सामने हों, तो भूख कुछ ज्यादा लग सकती है। फिर विदो की ओर···उसके चेहरे पर सरोकार-भरी पीड़ा थी।

'आखिर इस तरह क्यों सोचते हो तुम?'

'अब मैं तुमसे क्या कहूं विदो!' मन ही मन कहा।

'मैं तो हमेशा यही सोचती हूं कि···।'

'छोड़ो विदो, इस बात को छोड़ो। प्लीज···!'

'मैं पूछ सकती हूं कि इन तमाशों का मतलब क्या है?'

बरामदे के इस कोने से मेहंदी का झाड़ दिखाई दे रहा था, जहां दो चिड़ियां फुदक रही थीं—बीच-बीच में चोंच से तिनके चुगते हुए।

'आखिर हमने क्या किया है तुम्हारे साथ, जिसकी सजा तुम हमें ऐसे दे रहे हो?'

सड़क से एक कार। बीच में एक छोटा-सा हॉर्न देते हुए।

'कोई और होता तुम्हारी जगह, तो वैसे ही शर्मिंदा होता अपने ढर्रे पर। और एक तुम हो कि उल्टे···।'

अंदर कहीं पानी गिरने की आहट।

'और कितने हैं ऐसे, जिन्हें ये आराम की जिंदगी मयस्सर है ? अगर तुम्हें इतना ही चुभता है सब कुछ यहां, तो…'

गे एडवरटाइजर्स का दरवाजा खोलकर अंदर घुसा। सामने बायें कोने में पी० बी० एक्स० के सामने रिसेप्शनिस्ट बैठी थी—रिसीवर मुंह से लगाए, 'नो सर! ही इज आउट…अगर कोई मैसेज हो तो…' क्षण भर रुककर उसने पेंसिल उठाई। पैड पर एक फोन नंबर लिखा। 'यू आर वैलकम…' रिसीवर में कहा और क्रेडिल पर रख दिया।

'यस प्लीज ?' उसने पेशेवर स्मिताभास के साथ पूछा।

'मैं कॉपीराइटर के इंटरव्यू के लिए आया हूं।'

'ओह…' उसने कांच के नीचे दबा एक टाइपशुदा कागज निकाला, 'योर नेम प्लीज ?'

नाम सुनकर एक जगह सही का निशान लगाया। फिर सामने संकेत करते हुए कहा, 'आप बैठिए।'

बढ़कर काउच पर बैठ गया। मेज पर फिल्मफेयर और वीकली की प्रतियां पड़ी हुई थीं। वह इंटरकॉम पर कुछ कहने लगी। मैंने एक पत्रिका उठाई और पन्ने पलटने लगा। बीच में एकाध बार सामने नजर उठाई—फीरोजी शिफान, मेल खाता नीचे गले का स्लीवलैस ब्लाउज, रंगीन ट्रांसपेरेंसी तक पहुंचा ही था कि रिसेप्शनिस्ट का स्वर सुनाई दिया, 'आप जाइए। कमरा नंबर पांच…'

कुछ अचकचाकर उठ खड़ा हुआ। ऐसे अवसर पर आधा-आधा घंटा प्रतीक्षा करवाना मामूली बात है। फिर इतनी जल्दी क्यों बुला लिया ? क्या सिर्फ औपचारिकता निभानी है ?

इस बात को लेकर और उलझने की सहूलियत नहीं थी। रिसेप्शनिस्ट ने पैसेज की ओर संकेत किया तो जेबों में हाथ डाले बढ़ गया। मुड़ते-मुड़ते देखा, तो वह भरोसा दिलाने वाले ढंग से मुस्करा दी।

कमरा नंबर पांच अंतिम सिरे पर था। उस तक जैसे अपने-आपको समझा लिया कि यहां एक तरह से घूमता हुआ आ गया हूं। इन सब

चीजों को संजीदगी से लेने की जरूरत नहीं है। यहां से निकलकर कॉफी हाउस में एक कप कॉफी पियूंगा। फिर मद्रास होटल के स्टॉप से तीन नंबर पकड़कर घर चला जाऊंगा।

चेहरे का निर्जीव भाव थोड़ा न्यूट्रलाइज करते हुए दरवाजा खोला और रॉ-सिल्क के भारी पर्दे के पार निकल गया। बाईं ओर के छोटे-से क्यूबिकल में पी० ए० टाइपराइटर पर चुस्ती से उंगलियां चलाते दिखाई दी। उसके दायें हाथ की उंगली में स्मोकी टोपाज और इटैलियन हेयरस्टाइल की एक झलक ही देख सका।

वेनेशियन ब्लाइंड वाली खिड़की के आगे बड़ी-सी मेज थी, जिस पर लैंप जल रहा था। पहली निगाह में केवल पाइप और बाइ-फोकल चश्मा ही दिखाई दिया।

छह कदम मेज तक पहुंचने में लगे, 'गुडमॉर्निंग...'

'गुडमॉर्निंग।' निगाह उठाकर क्षण भर भांपा, 'बैठिए।'

निःशब्द कुर्सी पर बैठा। हत्थों पर कोहनियां टेककर दोनों हाथों की उंगलियां एक-दूसरे से उलझा लीं। फिर लगा कि यह कुछ नर्वस-सी मुद्रा है। आखिर किसी तरह जरूरतमंद तो हूं नहीं। मैं तो सिर्फ एक चांस ले रहा हूं। मुझे आत्मविश्वासी और शिष्ट ढंग से तनिक लापर-वाह-सा दिखाई देना चाहिए। उंगलियों की जकड़ खोली और हाथ जेबों में डाल लिए। फिर एक हाथ ऊपर उठाया और बालों पर हल्के से फिराया। पल भर को सोचा कि...

'हां तो...एडवरटाईजिंग में आपकी दिलचस्पी है ?' मैनेजर ने लंबी सांस लेकर हलकी मुस्कान के साथ कहा।

'जी।'

उन्होंने एक दृष्टि फाइल में खुले मेरे प्रार्थनापत्र पर डाली, 'वैसे आपको कॉपीराईटिंग का कोई अनुभव तो नहीं है।'

'जी नहीं।'

उन्होंने पाइप का एक कश खींचा। कुछ रुके, 'अच्छा, यह कैसे हुआ कि आपकी फॉर्मल एजुकेशन कम रह गई ?'

'इसके पीछे कुछ मनोवैज्ञानिक कारण है। मेरे मन में इम्तहान

के लिए बहुत डर बैठ गया था। मुझे लगता था कि मेरी नसें तीन घंटों में सालभर के परिणाम को उगल देने का तनाव बर्दाश्त नहीं कर पाएंगी।'

वे जरा-सा मुस्कराए, 'लेकिन इस पेशे में तो हर कॉपी एक इम्तहान बनकर आती है।'

इंटरकॉम ने पल-भर का मौन तोड़ा।

'एक्सक्यूज मी।' उन्होंने रिसीवर लेकर सुना, 'कनेक्ट कर दीजिए।' कुछ क्षणों बाद कहा, 'हैलो मिस्टर बत्रा! क्या हाल है जनाब?' विराम, 'अच्छा, अभी ठीक करवाता हूं।' पल-भर रुककर कहा, 'मिस्टर सेठी से मिलाइए।' फिर कुछ क्षणों के बाद लहजा बदलकर कहा, 'मिस्टर सेठी! पूसा रोड के क्रॉसिंग पर हमारी मॉडर्न बेकरी की जो होर्डिंग है, वो सुबह से उखड़ी पड़ी है। अभी सिर्फ दो हफ्ते हुए हैं लगे हुए। ऐसा क्यों होता है? पिछले हफ्ते कम्पटन लाइट्स का भी यही हुआ था।' कुछ पल रुककर, 'आने पर मुझे बताइएगा।' रिसीवर रख दिया।

'हूं...' पाइप का एक कश, 'यह बहुत ही नाजुक विशेषज्ञता का काम है। इसमें एक तरफ जहां लिट्रेचर, कल्चर, माइथालॉजी की जानकारी चाहिए, वहीं दूसरी तरफ करेंट एफेयर्स, साइकॉलॉजी...और क्या नहीं? आपको बहुत चौकस रहने की जरूरत है। क्योंकि आपको बैंगन के बीच से लेकर आइब्रो पेंसिल तक को फोकस करना होता है।...आइ रेयरली कम एक्रॉस दैट नेक।'

एयरकंडीशन की घर्र-घर्र...माथे पर पड़े बल...गहरे सोच का आभास देते।

आखिर निर्णयात्मक ढंग से वे आगे झुके और मेज पर कोहनियां टिका लीं, 'तजुर्बा बड़ी चीज है। लेकिन वो सब कुछ नहीं है। मैं नये लोगों को मौका देने में यकीन करता हूं। लेकिन हमें कुछ भरोसा भी होना चाहिए।' उन्होंने एक फाइल खोली और दो फोल्डर मेरी ओर बढ़ाए, 'एक नेशनल सीड्स कॉर्पोरेशन का फोल्डर है और दूसरा चांदछाप यूरिया का। हमारी टारगेट ऑडियंस किसान हैं, इसलिए जाहिर है

चीजों को संजीदगी से लेने की जरूरत नहीं है। यहां से निकलकर कॉफी हाउस में एक कप कॉफी पियूंगा। फिर मद्रास होटल के स्टॉप से तीन नंबर पकड़कर घर चला जाऊंगा।

चेहरे का निर्जीव भाव थोड़ा न्यूट्रलाइज करते हुए दरवाजा खोला और रॉ-सिल्क के भारी पर्दे के पार निकल गया। बाईं ओर के छोटे-से क्यूबिकल में पी० ए० टाइपराइटर पर चुस्ती से उंगलियां चलाते दिखाई दी। उसके दायें हाथ की उंगली में स्मोकी टोपाज और इटैलियन हेयरस्टाइल की एक झलक ही देख सका।

वैनेशियन ब्लाइंड वाली खिड़की के आगे बड़ी-सी मेज थी, जिस पर लैंप जल रहा था। पहली निगाह में केवल पाइप और बाइ-फोकल चश्मा ही दिखाई दिया।

छह कदम मेज तक पहुंचने में लगे, 'गुडमॉर्निंग…'

'गुडमॉर्निंग।' निगाह उठाकर क्षण भर भांपा, 'बैठिए।'

निःशब्द कुर्सी पर बैठा। हत्थों पर कोहनियां टेककर दोनों हाथों की उंगलियां एक-दूसरे से उलझा लीं। फिर लगा कि यह कुछ नर्वस-सी मुद्रा है। आखिर किसी तरह जरूरतमंद तो हूं नहीं। मैं तो सिर्फ एक चांस ले रहा हूं। मुझे आत्मविश्वासी और शिष्ट ढंग से तनिक लापरवाह-सा दिखाई देना चाहिए। उंगलियों की जकड़ खोली और हाथ जेबों में डाल लिए। फिर एक हाथ ऊपर उठाया और बालों पर हल्के से फिराया। पल भर को सोचा कि…

'हां तो…एडवरटाईजिंग में आपकी दिलचस्पी है?' मैनेजर ने लंबी सांस लेकर हलकी मुस्कान के साथ कहा।

'जी।'

उन्होंने एक दृष्टि फाइल में खुले मेरे प्रार्थनापत्र पर डाली, 'वैसे आपको कॉपीराईटिंग का कोई अनुभव तो नहीं है।'

'जी नहीं।'

उन्होंने पाइप का एक कश खींचा। कुछ रुके, 'अच्छा, यह कैसे हुआ कि आपकी फॉर्मल एजूकेशन कम रह गई?'

'इसके पीछे कुछ मनोवैज्ञानिक कारण है। मेरे मन में इम्तहान

के लिए बहुत डर बैठ गया था। मुझे लगता था कि मेरी नसें तीन घंटों मे सालभर के परिणाम को उगल देने का तनाव बर्दाश्त नहीं कर पाएंगी।'

वे जरा-सा मुस्कराए, 'लेकिन इस पेशे में तो हर कॉपी एक इम्तहान बनकर आती है।'

इंटरकॉम ने पल-भर का मौन तोड़ा।

'एक्सक्यूज मी।' उन्होंने रिसीवर लेकर सुना, 'कनेक्ट कर दीजिए।' कुछ क्षणों बाद कहा, 'हैलो मिस्टर बक्षी! क्या हाल है जनाब?' विराम, 'अच्छा, अभी ठीक करवाता हूं।' पल-भर रुककर कहा, 'मिस्टर सेठी से मिलाइए।' फिर कुछ क्षणों के बाद लहजा बदल-कर कहा, 'मिस्टर सेठी! पूसा रोड के क्रॉसिंग पर हमारी मॉडर्न बेकरी की जो होर्डिंग है, वो सुबह से उखड़ी पड़ी है। अभी सिर्फ दो हफ्ते हुए हैं लगे हुए। ऐसा क्यों होता है? पिछले हफ्ते क्राम्पटन लाइट्स का भी यही हुआ था।' कुछ पल रुककर, 'आने पर मुझे बताइएगा।' रिसीवर रख दिया।

'हूं...' पाइप का एक कश, 'यह बहुत ही नाजुक विशेषज्ञता का काम है। इसमें एक तरफ जहां लिट्रेचर, कल्चर, साइकालॉजी की जानकारी चाहिए, वहीं दूसरी तरफ करेंट एफेयर्स, साइकॉलॉजी...और क्या नहीं? आपको बहुत चौकस रहने की जरूरत है। क्योंकि आपको बेगन के बीच से लेकर आइब्रो पेंसिल तक को फोकस करना होता है।...आइ रेयरली कम एक्रॉस दैट नैक।'

एयरकंडीशन की घर्र-घर्र...माथे पर पड़े बल...गहरे सोच का आभास देते।

आखिर निर्णयात्मक ढंग से वे आगे झुके और मेज पर कोहनियां टिका लीं, 'तजुर्बा बड़ी चीज है। लेकिन वो सब कुछ नहीं है। मैं नये लोगों को मौका देने में यकीन करता हूं। लेकिन हमें कुछ भरोसा भी होना चाहिए।' उन्होंने एक फाइल खोली और दो फोल्डर मेरी ओर बढ़ाए, 'एक नेशनल सीड्स कॉर्पोरेशन का फोल्डर है और दूसरा चांदछाप यूरिया का। हमारी टारगेट ऑडियंस किसान हैं, इसलिए जाहिर है

चीजों को संजीदगी से लेने की जरूरत नहीं है। यहां से निकलकर कॉफी हाउस में एक कप कॉफी पियूंगा। फिर मद्रास होटल के स्टॉप से तीन नंबर पकड़कर घर चला जाऊंगा।

चेहरे का निर्जीव भाव थोड़ा न्यूट्रलाइज करते हुए दरवाजा खोला और रॉ-सिल्क के भारी पर्दे के पार निकल गया। बाईं ओर के छोटे-से क्यूबिकल में पी० ए० टाइपराइटर पर चुस्ती से उंगलियां चलाते दिखाई दी। उसके दायें हाथ की उंगली में स्मोकी टोपाज और इटैलियन हेयरस्टाइल की एक झलक ही देख सका।

वैनेशियन ब्लाइंड वाली खिड़की के आगे बड़ी-सी मेज थी, जिस पर लैंप जल रहा था। पहली निगाह में केवल पाइप और बाइ-फोकल चश्मा ही दिखाई दिया।

छह कदम मेज तक पहुंचने में लगे, 'गुडमॉनिंग···'

'गुडमॉनिंग।' निगाह उठाकर क्षण भर भांपा, 'बैठिए।'

निःशब्द कुर्सी पर बैठा। हत्थों पर कोहनियां टेककर दोनों हाथों की उंगलियां एक-दूसरे से उलझा लीं। फिर लगा कि यह कुछ नर्वस-सी मुद्रा है। आखिर किसी तरह जरूरतमंद तो हूं नहीं। मैं तो सिर्फ एक चांस ले रहा हूं। मुझे आत्मविश्वासी और शिष्ट ढंग से तनिक लापरवाह-सा दिखाई देना चाहिए। उंगलियों की जकड़ खोली और हाथ जेबों में डाल लिए। फिर एक हाथ ऊपर उठाया और बालों पर हल्के से फिराया। पल भर को सोचा कि···

'हां तो···एडवरटाईजिंग में आपकी दिलचस्पी है?' मैनेजर ने लंबी सांस लेकर हलकी मुस्कान के साथ कहा।

'जी।'

उन्होंने एक दृष्टि फाइल में खुले मेरे प्रार्थनापत्र पर डाली, 'वैसे आपको कॉपीराईटिंग का कोई अनुभव तो नहीं है।'

'जी नहीं।'

उन्होंने पाइप का एक कश खींचा। कुछ रुके, 'अच्छा, यह कैसे हुआ कि आपकी फॉर्मल एजुकेशन कम रह गई?'

'इसके पीछे कुछ मनोवैज्ञानिक कारण है। मेरे मन में इम्तहान

के लिए बहुत डर बैठ गया था। मुझे लगता था कि मेरी नसें तीन घंटों में सालभर के परिणाम को उगल देने का तनाव बर्दाश्त नहीं कर पाएंगी।'

वे जरा-सा मुस्कराए, 'लेकिन इस पेशे में तो हर कॉपी एक इम्तहान बनकर आती है।'

इंटरकॉम ने पल-भर का मौन तोड़ा।

'एक्सक्यूज मी।' उन्होंने रिसीवर लेकर सुना, 'कनैक्ट कर दीजिए।' कुछ क्षणों बाद कहा, 'हैलो मिस्टर बत्रा! क्या हाल है जनाब?' विराम, 'अच्छा, अभी ठीक करवाता हूं।' पल-भर रुककर कहा, 'मिस्टर सेठी से मिलाइए।' फिर कुछ क्षणों के बाद लहजा बदल-कर कहा, 'मिस्टर सेठी! पूना रोड के क्रॉसिंग पर हमारी मॉडर्न बेकरी की जो होर्डिंग है, वो सुबह से उखड़ी पड़ी है। अभी सिर्फ दो हफ्ते हुए हैं लगे हुए। ऐसा क्यों होता है? पिछले हफ्ते क्राम्पटन लाइट्स का भी यही हुआ था।' कुछ पल रुककर, 'आने पर मुझे बताइएगा।' रिसीवर रख दिया।

'हूं...' पाइप का एक कश, 'यह बहुत ही नाजुक विशेषज्ञता का काम है। इसमें एक तरफ जहां लिट्रेचर, कल्चर, माइथालॉजी की जानकारी चाहिए, वहीं दूसरी तरफ करेंट एफेयर्स, साइकॉलॉजी...और क्या नहीं? आपको बहुत चौकस रहने की जरूरत है। क्योंकि आपको बैंगन के बीच से लेकर आइब्रो पेंसिल तक को फोकस करना होता है।...आइ रेयरली कम एक्रॉस दैट नैक।'

एयरकंडीशन की घर्र-घर्र...माथे पर पड़े बल...गहरे सोच का आभास देते।

आखिर निर्णयात्मक ढंग से वे आगे झुके और मेज पर कोहनियां टिका लीं, 'तजुर्बा बड़ी चीज है। लेकिन वो सब कुछ नहीं है। मैं नये लोगों को मौका देने में यकीन करता हूं। लेकिन हमें कुछ भरोसा भी होना चाहिए।' उन्होंने एक फाइल खोली और दो फोल्डर मेरी ओर बढ़ाए, 'एक नेशनल सीड्स कॉर्पोरेशन का फोल्डर है और दूसरा चांदछाप यूरिया का। हमारी टारगेट ऑडियेंस किसान हैं, इसलिए जाहिर है

रा मैटीरियल सीधे हिंदी में ही तैयार होगा —अखबारों-पत्रिकाओं
हार भी और गांव-गांव में चिपकाए जाने वाले पोस्टर भी।'
सरसरी निगाह से दोनों पोस्टर देखे।
'कॉपी ऐसी हो कि हमारा किसान के साथ फौरन रैप्पर्ट बन सके,
निकेशन सीधा और एकदम हो। इसके लिए क्या हो सकता है ?…
आप किसान से उसी की भाषा में बात करें—उसी की कहानियां,
के जाने-पहचाने कैरेक्टर्स, इमेजेज, सिंबल्स…' दायें से बायें हाथ में
श लेते हुए हलकी मुस्कान, 'मैं कॉपीराइटर नहीं हूं। बस, आपको
झाव दे सकता हूं कि अगर आप फोक-लोर वाला एंगिल अपनाएं, तो
ायद वह असर पैदा हो सके, जो हम चाहते हैं।' विचारपूर्ण ढंग से
फिर एक कश, 'एक बात मैं और कह दूं। पोस्टर के लिए कॉपी बहुत
छोटी होनी चाहिए, यही दो-तीन लाइनें। फॉर्म मैं आपके ऊपर छोड़ता
हूं। आप जैसा भी ठीक समझें।'

प्रश्नभरी दृष्टि के सामने हामी में सिर हिलाया।

'तो कल आप मुझे कुछ नमूने दिखा सकते हैं ?

'जी।'

'मैं आपको ज्यादा से ज्यादा वक्त देना चाहूंगा।' उन्होंने अपॉइंट-
ट का एक पन्ना पलटा, 'लंच के बाद…तीन बजे ठीक है ?'

'जी।'

पलभर की चुप्पी के बाद उठ खड़ा हुआ।

'ओक्के…' उन्होंने मुस्कान के साथ हाथ आगे बढ़ाया, 'बेस्ट ऑफ
लक…।'

कॉफी हाउस के भीतरी हिस्से में। शोर फिर भी था। और कांच
के पार धूप की तेज चमक का अहसास…

आसपास बातचीत की भनभनाहट थी।

कॉफी के घूंटों के साथ दोनों फोल्डर पढ़ लिए। एक बार। द
बार।

एक सिगरेट सुलगाई। पहला कश छोड़ते हुए एक गहरी सांस

निकला।

एन० एम० सी० के बाज—बैनर, बिल्ला और सोना और बांदछाप यूरिया। ये दोनों चीजें जिंदगी में कभी नहीं देखीं। इनसे मेरा कोई मतलब नहीं। पास से गांव नहीं देखा। नजदीक से किसान को नहीं जानता! लेकिन अब इन सबसे जुड़ा हूं। ये चीज बिकवाने में मदद करनी है। यह खाद निकलवानी है।

भारत एक कृषिप्रधान देश है। भारतमाता गांवों में रहती है। और एरियल सर्वे के समान सामने झिलमिला गए। छोटे-बड़े खेत—फसल से लहलहाते, हल चलाता किसान, रहट से गिरती पानी की धारा, अमराई में कूकती कोयल, सांझ-ढले सिवान पर धूल उड़ाते गायों के झुंड की वापसी, चौपाल पर अलाव के आसपास कजरी व बिरहा की तानें…।

और सब पर सुपरइंपोज होता यूरिया का चांदछाप एम्बलेम।

ग्यारह बजे बिस्तर पर आया। तकिये पर पीठ टेक, क्लिपबोर्ड पास रखे बैठा रहा। पैंपलेट कई बार पढ़ लिए थे। तीन-चार चीजों का पहला ड्राफ्ट लिख लिया था। कुछ विचार स्पष्ट होने लगे थे, पर तनाव था। मन में कहीं हिचकिचाहट थी, कुछ अनिश्चय था कि होने को हो तो रहा है, पर कुछ होगा नहीं। करने को कर तो रहा हूं, पर कुछ कर नहीं पाऊंगा। और साथ ही नसों पर दबाव कि यह बहुत अच्छा अवसर है। अगर हाथ से निकल गया, तो…

'तो ?' जोर से कहा। और कानियों की गूंज महसूस करते हुए आसपास देखा—वे दीवारें, ऊपर सरसराता हुआ पंखा, सामने चिर-परिचित कैलेंडर…।

'सब कुछ ऐसा ही रहेगा ?'

यकायक आंख खुल गई।

क्षण भर को सब कुछ धुंधला, अबूझ। फिर धीरे-धीरे चेतना की सतह पर उभरा और हथौड़े की चोट के समान पाइप के कनेक्शन के

क सारा मैटीरियल सीधे हिंदी में ही तैयार होगा —अखबारों-पत्रिकाओं
क इश्तहार भी और गांव-गांव में चिपकाए जाने वाले पोस्टर भी।'

सरसरी निगाह से दोनों पोस्टर देखे।

'कॉपी ऐसी हो कि हमारा किसान के साथ फौरन रैप्पर्ट बन सके, कम्यूनिकेशन सीधा और एकदम हो। इसके लिए क्या हो सकता है?… कि आप किसान से उसी की भाषा में बात करें—उसी की कहानियां, उसके जाने-पहचाने कैरेक्टर्स, इमेजेज, सिंबल्स…' दायें से बायें हाथ में पाइप लेते हुए हलकी मुस्कान, 'मैं कॉपीराइटर नहीं हूं। बस, आपको सुझाव दे सकता हूं कि अगर आप फोक-लोर वाला एंगिल अपनाएं, तो शायद वह असर पैदा हो सके, जो हम चाहते हैं।' विचारपूर्ण ढंग से फिर एक कश, 'एक बात मैं और कह दूं। पोस्टर के लिए कॉपी बहुत छोटी होनी चाहिए, यही दो-तीन लाइनें। फॉर्म मैं आपके ऊपर छोड़ता हूं। आप जैसा भी ठीक समझें।'

प्रश्नभरी दृष्टि के सामने हामी में सिर हिलाया।

ो कल आप मुझे कुछ नमूने दिखा सकते हैं?

जी।'

'मैं आपको ज्यादा से ज्यादा वक्त देना चाहूंगा।' उन्होंने अपॉइं
का एक पन्ना पलटा, 'लंच के बाद…तीन बजे ठीक है?'

'जी।'

पलभर की चुप्पी के बाद उठ खड़ा हुआ।

'ओक्के…' उन्होंने मुस्कान के साथ हाथ आगे बढ़ाया, 'बेस्ट
क…।'

कॉफी हाउस के भीतरी हिस्से में। शोर फिर भी था। औ
के पार धूप की तेज चमक का अहसास…

आसपास बातचीत की भनभनाहट थी।

कॉफी के घूंटों के साथ दोनों फोल्डर पढ़ लिए। एक
बार।

एक सिगरेट सुलगाई। पहला कश छोड़ते हुए एक गह

निकली।

एन० एस० सी० के बाज—अंबर, विक्रम और सोना और चांदछाप यूरिया। ये दोनों चीजें जिंदगी में कभी नहीं देखीं। इनसे मेरा कोई मतलब नहीं। पास से गांव नहीं देखा। नजदीक से किसान को नहीं जानता! लेकिन अब इन सबसे जुड़ा हूं। ये चीज बिकवाने में मदद करनी है। यह खाद निकलवानी है।

भारत एक कृषिप्रधान देश है। भारतमाता गावों में रहती है। और एरियल सर्वे के समान सामने झिलमिला गए। छोटे-बड़े खेत—फसल से लहलहाते, हल चलाता किसान, रहट से गिरती पानी की धारा, अमराई में कूकती कोयल, सांझ-ढले सिवान पर धूल उड़ाते गायों के झुंड की वापसी, चौपाल पर अलाव के आसपास कजरी व बिरहा की तानें···।

और सब पर सुपरइंपोज होता यूरिया का चांदछाप एम्ब्लेम।

ग्यारह बजे बिस्तर पर आया। तकिये पर पीठ टेक, क्लिपबोर्ड पास रखे बैठा रहा। पैंफलेट कई बार पढ़ लिए थे। तीन-चार चीजों का पहला ड्राफ्ट लिख लिया था। कुछ विचार स्पष्ट होने लगे थे, पर तनाव था। मन में कहीं हिचकिचाहट थी, कुछ अनिश्चय था कि होने को हो तो रहा है, पर कुछ होगा नहीं। करने को कर तो रहा हूं, पर कुछ कर नहीं पाऊंगा। और साथ ही नसों पर दबाव कि यह बहुत अच्छा अवसर है। अगर हाथ से निकल गया, तो···

'तो?' जोर से कहा। और ध्वनियों की गूंज महसूस करते हुए आसपास देखा—वे दीवारें, ऊपर सरसराता हुआ पंखा, सामने चिर-परिचित कैलेंडर···।

'सब कुछ ऐसा ही रहेगा?'

यकायक आंख खुल गई।

क्षण भर को सब कुछ धुंधला, अबूझ। फिर धीरे-धीरे चेतना की सतह पर उभरा और हथौड़े की चोट के समान पाइप के क्लोजअप के

कि सारा मैटीरियल सीधे हिंदी में ही तैयार होगा —अखबारों-पत्रिकाओं के इश्तहार भी और गांव-गांव में चिपकाए जाने वाले पोस्टर भी।'

सरसरी निगाह से दोनों पोस्टर देखे।

'कॉपी ऐसी हो कि हमारा किसान के साथ फौरन रैप्पर्ट बन सके, कम्यूनिकेशन सीधा और एकदम हो। इसके लिए क्या हो सकता है ?··· कि आप किसान से उसी की भाषा में बात करें—उसी की कहानियां, उसके जाने-पहचाने कैरेक्टर्स, इमेजेज, सिंबल्स···' दायें से बायें हाथ में पाइप लेते हुए हलकी मुस्कान, 'मैं कॉपीराइटर नहीं हूं। बस, आपको सुझाव दे सकता हूं कि अगर आप फोक-लोर वाला एंगिल अपनाएं, तो शायद वह असर पैदा हो सके, जो हम चाहते हैं।' विचारपूर्ण ढंग से फिर एक कश, 'एक बात मैं और कह दूं। पोस्टर के लिए कॉपी बहुत छोटी होनी चाहिए, यही दो-तीन लाइनें। फॉर्म मैं आपके ऊपर छोड़ता हूं। आप जैसा भी ठीक समझें।'

प्रश्नभरी दृष्टि के सामने हामी में सिर हिलाया।

'तो कल आप मुझे कुछ नमूने दिखा सकते हैं ?

'जी।'

'मैं आपको ज्यादा से ज्यादा वक्त देना चाहूंगा।' उन्होंने अपॉइंटमेंट का एक पन्ना पलटा, 'लंच के बाद···तीन बजे ठीक है ?'

'जी।'

पलभर की चुप्पी के बाद उठ खड़ा हुआ।

'ओक्के···' उन्होंने मुस्कान के साथ हाथ आगे बढ़ाया, 'बेस्ट ऑफ लक···।'

कॉफी हाउस के भीतरी हिस्से में। शोर फिर भी था। और कांच के पार धूप की तेज चमक का अहसास···

आसपास बातचीत की भनभनाहट थी।

कॉफी के घूंटों के साथ दोनों फोल्डर पढ़ लिए। एक बार। दो बार।

एक सिगरेट सुलगाई। पहला कश छोड़ते हुए एक गहरी सांस भी

निकली।

एन० एस० सी० के बाज—बंवर, विक्रम और सोना और चांदछाप यूरिया। ये दोनों चीजें जिंदगी में कभी नहीं देखी। इनसे मेरा कोई मतलब नहीं। पास से गांव नहीं देखा। नजदीक से किसान को नहीं जानता! लेकिन अब इन सबसे जुड़ा हूं। ये चीज बिकवाने में मदद करनी है। यह खाद निकलवानी है।

भारत एक कृषिप्रधान देश है। भारतमाता गांवों में रहती है। और एरियल सर्वे के समान सामने झिलमिला गए। छोटे-बड़े खेत—फसल से लहलहाते, हल चलाता किसान, रहट से गिरती पानी की धारा, अमराई में कूकती कोयल, सांझ-ढले सिवान पर धूल उड़ाते गायों के झुंड की वापसी, चौपाल पर अलाव के आसपास कजरी व बिरहा की तानें…।

और सब पर सुपरइंपोज होता यूरिया का चांदछाप एम्बलेम।

ग्यारह बजे बिस्तर पर आया। तकिये पर पीठ टेक, क्लैपबोर्ड पास रखे बैठा रहा। पैंपलेट कई बार पढ़ लिए थे। तीन-चार चीजों का पहला ड्राफ्ट लिख लिया था। कुछ विचार स्पष्ट होने लगे थे, पर तनाव था। मन में कहीं हिचकिचाहट थी, कुछ अनिश्चय था कि होने को हो तो रहा है, पर कुछ होगा नहीं। करने को कर तो रहा हूं, पर कुछ कर नहीं पाऊंगा। और साथ ही नसों पर दबाव कि यह बहुत अच्छा अवसर है। अगर हाथ से निकल गया, तो…

'तो ?' जोर से कहा। और ध्वनियों की गूंज महसूस करते हुए आसपास देखा—वे दीवारें, ऊपर सरसराता हुआ पंखा, सामने चिर-परिचित कैलेंडर…।

'सब कुछ ऐसा ही रहेगा ?'

यकायक आंख खुल गई।

क्षण भर को सब कुछ धुंधला, अबूझ। फिर धीरे-धीरे चेतना की सतह पर उभरा और हथौड़े की चोट के समान पाइप के क्लोजअप के

कि सारा मैटीरियल सीधे हिंदी में ही तैयार होगा —अखबारों-पत्रिकाओं के इश्तहार भी और गांव-गांव में चिपकाए जाने वाले पोस्टर भी।'

सरसरी निगाह से दोनों पोस्टर देखे।

'कॉपी ऐसी हो कि हमारा किसान के साथ फौरन रैप्पर्ट बन सके, कम्यूनिकेशन सीधा और एकदम हो। इसके लिए क्या हो सकता है?··· कि आप किसान से उसी की भाषा में बात करें—उसी की कहानियां, उसके जाने-पहचाने कैरेक्टर्स, इमेजेज, सिंबल्स···' दायें से बायें हाथ में पाइप लेते हुए हलकी मुस्कान, 'मैं कॉपीराइटर नहीं हूं। बस, आपको सुझाव दे सकता हूं कि अगर आप फोक-लोर वाला एंगिल अपनाएं, तो शायद वह असर पैदा हो सके, जो हम चाहते हैं।' विचारपूर्ण ढंग से फिर एक कश, 'एक बात मैं और कह दूं। पोस्टर के लिए कॉपी बहुत छोटी होनी चाहिए, यही दो-तीन लाइनें। फॉर्म मैं आपके ऊपर छोड़ता हूं। आप जैसा भी ठीक समझें।'

प्रश्नभरी दृष्टि के सामने हामी में सिर हिलाया।

'तो कल आप मुझे कुछ नमूने दिखा सकते हैं?

'जी।'

'मैं आपको ज्यादा से ज्यादा वक्त देना चाहूंगा।' उन्होंने अपॉइंटमेंट का एक पन्ना पलटा, 'लंच के बाद···तीन बजे ठीक है?'

'जी।'

पलभर की चुप्पी के बाद उठ खड़ा हुआ।

'ओक्के···' उन्होंने मुस्कान के साथ हाथ आगे बढ़ाया, 'बेस्ट ऑफ लक···।'

कॉफी हाउस के भीतरी हिस्से में। शोर फिर भी था। और कांच के पार धूप की तेज चमक का अहसास···

आसपास बातचीत की भनभनाहट थी।

कॉफी के घूंटों के साथ दोनों फोल्डर पढ़ लिए। एक बार। दो बार।

एक सिगरेट सुलगाई। पहला कश छोड़ते हुए एक गहरी सांस भी

निकली।

एन० एम० सी० के बाज—बंबर, विक्रम और सोना और चांदछाप यूरिया। ये दोनों चीजें जिंदगी में कभी नहीं देखीं। इनसे मेरा कोई मतलब नहीं। पास से गांव नहीं देखा। नजदीक से किसान को नहीं जानता! लेकिन अब इन सबसे जुड़ा हूं। ये चीजें बिकवाने में मदद करनी है। यह खाद निकलवानी है।

भारत एक कृषिप्रधान देश है। भारतमाता गांवों में रहती है। और एरियल सर्वे के समान सामने झिलमिला गए। छोटे-बड़े खेत—फसल से लहलहाते, हल चलाता किसान, रहट से गिरती पानी की धारा, अमराई में कूकती कोयल, सांझ-ढले सिवान पर धूल उड़ाते गायों के झुंड की वापसी, चौपाल पर अलाव के आसपास कजरी व बिरहा की तानें…।

और सब पर सुपरइंपोज होता यूरिया का चांदछाप एम्बलेम।

ग्यारह बजे बिस्तर पर आया। तकिये पर पीठ टेक, क्लेपबोर्ड पास रखे बैठा रहा। पंफलेट कई बार पढ़ लिए थे। तीन-चार चीजों का पहला ड्राफ्ट लिख लिया था। कुछ विचार स्पष्ट होने लगे थे, पर तनाव था। मन में कहीं हिचकिचाहट थी, कुछ अनिश्चय था कि होने को हो तो रहा है, पर कुछ होगा नहीं। करने को कर तो रहा हूं, पर कुछ कर नहीं पाऊंगा। और साथ ही नसों पर दबाव कि यह बहुत अच्छा अवसर है। अगर हाथ से निकल गया, तो…

'तो ?' जोर से कहा। और ध्वनियों की गूंज महसूस करते हुए आसपास देखा—वे दीवारें, ऊपर सरसराता हुआ पंखा, सामने चिर-परिचित कैलेंडर…।

'सब कुछ ऐसा ही रहेगा ?'

यकायक आंख खुल गई।

क्षण भर को सब कुछ धुंधला, अबूझ। फिर धीरे-धीरे चेतना की सतह पर उभरा और हथौड़े की चोट के समान पाइप के क्लोजअप के

साथ याद आया—तीन बजे···।

लैंप जलाकर घड़ी देखी—दो-पच्चीस। फिर स्विच दबाया और आंखें बंद कीं। पलकें यों भारी-सी लगीं, जैसे उन पर गर्म मोम की तह जमी हो। पलभर के लिए उन सभी बातों की स्मृतियों का उलझा विस्तार चाबियों के भारी गुच्छे की तरह झनझनाया, जो बिस्तर पर जाने के बाद से लेकर अब तक चाहे-अनचाहे मन के रडार पर कूकती रही थीं।

उठा, पैकेट व माचिस हाथ में लिया और चप्पलों में पांव डालता हुआ बाहर निकल आया। पोर्च की सीढ़ियां उतरते ही ठंडी हवा का एक झोंका बिल्कुल मुंह पर आकर लगा। आंखों की मलिन-सी तंद्रा भी तत्क्षण घुल गई, जैसे मुंह पर ठंडे पानी के छींटें मार लिए हों।

चप्पलों के पार घास का स्पर्श सर्द था। एक पैर निकालकर नीचे टिकाया, तो ठंडक की एक लहर बदन में दौड़ गई। आसमान साफ था। चांद का छोटा-सा टुकड़ा। और सन्नाटा। आधी रात का अपना सन्नाटा। कभी-कभी इक्का-दुक्का हॉर्न से टूटता था—मद्धिम और तनिक थरथराती, सहमी-सी हॉर्न की पैनी लकीर। जैसे अपराध-भावना के साथ मौन का मर्म वेध रही हो। और पौदों की महक के साथ आधी रात के साथ जुड़ी तमाम आहटें। कहीं किसी परिंदे की चीख, कहीं पत्तों की खड़खड़ाहट, कहीं किसी कीड़े की झंकार, कहीं कुछ खुलना या टूटना। गहरी हो चुकी रात की ध्वनियां, जिनके होने की जगह या वजह मालूम नहीं होती, लेकिन जो होती हैं।

दो तीलियों के बाद सिगरेट जली। रात के खाने और सुबह की चाय के बीच इस कश का अजीब-सा स्वाद था। यह न तो रात की थकान से जुड़ा था और न सुबह की स्फूर्ति से।···कसैला, उबासियों की गंध में डूबा।

पलभर को सामने पाइप का क्लोजअप आया—ऊपरी गोलाई से उठती धुएं की लकीर···।

सुबह उठा, तो सिर भारी था। आईने के आगे आया, तो आंखें लाल।

गुसलखाने में पहुंचा और टॅप के नीचे सिर रख दिया। ये कौन सोचता है कि सिजदा कुबूल हो, ये कौन देखता है जहां सर झुका दिया···

···ठंडे पानी की छुअन। नसों के उत्ताप को थपकती, उसे सहलाती, भीतर की जकड़न धीरे-धीरे नम होती, खुलती···।

चाय के तीन-चार घूंट भरे। बालपेन लिया, और कागज के हाशिये पर विचारपूर्ण ढंग से फूल-पत्तियां बनाने लगा।

तीसरी गांठ

जब भी रामू बाहर जाता है, तो लाई जाने वाली चीजों को याद रखने के लिए अपने कंधे पर पड़े अंगोछे में उतनी ही गांठें लगा लेता है। आज उसने तीन गांठें लगाई हैं: पहली, धनिया के वास्ते माथे की बिंदी के लिए; दूसरी, गुड़ की सफेद भेली के लिए; और तीसरी, एन० एस० सी० के मक्का बीज, सोना के लिए!

तब बोली इक्कीसवीं पुतली

राजा विक्रमादित्य के राजसिंहासन पर बैठने के लिए भोज बढ़ा ही था कि सिंहासन में जुड़ी हुई इक्कीसवीं पुतली बोल उठी, 'नहीं, तुम सिंहासन पर नहीं बैठ सकते, क्योंकि तुम किसानों को विक्रम के जैसा खुशहाल नहीं बना सके।'

'विक्रम ने ऐसा कैसे किया था?' भोज ने पूछा।

'वह एक-एक किसान को बढ़िया बीज बांटता था।'

उसी राजा की याद में—एन० एस० सी० का मक्का बीज—विक्रम!

भोला की गलती गलती नहीं मानी गई

रामू किसान का बेटा भोला गांव की पाठशाला में दर्जा चार में पढ़ता है। एक दिन उसने कुछ शब्दों के ये अर्थ लिखे:

वृक्ष=पेड़
कोकिल=कोयल

कुंभ=घड़ा
अंबर=बीज

एन० एस० सी० का मक्का बीज—अंबर।

करते हैं सब तीरथ-यात्रा, रामू को इससे क्या काम।
पद्मा, सोना, विक्रम, अंबर—ये हैं उसके चारों धाम॥

कबिरा संगत साधु की करते लोग सुजान।
एन० एस० सी० का बीज ज्यों रखते चतुर किसान॥

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
एन० एस० सी० सा बीज नहिं, दुनिया करती जाप॥

ना होवे तो दुख बड़ा, हो तो सब जांय रीझ।
क्यों सखि, अपना साजना? ना, एन० एस० सी० बीज॥

तुलसी जा संसार में उत्तम खेती तब।
चांदछाप की खाद का नाम सुमरिनी जब॥

ठीक तीन बजे से एडवरटाइजिंग का दरवाजा खोला और हलके कदमों से काउंटर के सामने जा खड़ा हुआ। रिसैप्शनिस्ट ने नजर उठाई। लाल स्कीवी। सफेद बैलबॉट्स। हलकी मुस्कान से अभ्यर्थना में सिर हिलाया, 'मेरा अपॉइंटमेंट है।'

'हां, आप जाइए। वे आपका इंतजार कर रहे हैं।'

फिर वही भीतरी दरवाजा। पैसेज। कमरों की कतार। नंबर पांच में घुसने पर देखा कि मैनेजर कुछ डिक्टेट कर रहे थे और पी० ए० सामने की कुर्सी पर हाथ में पेंसिल लिए बैठी थी। उसी तरह अभ्यर्थना में सिर हिलाया। उन्होंने उसी प्रकार सामने की कुर्सी की ओर संकेत किया।

'आपकी विज्ञापन-सामग्री मैंने ध्यान से देखी। आपके पोस्टर आकर्षक हैं, लेकिन स्लोगन कुछ अस्पष्ट और अनिश्चित रह गए हैं। उन्हें छोटा और कैची होना चाहिए और स्वभावतः विजुअल के साथ

उनका गहरा अंतर्संबंध अनिवार्य है। इस संदर्भ में हम कुछ नमूने संलग्न कर रहे हैं, जिनसे बात और स्पष्ट हो सकेगी।'' धन्यवादसहित''' आपका'''दैट्स आल'''थैंक्यू'''।

लिफाफा सामने रखा। लिफाफे से कागज निकाले और तहें खोलकर मेज पर खिसका दिए।

पी० ए० के उठ जाने पर उन्होंने एक तीली जलाई, पाइप की तंबाकू को लौ दिखाई और एक-दो लंबे कश खींचे। उन्होंने एक कागज उठाकर ऊपर से कुछ पढ़ा, 'हूं''' सतर्क दृष्टि बीच तक आती गई, 'दैट्स इंटरेस्टिंग''' फिर पाइप का कश।

और उसी क्षण मुझे लगा कि क्या होगा। सांत्वना और आश्वासन के कुछ शब्द। भविष्य में कुछ करने का झूठा प्रतीत होता वादा। मेरे सामने चौबीस घंटों का तनाव और जद्दोजेहद घूम गई। कल इस समय दफ्तर से निकलते हुए मुझमें चुनौती का सामना करने का उत्साह था, अपनी परख में सही उतरने का संकल्प, पर कुछ पलों बाद मैं फिर उसी दरवाजे से निकल रहा होऊंगा, फिर उसी तरह किसी-न-किसी प्रकार खाली समय को भरने के दबाव के साथ। मुझे लगा कि मैं निराश हो रहा हूं। क्षण भर को अपने पर वितृष्णा भी हुई कि मैं अभी तक आशा-निराशा जैसी टुच्ची चीजों के साथ बंधा हुआ हूं।

बाहर का बजर बजा। चपरासी तुरंत अंदर आया।

'कॉफी।'

यहां से निकलकर कहां जाऊंगा? कलाई तनिक मोड़कर समय देखा। अभी मैटिनी तो मिल सकता है, पर याद नहीं आया कि आस-पास कौन-सी फिल्में चल रही हैं। सोचा कि बाहर निकलकर कहीं अखबार देख लूंगा। फिल्म। फिर जनपथ का एक चक्कर। फिर भी घर जाने का मन न हुआ, तो मोहनसिंह प्लेस के कॉफी हाउस में थोड़ी देर बैठ जाऊंगा।

चपरासी ने मेरे सामने रबर की मैटिंग खिसकाई। फिर कप रख दिया। छोटा-सा। खूबसूरत। नीचे कम, ऊपर ज्यादा चौड़ा। ऊपरी गोलाई पर तीन सुनहरी लकीरें।

उन्होंने कप उठाया और एक घूंट भरा। पन्ना पलटा और ऊपरी पंक्तियां पढ़ते हुए जरा-सा मुस्कराए।

यह तनाव-भरा मौन असह्य हो उठा। लगा कि अपने सामने ही होने वाला अपना यह परीक्षण सह नहीं पाऊंगा। स्वयं को संभालने की कोशिश में एकटक पीछे लगे कैलेंडर को देखा, जहां इस महीने की तीन तारीखों के गिर्द लाल घेरा था। इस गोलाकार लकीर ने हमेशा की तरह जिज्ञासा जगाई। इस विशेष दिन क्या होगा? अनाथालय में पल रहे अपने अवैध बच्चे से मिलना है? या प्रेमिका से? या विज्ञापन के सिलसिले में स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन के पी० आर० ओ० से अपॉइंटमेंट है? दूसरे की व्यक्तिगत जिंदगी के बारे में अंधे अनुमान लगाने का जो कुत्सित आनंद होता है, उसने पल भर के लिए उद्वेगभरे विक्षोभ को धो दिया। शायद किसी के पास इनकी पत्नी के प्रेम-पत्र हैं और इस दिन पुराने किले के मुख्य द्वार के निकट के एकांत में इन्हें उसे पांच हजार रुपये देने हैं। उजले शाम के धुंधलके में बाइफोकल चश्मे से इधर-उधर चौकन्नी निगाह दौड़ाते हुए मैनेजर का चित्र सामने आ गया और लगा कि चेहरे पर एक नामालूम-सी मुस्कान आ गई है···

'आपका काम मुझे बहुत पसंद आया।'

उनकी आवाज से ध्यान टूटा। वे पाइप का कश खींचते हुए हलकी मुस्कान से मेरी ओर देख रहे थे, 'इन कॉपियों में इधर-उधर कुछ रिटचिंग की जरूरत है। लेकिन जो बुनियादी एप्रोच है, वह सही और संतोष देने वाली है।' विचारलीन मुद्रा में धुआं बाहर निकाला, 'आपको थोड़ा प्रैक्टिकल तजुर्बा हो जाए और विजुलाइजर के साथ आपका ठीक कोऑर्डीनेशन बैठ जाए, तो इस टीम के नतीजे बहुत अच्छे हो सकते हैं।' वे कुछ पल सोचते रहे। फिर इंटरकॉम में कहा, 'मिस्टर राजवंश! जरा आइए।'

हाथों में हलकी कंपकंपाहट महसूस हुई। उन्हें जांघों के नीचे दबा लिया···लगा कि माथे पर पसीने की बहुत बारीक-सी परत उभर आई है···एक हाथ उठाया और हलके से उसे पोंछ लिया।

चपरासी आया और खाली कप उठा ले गया।

फिर पीछे आहट सुनाई दी और एक व्यक्ति मेज के निकट टिका।

'मिस्टर राजवंश ! हमारे चीफ आर्टिस्ट !' मैनेजर ने हलके स्मित से संकेत किया, 'आप मिस्टर गुनजन !'

उठकर हाथ मिलाया।

'जरा ये कॉपी देखिए। इसके साथ का इलस्ट्रेशन कैसा होगा ?' मैनेजर ने एक कागज की ओर संकेत किया।

राजवंश ने मेरे बगल में बैठकर सरसरी निगाह से कॉपी पढ़ी। हलकी मुस्कान से एक बार मेरी ओर देखा और फिर मैनेजर की ओर, 'बढ़िया है।' दृष्टि में बहुत सूक्ष्म-सा संकेत लगा, मैनेजर की स्वीकृति पर अपनी सनद लगाता हुआ।

उन्होंने हाथ के स्कैचपेन को हलके-हलके मेज पर ठकठकाया। विचारपूर्ण स्वर में कहा, 'मेरे खयाल में सेहरे और फूलमालाओं वाले दूल्हा-दुल्हिन बनाए जा सकते हैं। पीछे मुस्कराता हुआ किसान···और कॉपी की लिखावट पुरानी पोथियों के ढंग की···जुमले के खत्म होने पर दो पूर्ण विराम···

'जरा ट्राई कीजिए।'

राजवंश कागज लेकर उठ खड़े हुए।

पीछे दरवाजा बंद होने की बहुत हलकी आहट हुई।

कुछ पल चुप्पी रही। मैनेजर ने दराज से एक फाइल निकाली। पन्ने पलटे जाने की सरसराहट सुनाई दी, 'आपने एक्सपैंडेड मेमरी नहीं लिखी।' मैनेजर के चेहरे पर हलकी-सी मुस्कान थी।

विषय की सीप जैसे कमरे में फैल गई। चुप्पी के तानों-बानों के साथ गुंथने लगी।

मुझे लगा कि मेरा चेहरा लाल होने लगा है। मैंने जांघों के बोझ-तले मुक्त हथेली रखी और जोर डालते हुए अपनी थरथराहट दबाने की कोशिश की। मुझे बदलना है, अभी, इसी घड़ी में···मैंने भीतर ही भीतर अपने से लड़ते हुए कुछ भी कहने से स्वयं को रोका।

'आपके टर्म्स क्या हैं ?'

मैं कुछ पल सोचता रहा, 'आप क्या दे सकते हैं ?'

उन्होंने पाइप का एक कश लिया। क्षण भर मेरी ओर देखा। फिर पीछे दीवार का पोस्टर देखने लगे। तनिक ठहरकर कहा, 'पांच सौ···'

'कम हैं।' मैं छूटते ही बोला और दूसरे हाथ को भी जांघ के नीचे दबा लिया।

मौन जैसे क्षण भर को निस्पंद हो उठा।

'आप अकेले ही हैं या परिवार भी···?'

'परिवार है।' कहने से पहले तनिक भी झिझक नहीं हुई और सैकिंड के हजारवें हिस्से का विराम भी नहीं आया। बस, पल भर के लिए दिल की एकरस धड़कन लड़खड़ाई, पर एक ही पल के लिए। उसके बाद फिर वही एकताल—एक-दो, एक-दो, एक···

'पचास और बढ़ा लीजिए।' वे बोले और विवशता से मुस्कराए, 'हैड ऑफिस से इतना ही सैंक्शन हुआ है। अगर आपको स्वीकार हो, तो मैं नियुक्ति-पत्र तैयार करवाऊं?'

मैंने हत्थों पर दोनों कुहनियां टिकाईं और पंजे आपस में उलझा लिए। गहरी सांस लेकर कहा, 'ठीक है।'

'आप कब से जॉइन कर सकते हैं?'

'जब आप कहें।'

'हम तो चाहेंगे कि आप जल्दी से जल्दी आ जाएं।'

'कल से?'

'बेशक···'

'ठीक है।'

वे जरा ठिठके, 'नियमों के अनुसार एक साल के लिए आप प्रोवेशन पर रहेंगे। फिर पी० एफ०, बोनस, ग्रेच्युटी वगैरह के सभी बैनिफिट···'

आकाशदीप से बाहर निकला, तो सवा चार बजने को थे। आउटर सर्किल से दाईं ओर घूमकर एम ब्लाक में आ गया। मोड़ पर एक सिगरेट ली। सुलगाई। और आहिस्ता-आहिस्ता धुआं उड़ाता हुआ भीतरी सर्किल की ओर बढ़ा। कॉरीडोर से उतरकर सड़क पर आते

हुए अचानक प्लाजा के सामने ठिठक गया। करेंट बुकिंग पर मलकें अभी भी प्रतीक्षारत था। अंदर बोर्ड पर देखा कि फोचर फिल्म दो-तीन मिनट बाद शुरू होनी थी। पर यकायक ही जैसे हमेशा अंदर घुसने का मन हो आया था, उसी तरह यकायक ही अंदर घुसने का मन नहीं हुआ। जिस दबाव के कारण अवश हो भीतर आश्रय लिया करता था, उसके बोझ का आभास नहीं पाया।

आखिरी कश लेकर सिगरेट जूते-तले दबा दी और रेडियल रोड पार करके नोवेल्टी के सामने निकल आया। दाईं तरफ ट्रांसलाइट का खंभा धूप में चमक रहा था। क्षितिज के इस कोने से उस छोर तक नीले आकाश के विस्तार में धूप की हलकी चकचौंध भरी थी। आसपास का कोलाहल और लोगों की अनवरत आवाजाही···कल से मैं भी व्यस्त हो जाऊंगा। मेरा खालीपन भी एक कसी हुई दिनचर्या में तनने लगेगा। क्षण भर के लिए सिहरन-सी हुई। समझ नहीं आया कि यह रोमांच है या आशंका।

लेकिन अभी यह सब नहीं सोचना है, स्वयं से ही कहा। दूसरी सिगरेट जलाई और एफ ब्लाक के कॉरीडोर में आ गया। छोटे कदम। शो-केसों पर उड़ती निगाह, 'तो आखिरकार तुमने अपने-आपको प्रमाणित कर दिया।' संतोष की एक सांस के साथ एकालाप शुरू हो गया, 'हीनता और आत्मभर्त्सना के जिस दलदल में तुम फंसते जा रहे थे, उनसे बचने के लिए एक मजबूत कमंद तुम्हारी ओर फेंक दी गई है।' एक हाथ जेब में डाला और कागज का चिकनापन महसूस किया। अब तुम्हारे पैरों के नीचे ठोस जमीन है। अब उस खौफनाक, दमघोंटू शिकंजों के कगार तुम्हें जीवन और मृत्यु की उस संधिरेखा पर नहीं ले जाएंगे, जहां···

यकायक महसूस किया कि पलकों की कोरों में कुछ अवश-सी नमी भर गई है। रूमाल निकालकर आंखों से छुआया !···नहीं, कुछ भी नहीं था।

कहा कुछ नहीं। बस, नियुक्ति-पत्र बिंदो के सामने रख दिया।

'गुल्लू...' उसने रुंधे-से स्वर में कहा, एकटक इस ओर देखते ए। और मेरा दायां हाथ अपने दोनों हाथों में भींच लिया।

सब अहाते में कुर्सियां डाले बैठे थे।

'हैलो गुल्लू!' आहट सुनकर बिंदो ने इस ओर देखा।

'हैलो...' मैं उसके निकट बैठ गया।

बिंदो ने चाय का कप बनाकर मेरी ओर बढ़ाया।

ममा ईवनिंग न्यूज देख रही थी।

एक बड़ा घूंट लेकर कप गोद में ही रख लिया।

'कैसा रहा काम?' बिंदो बोली।

'ठीक।'

'क्या किया?'...चैक मैक्सी स्कर्ट और सफेद ब्लाउज।'

'चार-पांच कॉपी लिखीं।'

ममा ने अखबार का पन्ना पलटा।

जित्तन गला साफ करके बोले, 'काम कैसा लग रहा है?'

'दिलचस्प।'

यकायक सोमू ने बिंदो की ओर देखा, 'पेंटिंग के कंपीटीशन में कब जाऊंगा?'

'परसों इतवार को। सुबह आठ बजे।'

'कौन लेकर जाएगा?'

'मम्मा, बेटे!'

'सामान?'

'कल सब लेकर आएंगे डार्लिंग! नये ब्रश, कलर, ट्यूब, ड्राइंग पेपर...'

'इस एज ग्रुप में कोई सब्जेक्ट दिया जाता है क्या?' ममा ने बिंदो की ओर देखा।

'नहीं, अपने मन से।' बिंदो ने सोमू का हाथ अपने हाथ में लेकर दबा दिया, 'तुमने तय कर लिया है कि क्या बनाओगे?'

'हूं...' सोमू तनिक मुस्कराया।

'हमें बताओगे?'

'हूं…' वह कुछ क्षण विचारमग्न रहा। फिर बोला, 'प्याले में दूध पीती हुई जुगनू।'

'वैरी गुड।' विदो के स्वर में उत्साह था, 'और ?'

सोमू ने फिर कुछ पल ठहरकर कहा, 'मम्मा और पापा।'

वातावरण में सर्व मौन की कंपकंपाहट भर गई। विचलन और अस्थिरता की तरंगें…।

'और तीसरा ?' विदो का स्वर संतुलित था।

'अभी सोचा नहीं है।'

'सोच लो। शाम तक तय कर लेना।' विदो ने चाय का एक घूंट लिया, 'जिंदगी में हमेशा प्लैनिंग होनी चाहिए।'

सोमू ने समझदारी के भाव से सिर हिलाया।

'वैसे मैं यह चाहूंगा कि तुम तीसरे विषय को पहले से तय नहीं करो, क्योंकि जिंदगी में प्लैनिंग हमेशा काम नहीं आती, और वहीं मॉडर्न स्कूल के ग्राउंड पर दो तस्वीरें बनाने के बाद जो आइडिया आए, उसे रंगों में ढाल दो। निश्चय करने और उसे कार्यरूप में बदलने के बीच का जो समय है, वह आदमी को बदल भी सकता है। संभव है, दो दिन के विस्तार में तुम्हारे जीवन-दर्शन में कोई बुनियादी अंतर आ जाए। ऐसी स्थिति में क्या यह पहले का निर्णय एक बंधन साबित नहीं होगा ? वैसे भी आदमी में…'

'क्या मैं यह जान सकती हूं कि दो दिन के विस्तार में पेंटिंग के विषय को लेकर कौन-सा बुनियादी अंतर आ सकता है ?' विदो ने बड़ी शांति से, शिष्ट स्वर में पूछा।

'क्यों, अंतर क्या किसी से अपॉइंटमेंट लेकर आता है ?' जितन गंभीर थे।

'एक छोटे बच्चे का जीवन-दर्शन क्या होता है ?'

सोमू चेहरे पर नासमझी-भरे अजीब-से तनाव से एक-एक करके दोनों की ओर देख रहा था।

'क्या यही छोटा बच्चा एक दिन देश का नागरिक नहीं बनेगा ? यही छोटी-छोटी बातें हैं, जो आगे चलकर लांग रन में…'

'मेरी तुमसे हाथ जोड़कर विनती है कि तुम लांग रन में सोचना छोड़ दो। अगर तुमने लमहे भर के लिए शॉर्ट रन में भी सोचा होता, तो आज यह हालत नहीं होती।'

जित्तन पलभर ठिठके रहे। फिर बदले हुए स्वर में बोले, 'इसमें मेरी बात कहां से आ गई ?'

'क्यों ? बात में से ही बात निकलती है।'

'निकलती है या निकाली जाती है ?'

इतवार की सुबह। सोमू बैग कंधे पर डाले विंदो के चाय खत्म करने का इंतजार कर रहा था।

'तैयार हो बेटे ?' जित्तन ने समाचारपत्र से निगाह उठाई।

'हूं...' सोमू ने सहमति में सिर हिलाया।

'घबराना नहीं। मन मजबूत रखना।'

सोमू ने फिर हामी में सिर हिलाया।

विंदो ने ऑमलेट का आखिरी टुकड़ा काटकर चाय का एक घूंट लिया।

'प्राइज क्या मिलेगा ?'

प्रश्न हवा में टंगा रह गया—जैसे खंभे के तारों में उलझी बदरंग पतंग।

'बिल्कुल तुम्हारी मनोवृत्ति है।' जित्तन ने विंदो की ओर देखा, 'काम अभी किया भी नहीं, पर उसका फल बतला दो।'

विंदो ने एक और घूंट भरा, 'वैसे उन लोगों की यह बात गलत है। इनाम काफी सारे होने चाहिए। न मिलने से कच्चे मन पर बुरा असर पड़ता है।'

'मेरा यह विचार है कि इनाम एकाध ही होना चाहिए, ताकि कच्चे मनों को बिल्कुल शुरू से ही मालूम हो जाए कि असफलता क्या होती है।'

अनजाने ही एक दिनचर्या-सी बन गई थी।

…सुबह सात बजे सोकर उठना। चाय के साथ अखबार देखना। तैयार होना। नौ बजे निकल जाना। साढ़े नौ बजे 'आकाशदीप' की लिफ्ट में चढ़ना। एक मिनट के आसपास से एडवरटाइज़र्स का शोर बनोजर लगा दरवाज़ा जोर लगाकर खोलना। रिसेप्शनिस्ट से गुड-मार्निंग। कोने में रखी पंचिंग-मशीन में अपना कार्ड दबाना।

…केबिन में अपनी मेज। लिखना। काटना। फिर लिखना। कॉफी। सिगरेट। बातें। पत्रिकाएं। लंच। फिर लिखना। काटना। विजुअल। बातें।

…साढ़े पांच पर केबिन से निकलना। पंचिंग-मशीन में कार्ड दबाना। दो-ढाई मिनट बाद नीचे लिफ्ट से निकलना।

…किसी रेस्तरां में एक कप कॉफी। भीतरी सर्किल का एक चक्कर। या गुलज़ार जनपथ पर होटल इम्पीरियल तक चहलकदमी।

…वापसी। नहा-धोकर कपड़े बदलना। जितन के साथ एक बाज़ी। या बिस्तर पर कोई किताब। या किसी दिन कोई फिल्म। खाना। दस, साढ़े दस तक बिस्तर। कुछ देर पन्ने पलटना। थकान के कारण पलकें झपकने लगना। नींद।

फिर सुबह।

अगस्त की आरामदेह शाम। न गर्म, न ठंडी। लोदी गार्डन की हरियाली—बाईं ओर बावरी से घिरी गद्दी से लेकर दाईं ओर के कांप-पर तक। घास के सपाट या लहरियां लेते चढ़ाव-उतार। निश्छल, उन्मुक्त हरीतिमा आंखों में भरती हुई…

बिंदो ने थर्मस खोला और प्लास्टिक के गिलास में कॉफी उंडेली, 'अभी गर्म है।' गिलास छुआ और मेरी तरफ बढ़ाया।

एक घूंट लिया, 'हां।' नीचे रख दिया। एक सिगरेट जलाई। हथेलियां नीचे टेक, अधलेटा हो गया।

बिंदो ने ट्रांजिस्टर पर स्टेशन बदला। सितार पर कोई राग। धीमा। बिंदो अधलेटी-सी थी। बेल्ट वाली स्काई-ब्ल्यू काउ-बॉय जीन्स के साथ अंदर खोंसी नेवी-ब्ल्यू स्कीवी। सोने की चेन…

नीचे कुछ क्षणों को शोर हुआ, फिर ऊंची किलकारियां सुनाई देती रहीं, जहां सोमू कुछ बच्चों के साथ फुटबाल खेल रहा था। बहुत तन्मय होकर।

बिंदो भी उसी ओर देख रही थी, 'कभी-कभी बाहर आकर सोमू कितना रिलैक्स हो जाता है।'

'हां।' पल-भर सोचा। फिर कह ही दिया, 'खास कर इन दिनों।'

बिंदो ने मेरी तरफ देखा। फिर नीचे देखने लगी। एक तिनका तोड़ा। उंगली में लपेटती-सी बोली, 'क्या करूं, कुछ समझ नहीं आता।'

'सोमू के लिए बहुत मुश्किल हो गया है।'

'मैं क्या नहीं जानती!'

'जानती हो, तो कुछ करना भी चाहिए।'

'बस, यही तो बिल्कुल साफ नहीं होता!'

'तब तक उसके मन में दस तरह के कंप्लैक्स बन जाएंगे।'

बिंदो बीच का मकबरा देखती सोचती रही। फिर पीछे पेड़ों के झुरमुट की ओर, 'इतना समझ में आता है कि इस आदमी से अब नहीं निभ सकती।' बिंदो ने रबड़-बैंड खोला और बाल ठीक करने लगी, 'कभी-कभी इस बच्चे पर इतना गुस्सा आता है कि···' निचला होंठ दांतों तले दबाया, 'इतना लगाव मैं इसके साथ रखती हूं, लेकिन···'

सामने की टूटी मेहराब से दो जंगली कबूतर उड़े और जंगले के पास के पेड़ों की तरफ चले गए।

सबके लगाव की अपनी जगह होती है।'

'कई बार चुनना भी पड़ता है।' बिंदो ने सख्ती से कहा।

नीचे फिर किलकारी हुई। सफेद कमीज और नीली निकर में सोमू दूर कोने तक बॉल के पीछे दौड़ता गया।

उसके पीछे जुगनू थी।

सोमू दूर था। पर यह दृश्य जैसे स्प्लिट स्क्रीन वाले कई क्लोज-अप टुकड़ों में बंटकर बार-बार सामने आता रहा। आज से कई सालों के बाद जब मैं सोमू को देखूंगा और इस डूबती धूप वाली शाम को याद करूंगा सोमू की खुली किलकारी और पीछे उजली रूई की अनगढ़

गेंद-सी जुगनू। और मन के इस अहसास को कि किसी निर्णय के एक महत्वपूर्ण स्तर पर पहुंच रही थी, तब मेरे मन में उदासी आयेगी, यह सोचकर कि हमारे बारे में कैसे-कैसे बड़े निर्णय हमारी जानकारी के बिना ले लिए जाते हैं।

एक बजने में कुछ देर थी, तभी कमरे से निकला और गलियारा पार करके बाहर आ गया। 'एंगेज्ड' के हर्फ सुलग रहे थे। बटन दबाया। कुछ क्षणों बाद अवरोही तीर बुझा और आरोही जल गया।

खट से लिफ्ट रुकी। सींखचा खुला। वैसी ही खट् से लिफ्ट रुकी। सींखचा फिर खुला।···

धूप तेज थी। काला चश्मा आंखों पर चढ़ा लिया। लंबे-लंबे कदमों से बाराखंभा रोड पार करके रेडियल रोड पर आ गया। और फिर भीतरी सर्किल में।

अधिकतर दुकानों में 'सेल' की तख्ती लटक गई थी। लोग आते हुए। जाते हुए। छोटे-बड़े पैकेट हाथों में। बगल में।

पर हमेशा की तरह आज उन पर आक्रोश या खीझ नहीं आई। हलकी सहानुभूति और समझ के भाव मन में जागे। बेचारे लोग! रॉ-सिल्क की टाई और कफ-लिंक खरीद रहे हैं। खरीद लेने दो।

बैंक में घुसा। सेविंग्स के काउंटर तक आया। दस्तखत करके चैक दिया और टोकन ले लिया।

दीवार से लगे काउच पर बैठा और एक सिगरेट सुलगाई। आस-पास के लोगों पर एक उड़ती निगाह डाली। घूमते पंखे देखे। व्यस्त कर्मचारी। राइफल और गोलियों की पेटी से लैस गोरखा।

टुकड़ा ऐश-ट्रे में मसलकर उठा। पेमेंट के काउंटर तक पहुंचा। टोकन दिया। कैशियर ने गिनकर नोट बढ़ाए। हाथ जैसे का तैसा जेब में डाल लिया।

प्लाज़ा की ओर मुड़ा। सामने के ब्लॉक में मद्रास बैंक की सीढ़ियां चढ़ा। भीतर घुसते ही नीम-अंधेरी ठंडक की छुअन।

चश्मा हटाया। अंधेरे में नंगी आंखों के अभ्यस्त होने में कुछ क्षण।

कोने की मेज पर बैठा। वेटर के आने पर कहा, 'मसाला दोसा और कॉफी···'

हाथ जेब से निकाल लिया था और उसके साथ ही पांच नोट मेज पर रखे। झुककर ध्यान से देखा—एक बांध और नीचे गोलाकार दायरे में गरजता हुआ शेर···बगल में कई लिपियों के अक्षर। हाथ पलटा। दाईं ओर ऊपरी और बाईं ओर निचले कोने पर नंबर—ए बी बटा आठ, ३५२७४४, भारतीय रिजर्व बैंक, केंद्रीय सरकार द्वारा प्रत्याभूत। मैं धारक को एक सौ रुपये अदा करने का वचन देता हूं—गवर्नर। सो नाइस आफ यू, गवर्नर!

ताश के पत्तों की तरह पांचों नोटों के कोने एक साथ देखे और पूरे तीस दिनों की दिनचर्या सामने कौंध गई—सुबह दफ्तर की उतावली, पेंसिल ठकठकाते हुए उपयुक्त शीर्षक ढूंढ़ना, पांच बजे 'आकाशदीप' से निकलना। किसी से बातचीत करते हुए भी दिमाग में कहीं कोई इबारत बिजली के तारों में फंसी पतंग की तरह फड़फड़ाती···

नोट की चिकनाहट महसूस की···

संयोग था कि मगा बरामदे में थी—अकेली। हाथ में अखबार। आहट पा एक बार इस ओर देखा। छपी हुई फुलवायल, नीली प्रमुखता।

जेब से पर्स निकाला और पांचों नोट मेज पर रख दिए, 'तनख्वाह मिली है।'

उसने एक निगाह नोट देखे। फिर छूटी हुई खबर पढ़ने लगी।

चुप्पी। एक मोटर साकिल बाहर निकली। इंजन की ऊंची आवाज से बरामदे के खंभे पर बैठी चिड़िया अचानक पंख फड़फड़ाकर बाहर उड़ गई।

'जो ठीक समझो, दे दो।'

पल भर सोचा, 'तीन सौ ?'

फिर मौन। इस बार ऑटो-रिक्शा निकला। खुली छत। गैस के सिलिंडरों से भरा। मोड़ तक मद्धिम गड़गड़ाहट सुनाई देती रही।

'ठीक है।'

दो नोट उठा लिए और भीतर आ गया।

'आप विज्ञापन के क्षेत्र में कैसे आए?'

'कुछ अपनी दिलचस्पी से और कुछ संयोग से।'

'आप अपने पेशे को दूसरों से कुछ अलग मानते हैं?'

पल भर सोचकर कहा, 'हां, इस लिहाज से कि इसका संबंध एक्सपोजर से है।'

'आप इसका कुछ सामाजिक दायित्व मानते हैं?'

'एक हद तक।'

'वो क्या है?'

'वो हमारे उद्देश्य से निर्धारित होती है।'

'क्या है आपका उद्देश्य?'

'अपने प्रोडक्ट की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित करना और उसे बेचना।'

'आज विज्ञापन के क्षेत्र में नग्नता का जो बोलबाला है, उसके बारे आपकी क्या प्रतिक्रिया है?'

'यह सवाल तो पहले मधु जी से पूछा जाना चाहिए।' टोका गया।

'हां, तो मधु जी, आप⋯'

'मैं सोचती हूं कि हमें इस मुद्दे को पूरे परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए। विज्ञापन के क्षेत्र की नग्नता को समाज में फैली उच्छृंखलता से अलग करके देखना शायद ठीक नहीं होगा। साथ ही दूसरी ओर इसका संबंध देश में बढ़ती उपभोक्ता संस्कृति से है। फिर पृष्ठभूमि में हम आज के साहित्य को देखें, फिल्मों पर एक निगाह डालें, नई पीढ़ी के लड़के-लड़कियों के व्यवहार को परखें, तो हमें मालूम होता है कि⋯'

स्पॉट ऊपर था और दायें-बायें। वह तेज रोशनी आंखों में भर गई-सी लगती थी। तीन कुर्सियां एक साथ थीं और एक अलग, जिस पर मॉडरेटर बैठे थे। पीछे स्याह पर्दे पर 'परिचर्चा' की बड़ी चिप्पी लगी थी।

'वैसे मुझे विज्ञापन में सेक्स को लेकर शर्म नहीं आएगी, अगर लोग आंशिक नग्नता पर पैसे खर्च करने के लिए तैयार हों, तो। लेकिन सेक्स

के ऊपर जरूरत से ज्यादा बल देने पर मैं चेतावनी देता हूं, तथाकथित नैतिकता की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि व्यावसायिक रुख से भी। ऐसे उदाहरण देखे गए हैं कि अगर नग्न मॉडल सचमुच आकर्षक है, तो दर्शकों ने उसे ही याद रखा और उत्पाद को भूल गए।'

'मैं आपकी बात से एक हद तक सहमत हूं। विज्ञापन को देश की सांस्कृतिक स्थिति के साथ चलना होता है और सैक्स क्योंकि आज की संस्कृति का एक निर्धारक तत्त्व है, इसलिए हम इसे प्रचार से अलग करके नहीं देख सकते।'

स्टूडियो का दरवाजा खुलने की हलकी आहट। अगली कतार में बैठे चार-पांच लोग।

'आप विज्ञापन का लक्ष्य क्या मानते हैं ?'

'मेरी समझ में विज्ञापन का लक्ष्य दुहरा है : एक, उत्पादन के उपभोक्ताओं की संख्या बढ़ाना; और दूसरे, उपभोग की विद्यमान दर में वृद्धि। लेकिन शुरू-शुरू में मैं इसका प्रभाव अपेक्षाकृत सीमित मानता हूं और वह है सिर्फ अनुकूल वातावरण का निर्माण।'

'आप विज्ञापन के साथ किसी तरह की नैतिकता को जोड़ते हैं ?'

'जरूर ! सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि खरीदार यह महसूस न करे कि विज्ञापन के बढ़े-चढ़े दावों के द्वारा उसे भटकाया गया है या धोखा दिया गया है। विज्ञापन के क्षेत्र में हम यह कहते हैं कि यहां सच्चाई को भी साबित करना पड़ता है और किसी उत्पादन को लेकर किए गए झूठे दावे समय के लंबे विस्तार में झूठे साबित हो सकते हैं। इस सिलसिले में हम लोग एक चीनी कहावत को प्रमाण मानते हैं, जो कहती है कि लोग सिर्फ उसी बात को समझते हैं, जो उनके अनुभवों से सिद्ध होती है।'

सामने कांच के पार पैनल पर बैठा प्रोड्यूसर। सिर पर चढ़ा हैडफोन।

'एक उपभोक्ता के रूप में आप विज्ञापन से प्रभावित होते हैं ?'

'हां, होता तो हूं।'

'कैसे ?'

'अगर मैं कोई ऐसी चीज खरीदने जा रहा हूं—जैसे मान लीजिए, ताश की गड्डी, जो तीन-चार साल में एक बार खरीदी जाती है। मेरे पास कोई पहले का अनुभव नहीं है। तो इस हालत में पत्रिका में पढ़ा गया या रेडियो पर सुना गया विज्ञापन मनोवैज्ञानिक ढंग से काम करता है और मैं वह ब्रांड खरीद लेता हूं।'

'आपका मतलब है कि रोजमर्रा की चीजों में विज्ञापन उतना असरदार नहीं होता?'

'होता है, लेकिन कम, क्योंकि आप इस्तेमाल करके चीज की परख कर लेते हैं।'

ध्यान बातचीत से हटकर सामने रखे इंडिकेटर पर चला गया, जिन्हें सब दिखाई दे रहे थे…कंपास नंबर दो की जद में।

दस्तखत करके चेक लिया और दरवाजे तक आया। ड्राइवर ने हाथ मिलाया।

'मौसम अच्छा बन गया। हैप्पु वैप्पु डैडी नव!'

'ओके। बाइ बाइ…'

दूसरे लोगों ने हाथ मिलाया और मुड़े गये।

'कहां जाना है?' मधु अपने बड़े-बड़े डिब्बे लाई।

'फास्ट लेन।'

'ठीक-ठाक चलकर अगर नहीं हो तो मैं दूर कर दूंगी।'

'बुकिंग। मुझे कोई जल्दी नहीं है।'

एक झपकी आई। फिर दूसरी। फिर तीसरी।

घड़ी देखी। बारह बजने में पन्द्रह मिनट थे। [illegible]

[illegible]

अंधेरा।

एक [illegible]। [illegible]। [illegible]

[illegible]

'मधु !' अस्फुट स्वर में कहा।

आवाज जैसे पैनी धार थी। अंधेरा तत्क्षण बीचोबीच से कटा और एक आकृति उभरी—दुबली, सुगठित लंबी देह। मैरुन अमेरिकन जार्जेट। हीरे के गोल टाप्स। कंधों तक के बाल। मेज पर कुहनियां टिकाए, सतह पर जड़े कांच में धुंधला प्रतिबिंब···रुक-रुककर स्ट्रॉ होंठों में दबाती···एक कलाई में खनक गई चार चूड़ियां···लंबी-पतली उंगलियां ···एक में, प्लैटिनम में नौ रूबियां···चैनल फाइव की बहुत मद्धिम महक···

प्लाजा तक पहुंचते-पहुंचते तीन-चालीस हो गए थे। फायर में कुछ लोग थे—फालतू टिकट पूछते हुए।

लंबे डग भरते हुए अंदर घुसा। एडवांस बुकिंग काउंटर के पास मधु थी—रंगीन तस्वीरें देखती हुई। टैरी क्रेप का सूट। डॉग कॉलर के साथ। गले में, काले धागे में चांदी का नटराज। कलाई चांदी की चूड़ियों से भरी हुई।

'माफ करना, एक जरूरी कॉपी आ गई थी, इसलिए जल्दी नहीं निकल सका।'

उसने मीठे स्मित से दृष्टि उठाई, 'फिल्म अभी-अभी शुरू हुई है।'

और बढ़ते हुए पर्स से टिकट निकालकर गेटकीपर को थमा दिए।

धीरे-धीरे हॉल के अंधेरे और ठंडक का अभ्यस्त होना। कुर्सी पर पहलू बदलना। कोहनियां हत्थों पर टिकाना। निगाह सामने। गतिशील रंगीन बिंबों पर। बाईं ओर हलकी सुगंधियुक्त नारी-उपस्थिति का आभास।

उसका मुंह पास ला धीमे स्वर में कुछ पूछना। उसी तरह उत्तर देते हुए बड़े ईयररिंग पर झुकना। और कपोल पर नर्म बालों की छुअन। हत्थों पर कोहनियों का निकट आना। हथेलियों का मिलना। उंगलियों का उलझ जाना। टोपाज यूडीकोलोन की मद्धिम महक···

'तुम लोग कौन-सी पिक्चर गए थे ?' ममा ने पूछा।

बिंदो ने फिल्म का नाम बतलाया।

'क्या कहानी थी ?' सोमू ने हमेशा की तरह पूछा।

'एक सात-आठ साल का लड़का है। वो अपने डैडी की तरह बहुत अच्छा घुड़सवार बनना चाहता है। यह तय होता है कि अस्तबल के सबसे तेज-तर्रार घोड़े हर्क्यूलिस से उसकी ट्रेनिंग शुरू की जाएगी। लेकिन तभी उस रात बर्फीले पानी में भीगने से लड़के को पोलियो हो जाता है। अस्पताल में हिम्मत से कुछ दिनों रहकर ऑपरेशन के बाद वह लौटता है और अब बैसाखी के सहारे चलने लगता है। अपने मां-बाप की जानकारी के बिना अपने एक बुजुर्ग दोस्त की मदद से वह घुड़सवारी शुरू करता है और शुरू-शुरू की कठिनाइयों के बावजूद अपने बेहद पक्के मनोबल के सहारे जल्दी ही चुस्त घुड़सवार बन जाता है। एक दिन उसके मां-बाप सड़क पर कहीं जा रहे हैं। उस दिन लड़का पहली बार खुलेआम, अपने ऊंचे कद्दावर हर्क्यूलिस पर सवार तेज चाल से गांव का चक्कर लगा रहा है। सारे लोग ताज्जुब में उसे देख रहे हैं। लड़कियां उसकी तरफ खुशी से हाथ हिलाती हैं। घोड़े की टापों की आवाज सुनकर वे सड़क पर एक किनारे खड़े हो जाते हैं। पिता सुखभरे आतंक से देखता है और चकित रह जाता है। मां पूछती है, यह कौन था, जो हवा की तेजी से निकल गया ? वही रुंधे स्वर में कहता है, तुमने देखा नहीं, ये अपना बेटा था।'

कुछ क्षण सन्नाटा रहा। बिंदो ने गिलास उठाया और दो-तीन घूंट भर लिए।

सोमू गंभीरतापूर्वक सोचता रहा। फिर बोला, 'लेकिन पैर खराब होने पर भी कोई कैसे घोड़े पर चढ़ सकता है ?'

'क्यों नहीं ?' बिंदो ने स्थिर दृष्टि से जितन को देखा, जो एक निवाला तोड़कर आलू के टुकड़े से लपेट रहे थे, 'उसमें गहरा मनोबल और पक्की संकल्पशक्ति चाहिए।'

मेरी आत्मलीनता तब टूटी, जब जितन ने यकायक निवाला जहां का तहां रख दिया, कुर्सी खींची और बड़े-बड़े कदम रखते हुए बाहर निकल गए।

'जितन...' ममा ने कुछ जोर से कहा। पर पुकार पर जूतों की

आहट ही उभरी रही।

कुछ पल गहरा सन्नाटा रहा।

'तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।' ममा ने कहा और सलाद की प्लेट से एक बड़ा-सा टुकड़ा उठा लिया।

'मैंने किया क्या है ?' विदो अबोध आश्चर्य से बोली, 'मैं तो कहानी सुना रही थी।'

ममा ने एक टूथपिक उठाया और दांत कुरेदने लगी।

सोमू कुछ क्षण नासमझी के भाव से उस दिशा में देखता रहा, जहां जित्तन गए थे। फिर विदो की तरफ देखा। उसकी आंखों में आहत भाव था, बालसुलभ नहीं। उनमें पीड़ा के दंश की छाया थी—अपनी उम्र से कहीं आगे की। चेहरे का भाव आंखों के भाव से तालमेल बैठाने का प्रयत्न करता-सा जान पड़ता था। और यह बोझिल कोशिश चेहरे की रेखाओं से प्रकट हो रही थी। उस पल मुझे लगा कि सोमू बड़ा हो गया है। ऐसी स्थितियां उसे जल्दी बड़ा बना रही हैं। और जब वह बड़ा होगा और इन सब घड़ियों को याद करेगा, तो विदो को कभी माफ नहीं कर पाएगा।

ममा ने टूथपिक जूठी प्लेट में रखी और घड़ी देखी, 'ओह, नौ बज गए'''सोमू बेटे ! जरा मिसेज दयाल का नंबर मिलाओ। वहीं कॉपी में होगा।'

सोमू निःशब्द उठा और ड्राइंगरूम में कोने की मेज तक आया। नोटबुक उठाई और नंबर देखने लगा।

विदो पूर्ववत् छोटे-छोटे चम्मच भरकर चावल खाती रही।

'जब तुम्हें पता है कि आजकल उसका मूड कैसा रहता है, तब फिर'''' ममा ने वाक्य को अधूरा ही छोड़ दिया।

'लोग अपनी सारी संवेदनशीलता इस चारदीवारी के लिए ही बचाकर रखते हैं।' विदो ने निर्विकार भाव से कहा, अपनी प्लेट व गिलास उठाया और बरामदे में चली गई।

सोमू नंबर डायल करने लगा।

विदो फ्रिज तक आई, और दूध का जग निकाला। एक गिलास

भरा। जग अंदर रखा। फ्रिज बंद किया और गिलास लेकर किचिन में चली गई।

'हैलो! इज मिसेज दयाल देयर? जरा बुला दीजिए। मिसेज साहनी उनसे बात करना चाहती हैं।'

चुप्पी।

'हैलो! मिसेज दयाल? जस्ट ए मिनट प्लीज··'

ममा उठी, और जाकर रिसीवर ले लिया।

बिंदो गिलास लिए आई, और उसे मेज पर रख दिया—मैंट आगे खिसकाकर, 'क्या मिलाऊं डार्लिंग?' अपनी जगह आकर चुपचाप बैठ गए, सोमू की ओर देखा, 'चॉकलेट या बॉर्नविटा?'

सोमू सामने निगाह उठाए, सोचता हुआ-सा चुप रहा।

'बॉर्नविटा मिला दूं?' रैक से डिब्बा उठाते हुए बिंदो ने दुहराया।

कुछ पलों के विराम के बाद डिब्बा खोला। एक चम्मच निकालकर गिलास में डाला। फिर एक चम्मच चीनी। चम्मच चलाकर गिलास सोमू के सामने रख दिया।

'तुम्हें कुछ चाहिए?' बिंदो मुझसे मुखातिब हुई।

नाही में सिर हिलाया।

बिंदो अपनी कुरसी पर आ बैठी। सोमू की ओर देखा, 'मां के पास आ जाओ।' और गिलास सामने खिसकाकर उसे अपनी गोद में खींच लिया। दोनों बांहों से घेरकर उसके सिर पर चिबुक टिका ली। आंखें आधी मूंदे हुए कहा, अस्फुट स्वर में, 'दुद्दू पी लो। फिर हम लोग चल कल छोड़ेंगे। बली निंदी आ लई है।'

'ओह···या···रियली? हाउ नाइस···उन्होंने मुझसे कहा था··· बट आइ सैड कि···अच्छा? इज इट सो?···' हंसी। ममा की कोहनी मेज पर टिकी थी। चेहरे का कानों वाला हिस्सा दिखाई देता हुआ।

सोमू ने हाथ बढ़ाया। पर पंजा गिलास तक पहुंचा नहीं। उसकी कलाइयों से थोड़े ऊपर बिंदो की बाहों की जकड़ थी।

नेशनल स्पोर्ट्स क्लब में थे हम लोग। डाक्टर चड्ढा टोल्ड मी अबाउट इट···चैरिटी शो है, इसलिए एंटरटेनमेंट तो एग्जप्ट हो जाना

चाहिए। आप कम से कम पांच सौ के टिकिट तो…'

'पी लिया ?' विदो ने पलकें बंद किए हुए तंद्रिल स्वर में कहा।

'हाथ तो छोड़ो।'

'ओ…' विदो ने आंखें पूरी खोलीं। फिर जकड़ खोलकर उसके हाथों के नीचे से दुबारा कस लीं। फिर झुककर उसके कान की लौ चूम ली।

उस लंबे-चौड़े ड्राइंगरूम में घुसते ही ठिठक गया। दो-दो, तीन-तीन के गुच्छों में लोग बिखरे हुए थे। एक सरसरी निगाह डालकर समझ गया कि शायद मेरा परिचित एक भी नहीं है। यों ऐसी कोई उम्मीद भी नहीं थी—अंदर घुसते समय। लेकिन फिर भी मन के किसी कोने में तिनके की तरह ऐसा कोई आश्वासन अटका हुआ था शायद। तभी न जाने किस कोने से मधु निकल आई।

'हैलो…' उसने तपाक से हाथ मिलाया।

उसके लगभग पीछे ही सुनहरे फ्रेम का चश्मा लगाए एक पुरुष था।

'मेरे पति…रोहित…' और उनसे कहा, 'गुलशन…गे एडवरटाइज़िंग से…'

'सो नाइस टू मीट यू…' उन्होंने गर्मजोशी से हाथ दबाया, 'मधु ने आपका जिक्र किया था।'

'गुड ईवनिंग…' दरवाजे के फ्रेम में यकायक एक दंपति आ पड़े, तो वे 'एक्सक्यूज मी' कहकर उनकी अभ्यर्थना में लग गए। मधु ने आगंतुकों की ओर स्वागत की एक मुस्कान फेंकी और दो-तीन कदम पीछे कोने में आ गई।

'देर क्यों कर दी ? मैंने तो सात बजे आने को कहा था।'

क्षण भर ठहरकर कहा, 'सच-सच बताऊं ?'

'हूं…?' कौतुक-भरी मुस्कान उसके चेहरे पर आ गई। मैंजेंटा पिंक की लांग ड्रेस। कसी कमर, नीचा गला, कफ के साथ लंबी आस्तीन। गले में दो लड़ियों की सफेद माला।

'मुझे हिचकिचाहट हो रही थी।'

'किस बात की ?'

'यही कि तुम्हारे पति और दूसरे सब लोग अपरिचित होंगे।'

वह हंसी, 'तुम भी अजीब हो। शुरू में तो सभी अपरिचित होते हैं।'

पास से निकलता हुआ बैरा सामने ठिठक गया।

'बोलो, क्या लोगे ?'

एक उड़ती दृष्टि से ट्रे के पंक्तिबद्ध गिलास देखें।

'ह्विस्की ही ले लो।' उसने सुझाव दिया। और सोडा एक गिलास पर उड़ेलने लगी, 'से व्हेन''''

'व्हेन'''

रोहित ने मुड़कर इधर-उधर देखा और मधु को पाकर संकेत किया।

जस्ट ए मिनिट''''

एक छोटा-सा घूट लिया। तीखी तरलता। जीभ को स्पर्श करते ही स्फुरण की मृदुल बारीक फुहारें छोड़ती और फिर उन फुहारों का अहसास आहिस्ता-आहिस्ता नसों तक फैलता हुआ। जैसे सोख्ते पर स्याही की बूंद'''

'लाइट प्लीज़ ?'

एक अधेड़ सज्जन बिना जली सिगरेट हाथ में लिए सामने ठिठक गए। एक तीली जलाकर उनकी सिगरेट से छुआ दी।

'थैंक्यू'। उन्होंने एक लंबा कश खींचा। फिर हाथ आगे बढ़ा दिया, 'माइसेल्फ आनंद'''फ्रॉम लार्सन एंड टूब्रो''' यकायक सिर पास लाकर सरगोशी के लहजे में बोले, 'आप कोने की उस महिला को देख रहे हैं।'

इशारे पर एक नजर देखा।

'क्या यह हमारी भारतीय संस्कृति के अनुकूल है ?' उन्होंने रोष से पूछा।

उनके चेहरे पर का भाव देखकर उत्तर पा लिया, 'जी नहीं।'

आजकल कोई भी पत्रिका खोलने पर आप वीमेंस लिब के बारे

में पढ़ते हैं। मैं आपसे एक सीधा-सादा प्रश्न पूछना चाहता हूं। बिना किसी बंधन के पूरी स्वतंत्रता लेकर आखिर नारी जाति करना क्या चाहती है ?' पल भर का विराम, 'क्या दुनिया पहले ही बहुत उलझी हुई नहीं है ? क्या आदमी की नसें तनाव की उस सीमा तक वैसे ही नहीं पहुंच रहीं कि बस, अब टूटा ही चाहती हैं ?'

सिर हिलाकर स्वीकार किया।

उन्होंने हाथ के गिलास से एक बड़ा घूंट लिया। कुछ और पास आए और धीमे स्वर में रहस्यभरे ढंग से बोले, 'मैं आपको पचास वर्षों के अनुभवों का सार दे रहा हूं ! वास्तव में दुनिया में शांतिभरी जिंदगी उसी दिन से मुश्किल होने लगी, जिस दिन स्त्री ने घर की चारदीवारी से निकलकर पुरुष के साथ कंधा भिड़ाया। आप जानते हैं, भारत का स्वर्णिम युग कौन-सा था ? जब गृहस्वामिनी घर की लक्ष्मी मानी जाती थी। वही, जिसकी प्रशंसा ह्वेनसांग से लेकर मैक्समूलर भवन तक ने की है। मैं आपको एक राज की बात बताता हूं। क्या आप विवाहित हैं ?'

इधर-उधर देखते हुए नाहीं में सिर हिलाया।

'आपने बहुत अच्छा किया।' प्रशंसा का हाथ मेरे कंधे पर मारा, 'अब आप एक सच्चे हितैषी की सलाह मानिए और इस बंदिश के नाग-पाश से अपने-आपको मुक्त रखिए। काश !···ऐसा कोई शुभचिंतक पच्चीस साल पहले मुझे भी मिला होता !'

खाली गिलास मेज पर रख दिया। कुछ क्षण सिगरेट के कश लेते हुए खड़ा रहा। सामने खिड़की खुली थी। मेंहदी की बाड़, मोतिया, चमेली और गुलाबों की कतारें। फीकी चांदनी—धूमिल, मटमैली।··· यकायक लगा कि थक रहा हूं। सुबह के सात से लेकर शाम के सात तक की दिनचर्या एक फ्लैश में सामने कौंध गई। सोफे की नर्मी में धंसते हुए एक बार फिर मैनेजर की बात याद आई। बीच में विजुलाइ-जेशन-सेंट्रल फाउंटेन, साफ-सुथरी सड़कें, क्वार्टर···नीचे पार्टी का एक नारा, ऊपर बड़े-बड़े अक्षरों में शीर्षक···उसके नीचे बारह-पंद्रह शब्दों

की एक पंक्ति···फोकस : दिल्ली प्रशासन का बढ़िया काम, दिल्ली प्रशासन की बहुस्तरीय उपलब्धियां···फोकस, हाइलाइट, एक्सेंचुएट, अंडरलाइन···कुछेक शब्दों की एक चमकदार, ध्यानाकर्षी शृंखला, जो तुरंत-तत्काल अपनी तरफ खींचे, एकदम अंदर पैवस्त हो जाए ।

'अरे, आप अकेले बैठे हैं ।' रोहित अचानक सामने ठिठक गए, 'और वह भी खाली गिलास के साथ ! बेरा !'

उठकर उनके हाथ से गिलास ले लिया।

'आप बोर हो रहे हैं ।'

'नहीं-नहीं, अभी-अभी मैं उन साहब से बात कर रहा था ।' संकेत के साथ कहा, 'बहुत दिलचस्प आदमी हैं ।'

'सुंदरम ? ओह, ही इज ज्वेल आफ ए मैन ।'

'पल भर का विराम, जिसके बीच हम अंधों की तरह संभावित विषयों की ब्रेल-सूची टटोलते हैं ।'

'सिगरेट ?' उन्होंने खुला पैकेट सामने बढ़ाया और जेब से लाइटर निकालने लगे, 'आपका काम बहुत दिलचस्प है—शब्दों से खेलना !'

मुस्कुराया ।

'अच्छा, इसका ढंग क्या होता है ? पहले तस्वीर बनती है या पहले इबारत तैयार की जाती है ?'

'दोनों ही तरह से करते हैं । कभी कूची का काम पहले हो जाता है, कभी कलम का । फिर दोनों तरफ थोड़ी काट-छांट हो जाती है ।'

'लेकिन इसके लिए कलाकार के साथ तालमेल होना चाहिए ।'

'हां, यह तो है ही ।'

'लिखने के लिए आपका कोई विशेष क्षेत्र है या···?'

'जी नहीं । मैं ब्रा से लेकर बीज तक सबकी सिफारिश करता हूं ।'

उन्होंने एक मद्धिम ठहाका लगाया । हंसी अच्छी थी—भली और सरल । हालांकि शिष्टता और आतिथेय के दायित्व की धीमी-सी अनुगूंज थी उसमें, पर फिर भी भलमनसाहत की रंगत लिए हुए ।

'अच्छा, तो तुम लोग यहां हो !' हाथ में एक प्लेट लिए मधु यकायक सामने आई ।

'तुम्हारी गैरहाजिरी में मैं तुम्हारे मेहमान की देखभाल कर रहा हूं।' रोहित ने कहा, 'अब अगर तुम्हारी अनुमति हो, तो···'

'वे मेरी ओर देखकर मुस्कुराए। और पीछे के एक गुच्छे में मिल गए।'

'लो।'

एक कबाब उठा लिया, तो उसने प्लेट पास से निकलते बैरे की ट्रे में रख दी।

'सच बताओ। बोर तो नहीं हो रहे हो ?'

हलकी मुस्कान से उसकी तरफ देखा, 'अगर हो रहा होऊंगा, तो तुम क्या करोगी ?'

'तो···' उसने वैसी ही मुस्कान के साथ खोजभरी निगाह इधर-उधर फेंकी, 'तुम्हारे लिए सुंदर कंपनी का बंदोबस्त करूंगी।' और किसी से नजर मिलते ही हाथ ऊपर उठाया, 'विनी !'

इससे पहले कि मैं ठीक से समझ सकूं, गरारा-कमीज में एक आकर्षक युवती हमारे पास पहुंच गई।

'विनी···' मधु ने संकेत किया, 'मॉडलिंग में इसकी विशेष दिलचस्पी है। गुलशन···गे एडवरटाइजिंग से···' फिर मुझसे अनुरोध किया, 'विनी की मदद करनी है।'

'और विनी की आंख बचाकर एक कुटिल स्मित मेरी ओर फेंक वह जल्दी से आगे बढ़ी।

'मधु···' मेरी धीमी, व्यग्र पुकार पल-भर वातावरण में कंपकंपाती रही। जैसे किसी डूबते हुए के द्वारा किनारे की झाड़ी में फंसने के लिए फेंका गया कांटा।

'मॉडलिंग में मेरी दिलचस्पी है।' विनी मुस्कुराई। बड़ी और चौड़ी मुस्कान···होंठों के लिए नाकाफी मालूम होती हुई।

'किसी के लिए कुछ किया है आपने ?'

'कहां ! कोई मौका ही नहीं देता। टैक्सटाइल एसोसिएशन के फैशन शो में बात तै हो गई थी कि मैं राजस्थानी शादी का लिबास पहनूंगी। लेकिन फिर आखिरी लमहे में उन्होंने यास्मीन को ले लिया।

आइ टेल यू···आय'व वेरी ग्रेसफुल वाक···मेरे बाल भी बहुत···' दुलारभरा हाथ ऊपर फिराते हुए क्षण भर को ठिठकी, '···खूबसूरत हैं। कॉस्मेटिक्स या टैक्सटाइल्स के लिए मुझे एक बार मौक़ा दीजिए और अगर मैं कसौटी पर खरी न उतरूं, तो आप बेशक बता दें मुझे···'

'देखिए, यह वैसे तो मेरे कार्य-क्षेत्र से बाहर है। हमारे यहां वैसे भी तीन-चार मॉडल्स हैं, जो असाइनमेंट बेसिस पर कुछ वक्त से काम कर रही हैं और जहां तक मुझे पता है, उनका काम संतोषजनक है। लेकिन ऐसी भी कुछेक कैंपेन होती हैं, जिनमें नये चेहरे की गुंजाइश हो सकती है। मैं बात करके देखूंगा। अगर कुछ हो सका, तो···'

'तो आपको फोन करके पता कर लूं?'

कुछ ठहरकर कहा, 'हफ्ता मुझे दीजिएगा।'

'हां जरूर। वैसे आप मेरा फोन नंबर भी ले लीजिए। कई बार ऐसा होता है कि···' उसने पर्स से कागज का एक टुकड़ा खोजा, पतली-सी पेंसिल निकालकर जल्दी-जल्दी नंबर घसीटा और मेरी ओर बढ़ा दिया।

'आपको ज्यादा एतराज तो नहीं होगा, अगर मैं कुछ देर के लिए इस सुंदर युवती का अपहरण कर लूं?' अचानक एक अधेड़ हमारे सामने आ गए थे।

एक तरफ कोने में आ गया। एक सिगरेट जलाई।

'क्यों, फोन नंबर ले लिया?' मधु जाने कहां से सामने आ गई थी।

'हां।'

'कैसी लगी विनी?'

एक नजर विनी को देखा, जो उस व्यक्ति की किसी बात पर किल्कारी मार रही थी।

'अच्छी है।'

'एक-दो दिन बाद फोन करोगे न?'

देखा, तो मधु गंभीर थी। कुछ पल दृष्टि मिली रही। फिर वह मेरे पीछे किशनगढ़ शैली की राधा देखने लगी—काफी बड़े, दोहरे

सुनहरे फ्रेम में। झेंपी-सी मुस्कान उसके चेहरे पर उभरी। फिर डूब गई। इट्स सो एवसर्ड !···मुझे जलन-सी हुई।

'सुनो, तुम्हारी बिटिया कहां है ?' यकायक याद आया।

'ऊपर सो रही है।' उसने मेरी ओर देखा। तनिक मुस्कुराई, उपकृत-सी। जैसे इस मनःस्थिति से उबारने के लिए इससे अच्छा विषय और नहीं हो सकता था।

'मुझे दिखा दो एक वार।'

वह पल भर ठहरी, 'मैं एक वार खाने का इंतजाम देख लूं। फिर चलेंगे।'

वेरे के सामने ठिठकने पर एक छोटा पैग ले लिया ! अब तक सिर की ऊपरी सतह पर चंचलता की तरंगें उठने लगी थीं और आंखों में रुक-रुककर उनका प्रतिबिंव पड़ जाता था। माथे पर हलकी नमी का आभास। दीवार का सहारा लेकर सोफे पर बैठ गया।

'वह तो गवर्नमेंट की पॉलिसी है।' दायीं ओर के झुरमुट से पुरुष-स्वर सुनाई दिया, 'कई दफ्तरों को दिल्ली से बाहर ले जा रहे हैं। एन० एम० डी० सी० गया। बेचारों की प्रोटेस्ट मार्च और हंगर-स्ट्राइक सब बेकार गई। फिर रजिस्ट्रार-जनरल की बारी आई और उसके बाद हमारा दफ्तर···मैंने तो, जिस दिन नोटिस आया, उसी दिन इस्तीफा दे दिया···वजह के तौर पर बस, एक मिसरा लिख दिया नीचे—'मीर जी जाएं कहां दिल्ली की गलियां छोड़कर···'

आसपास के ठहाके गगनभेदी तोपों की गड़गड़ाहट में बदले और जैसे हजारों एंप्लीफायरों की गूंज और अनुगूंज इन कुछ ध्वनियों में ढलती हुई दिग-दिगंतर में छन गई—'मीर जी जाएं कहां दिल्ली की गलियां छोड़कर···'

'क्या बात है ?' कंधे पर हाथ का हलका स्पर्श···

आंखें धीरे-धीरे खुलीं। दृष्टि के क्षेत्र में एक कमनीय चेहरा था—आशंकित। आकुल···सिर झटका और कुछ क्षणों में चीजें ठीक फोकस में आ गईं। जैसे पिक्चर-हॉल में बिजली के दुबारा आने पर पर्दा कुछ

पल खाली चमके, फिर बिबों में बिना ध्वनि के स्पंदन हों और कुछ क्षणों में गति पकड़कर सब ठीक हो जाए…

'तबीयत ठीक नहीं है क्या ?' वह बगल में आ बैठी। बांह पर सरोकार का हाथ, 'ज्यादा तो नहीं पी ली ?' स्नेहभरे लगाव से पूछा, 'चलो, मैं कोई टेबलेट दिए देती हूं।' हाथ बढ़ाकर गोद में खुली नोटबुक उठाई, 'और जो जाएं कहां…यह क्या लिख रहे थे ?'

'अचानक एक कॉपी का आइडिया आ गया था।'

वह मुस्कुराई, 'तुम लोग अवकाशक्षण में भी यही करते रहते हो।' और उठ खड़ी हुई, 'चलो, ऊपर चलें।'

उसके पीछे-पीछे संकरे पैसेज से निकलकर जीने पर आ गया। मेरे आगे सीढ़ी पार कर लेने पर स्विच की ओर हाथ बढ़ाया और जीने की रोशनी बुझा दी। गमलों की एक कतार वाली बालकनी पार कर एक दरवाजे के हैंडिल पर हाथ रखा, 'यह हमारा बेडरूम।' अंदर घुसकर एक स्विच दबाया।

बिल्कुल सामने ही डबल बेड था। दृष्टि जैसे वहीं जमकर रह गई। ब्रॉकेड का सेल्फप्रिंट बेडकवर। यही है वह जगह, जहां रोहित ने मधु के जिस्म को जाना है। वह कितनी बार थरथराते पांवों से इस सिरे तक आकर, नाइटी फेंक, निर्वस्त्र इस लिहाफ में घुसी होगी…कितने उन्मादी आलिंगन, कितने उत्तेजक चुंबन…सीत्कार, उच्छ्वास…नसों को झिंझोड़ने वाली चाह के आरोहावरोह…तृप्ति के सात्विक सुकून की शांति…

मधु कुछ कहने के लिए मुड़ी। पर मेरी आंखों की दिशा देखकर चुप रह गई। यों ही कोने की एक सिलवट ठीक की। पैताने के स्टैंड पर हाथ टिकाए खड़ी रही।

कोने में बहुत मद्धिम रोशनी का ग्लास लैंप जल रहा था। सफेद बेड …कंधों तक चादर ओढ़े, नीरू नींद में बेसुध थी। उसके चेहरे पर निगाह बड़ी-बड़ी बंद पलकों की लंबी-लंबी बरौनियों में उलझकर रह गई। एक हाथ चादर के बाहर निकला था। बंद मुट्ठी। उजली। छोटे-से गुलाबी शंख-जैसी।

पैंताने बहुत आहिस्ता से बैठा। उसकी समतल सांस सुनने लगा। मद्धिम। बहुत नाजुक तान की तरह, जो वातावरण की खामोशी में ठहरी हुई थी। नन्हे, अधखुले होंठों के कोनों पर मुस्कान का आभास था। शायद वह कोई सपना देख रही थी···हवा में हौले-हौले हिलते, रंगबिरंगे फूलों की क्यारियों के बीच चमकते पंखों वाली तितली के पीछे-पीछे दौड़ना···या पंखों वाले रेशम-से घोड़े पर पीछे छूटते हुए नीले-नीले बादलों के बीच उंगलियों में लगाम उलझाए रहना···शीशे के जगमगाते झाड़फानूस वाले राजमहल में जोकर के साथ आंखमिचौनी···

झुककर उसके माथे से होंठ छुआए। वह तनिक-सी कुनमुनाई। वह स्थिर हो गई।

वैसे ही आहिस्ता से उठा।

'रात को उठती नहीं?' फुसफुसाकर पूछा।

मधु मसहरी का एक डंडा थामे खड़ी थी। नीरू की तरफ देखते हुए उसने स्निग्ध स्मित से नाहीं में सिर हिलाया।

मौन। बर्फ के नर्म फाहों की तरह झरता। मोरपंखों के अनछुए-से स्पर्श की तरह सहलाता।

हाथ बढ़ाकर उसके हाथ पर रख दिया। वह तनिक हिली। और मुझसे सट गई। झुककर होंठ उसकी गर्दन पर रखे। उसके बदन में दौड़ती फुरहरी का आभास मिला···उसने मेरा हाथ अपने छोटे-से पंजे में दबा लिया। उंगलियों की पोरों पर उसके एक नाखून की चुभन। कंधों से मोड़कर उसे अपनी ओर घुमाया और बांहों में भर लिया। पल भर को ऊपर देख, उसकी आंखें नीचे झुक गईं। बड़ी-बड़ी बरौनियां ···उसके होंठ नम थे। और मृदु। कुछ क्षणों के प्रारंभिक स्पर्श में उनमें वैसा ही जीवंत स्पंदन महसूस हुआ, जैसे कबूतर के सीने पर हथेली सटाकर उसकी नाजुक धड़कन का आभास मिले···मेरे कंधों पर चूड़ियों की हलकी खनक के साथ उसके हाथ टिके। फिर गर्दन के पीछे उंगलियों की आपसी जकड़न में बदल गए। इंटीमेट की गंध। तीन-चार चुंबन। लंबे। शांत।

मधु के नीचे उतर जाने पर बाथरूम में आया। तौलिये का एक

कोना भिगोया और चेहरे से लिपिस्टिक पोंछी। बाल ठीक किए। टाई की गांठ कसी। फिर छोटे कदमों से नीचे उतर आया।

सुबह देर से नींद खुली। बदन टूट रहा था और पलकों पर हैंग-ओवर का भारीपन…घड़ी पर निगाह डालते हुए तैयार होने से लेकर दफ्तर पहुंचने तक की पूरी प्रक्रिया को जिया, और पल भर के लिए मन में आया कि आज छुट्टी मार दी जाए। पर अगले ही क्षण अनेक कामों की अनिवार्यता का ध्यान आया और विलास की यह ललक जहां-की-तहां दब गई। किसने फर्माया था कि आदमी आजाद पैदा हुआ है?

चाय के प्याले के साथ एस्प्रो की दो टिकियां निगल लीं। अखबार के पन्ने पलटते हुए अपने को रोजाना की चुस्ती के स्तर तक लाने का प्रयास किया। पर साफ लगा कि बात बन नहीं रही है। मन पर जब्त कर किसी तरह तैयार होकर बैल्ट का बकल कसता हुआ कमरे में आया, तो देखा, जित्तन कुर्सी पर बैठे सिगरेट पी रहे हैं।

'हैलो, गुडमॉर्निंग।'

'गुडमॉर्निंग…' उन्होंने धीमे स्वर में कहा और पूर्ववत खिड़की के पार धूप का उजलापन देखते रहे।

मोजे-जूते पहने। टाई बांध ली। फिर दराज खोलकर रूमाल खोजने लगा।

'दफ्तर जा रहे हो?' उन्होंने इस ओर निगाह घुमाई।

उनके स्वर में कहीं कुछ ऐसी आशा लगी कि शायद मैं नहीं कह दूंगा।

'हां।'

कुछ पल चुप्पी रही।

'कल रात भी तुम देर से आए। मैं दो-तीन बार झांक गया था।'

'हां। देर हो गई थी।'

कुछ क्षण फिर मौन रहा। मैंने एक बार जूतों पर ब्रश… उन्होंने आती हुई जम्हाई रोकी।

'कहां गए थे?'

'एक पार्टी में।'

'किसके यहां ?'

'एक दोस्त हैं।'

'दफ्तर के ही ?'

'नहीं, दफ्तर के तो नहीं...'

जाल-सी उनकी निगाह जैसे लमहे-भर मेरे चेहरे को खंगालती रही—कुत्सित नहीं, जुगुप्सा जगाने वाली नहीं। थोड़ी विस्मित। और मेरी व्यस्तता पर हल्की-सी ईर्ष्या से भरी।

शाम को तो सीधे घर आओगे ?'

ठिठक गया, 'क्यों ? कोई खास बात ?'

'नहीं, बात क्या...बाजी नहीं जमी कई दिनों से।' उन्होंने करुण मुस्कान से मेरी ओर देखा और पलभर को उनकी आंखों में अकेलेपन की दयनीयता तैर गई—भिखारी के समान शर्मिंदगीभरी आशा से हाथ पसारे, पुरानी आत्मीयता का वास्ता देती हुई, जैसे नए सिरे से ध्यान आया कि जित्तन किस तरह दिन-दिन भर अकेले रहते हैं !

बाहर हॉर्न बजा और क्षण-भर बाद बड़े जूड़े वाला बिंदो का सिर अंदर झांका, 'टाइम हो गया।'

मेरी हामी के साथ ही बिंदो का सिर फिर अदृश्य हो गया।

'मैं शाम को सीधा घर आऊंगा।' यथाशक्ति संतुलित स्वर में कहा। और जित्तन को वैसे ही अकेले कमरे और अकेले मकान में कुर्सी पर बैठा छोड़ बाहर निकल आया।

पीली, उजली धूप। अभी नर्म व सुखद थी—अनछुई। चाहते हुए भी मन के एक हिस्से में सोचा कि जित्तन आज का दिन अकेले घर में उसी तरह काटेंगे, जैसे कुछ दिन पहले मैं भी...

सिगनल लाल हुआ। टायरों की किरकिराहट के साथ रुकना। मैं तेज ट्रैफिक का हिस्सा हूं। पलभर के लिए मन विह्वल और तरल हो आया—अपनी व्यस्तता के प्रति गद्गद आभार के साथ।

रोशनी हरी हुई। और सड़क तेजी से नीचे फिसलने लगी।

'क्या बात है ? आंखें बहुत लाल हैं तुम्हारी ?' गियर बदलते हुए

बिंदो बोली।

'देर से सोया था।'

'रात देर तक बाहर थे शायद।

'हां ! एक पार्टी थी।'

'ऑफिस के लोगों की ही ?'

'नहीं। बाहर···।'

बिंदो ने व्हील मोड़ते हुए क्षण-भर को मेरी तरफ भी देख लिया। लगा कि उसकी दृष्टि खोज-भरी है और बहुत सूक्ष्म मुस्कान में होंठों के कोने खिच गए हैं।

मीर जी जाएं कहां दिल्ली की गलियां छोड़कर !

जी नहीं, आप नहीं जा सकते, क्योंकि दिल्ली प्रशासन ने शहर को इतना सुंदर जो बना दिया है !

दि० प्र० के बढ़ते कदम—काम ज्यादा, बात कम।
हमने ये माना कि दिल्ली में रहें, खाएंगे क्या ?

जी नहीं, यह गलत है, क्योंकि हमें वोट देने का मतलब है :

हर हाथ को काम
हर आदमी को मकान
हर रोगी को दवाई
दि० प्र० के बढ़ते कदम—काम ज्यादा, बात कम।

अंतिम बार ध्यान से दोनों मसौदे देखे। फिर राजवंश के सामने रख दिए। उन्होंने पैड पर स्कैचिंग पैन रोका। एक बार बोलकर और कई बार मन-ही-मन इबारत पढ़ी। फिर विचारपूर्ण ढंग से मेज पर पेंसिल के उल्टे सिरे की खट्-खट्।

'पहली के साथ विजुअल हो सकता है एक सुंदर सड़क का—चौड़ी, साफ-सुथरी। दोनों तरफ पौदे और एक किनारे फव्वारा···' मेज के एक कोने पर टिक, कुछ झुके हुए कहा, 'दूसरी के लिए एक हाथ कुछ काम करता हुआ, छोटे-से मकान की डिज़ायन, दवा का गिलास बढ़ाता

हुआ एक हाथ···'

राजवंश कुछ क्षणों सोचते रहे, 'पहला विजुअल तो ठीक है। लेकिन दूसरा जैसा आप बता रहे हैं, उससे बहुत कंजस्टिड हो जाएगा। इसमें रिटिन वर्ड भी कुछ ज्यादा हैं।' कुछ पल खट्-खट् के साथ सोचना, 'अच्छा, मैं ट्राइ करके दिखाता हूं।'

अपनी मेज पर पहुंचा, तो कॉफी आ गई थी। पीछे को बैठा, सबसे नीचे की दराज खोलकर जूते का एक कोना उस पर टिकाया और दूसरा नीचे के फुट-रैस्ट पर। एक सिगरेट जलाई। कॉफी का घूंट भरा। दीवार की घड़ी देखी। साढ़े ग्यारह। खिड़की खुली थी। ऊपर आसमान का एक कोना। नीचे 'स्टेट्समैन' और बाराखंभा रोड का एक हिस्सा। ट्रैफिक उन्मादी, बौराया। और लगभग निःशब्द। जैसे नीचे कहीं पर्दे पर बिना आवाज की फिल्म चल रही हो।

मेज पर तीन-चार फोल्डर पड़े थे। पैड पर इधर-उधर कुछ पंक्तियां। मसौदों के हिस्से। टंबलर में तरह-तरह की छोटी-बड़ी पेंसिलें। पानी के गिलास पर के ढक्कन की इबारत—'आइ स्पेंड एट आवर्स ए डे हियर···डू यू एक्सपैक्ट मी टु वर्क टू?'

ढलती शाम। गार्डन-अंब्रेला के नीचे। बिंदो रिलैक्सिंग कुर्सी पर अधलेटी। आंखों पर गो-गो चश्मा चढ़ाए। उसके वक्ष पर खुली पत्रिका 'कैन कैन'। बगल की तिपाई से बीच-बीच में कॉफी का मग उठाकर घूंट ले लेती थी।

जित्तन का ध्यान पिटने वाले प्यादे पर था। सोमू उनकी निगाह का अनुसरण करता हुआ। हाथ में सैंडविच। रह-रह कर एकाध टुकड़ा काट लेता था। उसके पैरों के पास जुगनू। धूप में अपना उजला, मुलायम फर चमकाती। दुम को तरह-तरह के आकार देती हुई। गेंद में मुंह मारती। लुढ़क जाने पर फिर उसे पास लाती।

कुछ देर पहले जित्तन ने पूछा था, 'कैन कैन तो यहां बैन है। तुम कहां से ले आती हो?'

'कोशिश की जाए, तो बहुत कुछ मिल जाता है।'

तब से सन्नाटा था।

यकायक बिंदो ने सिर उठाया। विह्वल स्वर में कहा, 'सोमू····'

'हूं?' सोमू ने मुड़कर देखा।

'यहां आओ डार्लिंग। मम्मा को तुम्हारी कितनी जरूरत है।'

सोमू उठा। रिलैक्सिंग कुर्सी के निकट स्टूल खींचने लगा। पर बिंदो ने उसके दोनों हाथ थामकर खुली हथेलियां बारी-बारी से चूमीं। फिर अपनी हथेलियां उसके चेहरे पर रख, उसका मुंह ऊपर उठाया, 'मम्मा को एक प्यार दो।' फिर उसे अपनी गोद में बिठाकर बाहों में भींच लिया। उसके गालों पर होंठ रखे। आंखें बंद कर लीं, 'वो कौन है, जिसे सारी दुनिया में मम्मा सबसे ज्यादा प्यार करती है?'

सोमू ने अपनी जगह से मुहरों की स्थिति देखने की कोशिश के साथ कुछ यांत्रिक ढंग से कहा, 'सोमू····'

'वो कौन है, जिसकी मम्मा को हमेशा याद आती है?'

'सोमू····'

जितन ने नजर उठाकर देखा। फिर चाल चलाते हुए बोले, 'प्यार के ऐसे प्रदर्शन का बच्चे के भावात्मक विकास पर बुरा असर पड़ता है।'

बिंदो ने उसी तरह आंखें बंद किए तन्मय मुद्रा में कहा, 'अभी सोमू के साथ मम्मा कहां जाएंगी?'

सोमू ने जुगनू के पंजों से गेंद ली, 'क्या पता····'

बिंदो ने आंखें खोलीं। मुस्कुराई, 'भूल गए? कल पी० टी० के लिए क्या चाहिए?'

'सफेद मौजे!' सोमू ने बिल्ली को गोद में ले लिया।

'और क्या करेंगे कनॉट प्लेस में?'

'सॉफ्टी आइसक्रीम।'

'और?' बिंदो ने जुगनू को अपनी बगल में दबा लिया।

'जुगनू के लिए मछली।'

'हां!' बिंदो ने सोमू का सिर चूमा, 'सोमू मम्मा को प्यार करता है?'

सोमू ने बिल्ली को वापस लेने का प्रयत्न किया। नहीं ले पाया। कहा, 'सोमू मम्मा को प्यार करता है।' और बिल्ली अपनी गोद में ले ली।

'यह ठीक नहीं है।' जित्तन बोले।

बिंदो ने भौंहें चढ़ाकर देखा।

'लड़के में इस तरह खुलेआम अपनी भावना को प्रकट करने की आदत नहीं डालनी चाहिए। पुरुष को पक्का होना चाहिए, और मजबूत। उसे अपने-आपको कम खोलना चाहिए। फिर जहां प्यार-जैसी कोमल भावना का प्रश्न है…'

'तुम पुरुष की मजबूती के बारे में कुछ कहने से पहले एक बार सोच लिया करो।' बिंदो ने नर्मी व शिष्टता से कहा।

जित्तन कुछ क्षण एकटक देखते रहे, 'मैं जान सकता हूं कि इस बात का मतलब क्या है?'

बिंदो सोमू की बांहें सहलाती रही। सोमू बारी-बारी से दोनों को देखता रहा।

'मैंने अभी कुछ पूछा है?' जित्तन का स्वर थोड़ा ऊंचा हो गया।

गहरी सांस के साथ नीचे लेटते हुए दोनों हाथ सिर के नीचे लगा लिए। आंखें बंद कर लीं। निकट की आवाजें धीमी होते हुए पीछे हटने लगीं। और आंखों का काला अंधेरा। गहरा। शांत। जैसे बाग के उस दृश्य से कहीं अलग खिंचने लगा—गहरी खामोशी में। किसी निर्जन किनारे पर। जहां दूर-दूर तक फैली रेत थी। और चुप्पी। बस…

रिकॉर्ड पूरा हो जाने पर सुई वाला हिस्सा यांत्रिक अकड़ेपन से पीछे हटा। रिकॉर्ड नीचे फिसला। डायमंड उसी मशीनी तत्परता से आगे आया और पंख-जैसे हलकेपन से नये रिकॉर्ड की सतह पर टिक गया।

सितार के तार छेड़े गए।

मधु आलमारी बंद करके मुड़ी। और मेरी खुली बांहें देखकर हलकी मुस्कान से उनमें समा गई। ओनाव वाली कोमलता का बोझ।

एक हाथ उसकी खुली कमर पर, दूसरा गर्दन के पीछे। दबाव से उसका तनिक पीछे को झुक-सा जाना।

कपोल को सहलाते होंठों का कान की लौ पर जा टिकना…हलके से कुतरना…कान के पीछे ओनाव के एक स्रोत का जीभ से स्पर्श…होंठों का माथे पर आ जाना…नीचे उतर पलक की हरारत पर थमना…बरौनियों की छुअन…पतली त्वचा के पार पुतली की चंचल थिरकन का अहसास।

नीचे उतरना…होंठों का दूसरा जोड़ा…तनिक नम…पहले उनके कोने छूना…छोटे-छोटे मंद चुंबन…गर्दन से हटकर दूसरे हाथ का पीठ पर आ जाना। व्यग्रता…चुंबन की अवधि बढ़ना—और तीव्रता, जैसे हर बार एक पके फल में मुंह मारना। उसकी जीभ मेरे मुंह में प्रविष्ट होती, कुछ खोजती-सी।

अपने को कुछ पीछे खींच हाथ बीच में लाना। हाउसकोट का पहला बटन, फिर दूसरा, फिर तीसरा, चौथा, पांचवां…

हाथों का आवेग से उसे जकड़ लेना। नग्न, नर्म जिस्म के स्पर्श का रोमांच, हथेलियों की बेताब यात्रा—गर्दन से पीठ पर, कमर पर, नितंबों पर…

होंठ ठुड्डी से फिसलते हुए गले पर, जहां एक पतली-सी नीली नस का हलका उभार था। जीभ उसे सहलाती, टटोलती…

उंगलियों की थरथराहट से ऊपर पहुंचना। पीछे की पट्टियों पर जोर दे, हुक खोलना। कंधे पर उलझी तनियों को हटाना…

सुडौल, बड़े, भरे-भरे गुलाबी स्तन। उनकी ऊपरी, बाहरी रेखा पर होंठों का आधा वृत्त बनाना। गहरे भूरे बिंदु तक पहुंचना, हलके से चुभलाना, कुतरना…

मधु बिस्तर पर चित। प्रतीक्षारत। मेरा घुटनों के बल निकट आना। उसकी अर्धोन्मीलित आंखों से दृष्टि मिलना। आत्मीयता की बारीक स्मित…

नीचे झुकना और उसका उत्ताप की लरजन से मुझे अपने भीतर समा लेना। मेरे हाथ उसकी पीठ के नीचे से कंधों को जकड़े हुए, होंठ

होंठों पर ठहरे, और आरोह की थरथराती लय···

वह आवेश और कंपन—कि जाना है···
जाना है···
जाना है···
आगे···
आगे···
आगे···
और···
और···
और···
तेज···
तेज···
तेज···
हां···
हां···
हां···
ऐसे···
ऐसे···
ऐसे···
अह···
अह···
अह···
ओह···
ओह···
ओह···
हां···
हां···
हां···

तेज···
तेज···
तेज···
और···
और···
और···
आगे···
आगे···
आगे···
और आगे···
और आगे···
और आगे···
और तेज···
और तेज···
और तेज···
और और···
और और···
और और···
और तेज···
हां हां···
और आगे···
हां हां···
और और···
हां हां···
तेज तेज···
आगे आगे···
और और···
हां हां···
हां हां···

होंठों पर ठहरे, और आरोह की थरथराती लय···

वह आवेश और कंपन—कि जाना है···

जाना है···

जाना है···

आगे···

आगे···

आगे···

और···

और···

और···

तेज···

तेज···

तेज···

हां···

हां···

हां···

ऐसे···

ऐसे···

ऐसे···

अह···

अह···

अह···

ओह···

ओह···

ओह···

हां···

हां···

हां···

तेज···
तेज···
तेज···
और···
और···
और···
आगे···
आगे···
आगे···
और आगे···
और आगे···
और आगे···
और तेज···
और तेज···
और तेज···
और और···
और और···
और और···
और तेज···
हा हां···
और आगे···
हां हा···
और और···
हां हां···
तेज तेज···
आगे आगे···
और और···
हां हां···
हां हां···

हां हां···

हां बस···

बस बस्स···

कुछ देर वैसे ही उसके गले पर दांत जमाए पड़े रहना, फिर सिर उठाना। आत्मीयता की वही मुस्कान—होंठों के सिकुड़े कोनों में साझेदारी की अतिरिक्त अंतरंगता···

झुक कर होंठ चूम लेना।

बड़ी जोर से बिजली कड़की। क्षण-भर को सब कुछ स्तब्ध। एयरकंडीशन की घर्रर भी रुक गई-सी लगी।

'बारिश हो रही है क्या?' मैं कोहनियों के बल सीधा हुआ।

'देखती हूं।' मधु उठी और खिड़की तक आ पर्दे का कोना सरकाया।

एक हाथ से बाल संभाले, आगे को तनिक झुकी उसकी नग्न देह की वह झलक—एक कंधे को ढके बाल, बांह से आधा ओट हुआ आधा उरोज, एक ओर बोझ डाले पतली कमर के पृथुल नितंब! अनायास ही घूंट-सा लिया।

'नहीं तो···' वह पर्दा छोड़ते हुए मुड़ी, 'बादल जरूर छाए हैं।' और झुककर नाइटी उठा ली।

एक बड़ा-सा घूंट लिया। गर्म। तेज।

उसके साथ उंगलियां उलझा लीं। पतली उंगलियां। हलके गुलाबी नाखून। लंबे, तराशे हुए। दूसरी उंगली में रूबियां-जड़ी अंगूठी।

नीम-अंधेरा। सफेद लेस के पर्दे। सामने राजस्थानी फोक-मोटिफ की वालहैंगिंग।

घड़ी देखी। ठीक चार थे।

'अब चलना चाहिए।' एक चक्कर दफ्तर का भी लगा लूंगा।

'मैं कहने ही वाली थी।'

उसकी ओर देखा। चेहरा गंभीर था।

सुबह से ही ललकभरा ध्यान था कि आज इतवार है—दोपहर को

सोना है। शायद यही अतिरिक्त अहसास था, जिससे खाने के बाद एक घंटे तक बिस्तर पर करवटें बदलता रहा और नींद नहीं आई। और जब आई, तो ऐसी गहरी कि जागने तक अंधेरा हो चुका था।

घड़ी देखी, तो पौने छह बजे थे। किचिन में आ कॉफी का पानी रखा। फिर बाथरूम में झुक मुंह पर पानी के छींटे मारे। तभी बिजली की गड़गड़ाहट सुनाई दी। खिड़की से देखा, तो बादल छाए हुए थे। हवा में भी वह ठंडी सरसराहट महसूस हुई, जो बारिश से पहले आ जाती है।

कमरे में आ, कॉफी का बड़ा-सा घूंट लेते हुए आलमारी खोली। कपड़े बदलते हुए बराबर फायर में अकेली टहलती मधु का ध्यान था। अगर पांच मिनट में टैक्सी-स्टैंड तक पहुंच सकूं, तो समय से 'अर्चना' पहुंच जाऊंगा।

जूतों के फीते बांधे। टाई की गांठ दुरस्त की। कोट पहन लिया। दराज से रूमाल व पर्स निकालकर जेब में डाला। और दरवाजा खोल-कर कदम उठाने लगा।

बस, तभी ऊंची गड़गड़ाहट के साथ शुरुआत हुई। तेज। तीखी··· खिड़की के कांच पर आवाज कुछ ऐसी थी, जैसे तिरछी बौछार नहीं, एक के बाद एक मुट्ठी भर कंकड़ हों। छत पर भी उसी तरह की आहट थी। खिड़की के सामने आ बाहर देखने की कोशिश की। गहरे अंधेरे पर बारिश की मटमैली परत का ही आभास हुआ। फिर गड़-गड़ाहट···क्रमशः मंद होते हुए दूर तक जाती···और बौछार की गरज और भी तीखी होती हुई। तभी रोशनदान के किसी कोने से फर्श पर कुछ गिरने की आहट हुई, जैसे कांच की गोली, जो चिकनी खनखनाहट के साथ किनारे तक फिसल गई।

पास जाकर उठाया। तेजी से घुलता हुआ ठंडा ओला था।

कुछ क्षण वैसे ही खड़ा रहा।

कुर्सी पर उतावली से फेंके गए कपड़े थे···बीस-पच्चीस मिनट बाद अर्चना के सामने टैक्सी से उतरता। मधु के साथ मुसकान का विनिमय

हथेली का स्पर्श। उंगलियां आपस में उलझतीं। कसतीं। इंटीमेट की गंध के साथ इस ओर झुक कर उसका कुछ कहना। कुछ देर के वाद मेरे कंधे पर सिर टिका लेना।

फिर कांच पर तेज प्रहार। ऊंचा। उद्धत।

रोशनी बुझाई और मग लिए वरामदे में निकल आया। रिलैक्सिग कुर्सी पीछे दीवार तक खिसकाई। कुर्सी पर अधलेटे हो, पैर स्टूल पर रख लिए। हलकी मीठी गरमाहट का बड़ा-सा घूंट लिया।

ड्राइंगरूम की खिड़की पर पर्दे का एक किनारा हटा हुआ था। ममा बीच के सोफे पर कुछ पढ़ती दिखाई दे रही थीं।

वरामदे का आधा हिस्सा बौछार की जद में था। पानी के बरसने और बहने की एकरस आवाज। लैंपपोस्ट दिये की लौ-जैसे टिमटिमा रहे थे। उनके निकट का कुहासा हल्के गोलाकार दायरे में तनिक-सा उजला था।

एक सिगरेट जलाई। मग से एक घूंट लिया।···शो शुरू हो चुका होगा। मधु वारिश की परवाह किए बिना सख्त चेहरे से अपनी गाड़ी तक आई होगी। भीगते हुए लॉक खोला होगा। दरवाजा अपेक्षाकृत जोर से बंद किया होगा और ट्रैफिक सिगनलों पर ध्यान दिए बिना आगे वढ़ी जा रही होगी···

कॉफी खत्म हुई, तो मग नीचे रख दिया। गहरा कश···सिगरेट के वारीक कागज का सुलग उठना···पहला छल्ला—लहराकर आगे बढ़ता हुआ···दूसरा उसका पीछा करता···तीसरा दूसरे के पीछे··· तब तक पहले का दूसरे के साथ एकाकार होने लगना—ऊपर से मिलन, फिर नीचे से दरार···

टनन् टनन्···एकदम चौंका। कान वर्षा के साथ गुंथे ठहराव के ऐसे अभ्यस्त हो चुके थे कि यह व्यतिक्रम चिंगारी की छुअन-सा अचानक बौखला गया।

'हैलो!' ममा ने रिसीवर उठाया। सुना। फिर 'प्लीज होल्डऑन' के साथ मेज पर रख दिया। दरवाजे की ओर मुंह कर मद्धिम हांक लगाई, 'विदो···'

पानी की निरंतर टप-टप में पुकार गुम होती-सी लगी—जैसे बौछार के एक छोर से टकराई, और उसमें जज्ब हो गई। वे उठी और भीतर चली गई। कुछ क्षणों बाद अपनी जगह आकर बैठी और किताब उठा ली। लगभग पीछे-पीछे विंदो आई—करथई पाइपिंग का सोने वाला गुलाबी सूट पहने। एक हाथ से बिखरे बालों को सभालती। चाल में तनिक उत्सुक व्यग्रता, जो फोन आने पर स्वतः आ जाती है।

आज सभी लोग घर में हैं। अप्रत्याशित वर्षा से मजबूर किए गए।

यकायक आसमान के बायें सिरे पर बिजली चमकी और तालाब में गिरे पत्थर के समान उसकी थिरकती तरंगों-सी अनुगूंजें हर दिशा में बिखरती चली गईं। प्रतिध्वनि की अंतिम कड़ी मद्धिम व अधूरी, जैसे बीच में ही कट गई हो। पल-भर के लिए जैसे सब कुछ स्तब्ध हो गया—प्रतीक्षारत, फिर बारिश का एकरस तीखापन गहराता-सा महसूस हुआ।

उन तमाम बौछारों की स्मृतियां मन में उभर आईं, जो इस घर में देखी हैं। शाम को खिड़की के सामने सलाखें थामे हुए। आधी रात को बिस्तर में मुंह छिपाए। दोपहर को बाहर निकलते-निकलते। दीवारों, पेड़-पौधों को भिगोती हुई बारिश। खाली घर के सूनेपन को और गहरा बनाती हुई बौछार...निरंतर टप् टप् टप्...अकेलेपन व उदासी को तीखा करती। तब बार-बार लगता था कि क्या सारी जिंदगी ऐसे ही बीत जाएगी? क्या सुबह से शाम तक इसी तरह अपने-आप से ही एकालाप करता रहूंगा?

'फिर क्या हुआ? तुम तो कह रहे थे कि पूरी शाम वहीं रहना पड़ेगा।' विंदो के स्वर में ऐसी मृदुता थी कि ध्यान बरबस उधर चला गया। वह घुटने पर घुटना रखे, हत्थे पर कुहनी टिकाए आत्मलीन थी—चेहरा तिरछा, होंठों पर नर्म स्मित, पूरे व्यक्तित्व में कमनीय स्निग्धता। उन क्षणों में विंदो बहुत मोहक लगी। उसकी वह छवि जैसे फ्रेम में जड़ा एक आकर्षक, दुर्लभ चित्र—निकट के लोगों की पहुंच के परे। विंदो इस समय एक आवाज से जुड़ी है, वह अपने चेतना-रंध्रों से एक स्वर को आत्मसात कर रही है, वह इस क्षण अपने व्यक्तित्व

की सबसे सुकुमार, सबसे अंतरंग सतह पर जीवित है। हंसा। टेलीफोन एड्स टु इंटीमेसी—संवेदना का सबसे जीवंत स्तर पाने के लिए—हंसा···

लगा, जैसे जित्तन वहीं कहीं खड़े हैं—गाउन की जेबों में हाथ डाले। अवाक्। स्तब्ध। जैसे बिंदो के इस रूप को पहचान नहीं पा रहे हों। आंखों में पीड़ित विस्मय की छाया लिए।

बिंदो ने अधखुली आंखों से रिसीवर रख दिया। उसके दूसरे हाथ ने आसपास कुछ टटोला। शायद सोमू को। बिंदो अभी चेतना के उसी स्तर पर रहना चाहती है। वह बच्चे को बांहों में भर लेगी और आंखें बंद किए उसके गले पर होंठ टिकाए रहेगी···

बिंदो सजग हुई। एक बार आसपास देखा। फिर मुड़कर झपाक से ममा की गोद में सिर रख दिया···हाथों की मुट्ठियां बंद। घुटने पेट तक खींचे हुए। अबोध बच्ची के समान। गुड़ीमुड़ी।

कुछ देर चुप्पी रही, जिसके दौरान ममा ने हत्थे पर रखी अपनी किताब का पन्ना पलटा।

'तुम मुझसे नाराज हो।' बिंदो बोली।

ममा के चेहरे पर शायद वह भाव आया, जो जब्त की कोशिश प्रकट करता है—कि हटाओ, छोड़ो!

'मैं कुछ नहीं कर सकती। मैं विवश हूं।' बिंदो के स्वर में हताशा थी, 'मैं अपनी भावनाओं का कुछ नहीं कर सकती।' बिंदो सीधी हुई और सोफे के दूसरे कोने में सिमट गई। घुटनों को बांहों में घेरे। बाल आधे चेहरे पर बिखरे हुए।

'जित्तन को पता है?'

'अभी नहीं।'

'कभी तो चलेगा।'

बिंदो ने अवहेलना से मुंह बिचकाया।

'जित्तन इसे किस तरह से लेंगे?'

'किसी भी तरह से लें, मुझे क्या है!'

'तुम्हारे लिए कोई अंतर नहीं पड़ता?' ममा ने बिंदो को देखा।

बिंदो कुछ पल सोचती रही। सामने देखते हुए। फिर धीरे-धीरे बोली, 'मुझे उस आदमी से ऐसी वितृष्णा हो गई है कि···'

अधूरे वाक्य की टूटी नोक मौन में चुभने लगी—पैनी। तीखी।

'कहीं तुम यह वितन को चोट पहुंचाने के लिए ही तो नहीं कर रही?'

बिंदो फिर कुछ पल सामने देखती रही, 'शुरू-शुरू में मुझे भी ऐसा ही डर लगा था।'

'और देख लो कुछ दिन। तुम भावना की दृष्टि से बहुत अस्थिर हो।'

बिंदो ने तीखी, बेबाक निगाह से ममा को देखा, 'तुम तो ऐसे बोल रही हो, जैसे···?'

बिंदो ने कुछ ठहरकर सांस ली, 'खैर, छोड़ो!'

'क्यों? कहो न?' ममा का स्वर समतल था, पर फिर भी उसमें चुनौती की चमक थी। जैसे लुकाछिपी का खेल अरसे से चल रहा था और अब संयोग से बिल्कुल साफ होने का अवसर आ गया हो।

'क्या तुम कह सकती हो कि तुम अस्थिर नहीं हो, भावना की दृष्टि से? तुम्हारे और पापा के बीच जो तनाव मैंने देखा है, उसमें तो यही लगता रहा है कि···'

'तुलना इसलिए बेकार है, क्योंकि तुम्हारे पापा कम-से-कम अपने खुद के घर में रहते थे। उनके पांवों के नीचे जमीन ठोस थी और फिर इसके अलावा···' फिर अधूरेपन की वही तेज नोक। लगा कि यह विराम सहानुभूति का नहीं, बात की संजीदगी के परिणामों पर विचार का नहीं, बल्कि और तेज धार देने का है।

'सोमू अभी कच्ची उम्र में है।'

'क्यों? तुम्हारे लिए गुल्लू नहीं था?'

'तुम भावनात्मक रूप से सोमू पर बहुत निर्भर हो।'

'तुम नहीं थीं?'

'मैं सिर्फ अपने पर निर्भर करती थी।' सपाट आवाज। बेलौस। विराम में लगातार रिमझिम की एकरस लहरी। हवा का एक तेज

झोंका, जो बौछार के कोण को थरथराकर निकल गया।

बिंदो ममा की ओर देखती रही। धीमे स्वर में बोली, 'एक बात पूछूं ?'

ममा ने सवाल की निगाह से देखा।

'तुम पापा के प्रति फेथफुल रही हो ?'

फिर वक्फा। लंबा। गहरा।

'नहीं।'

ऑटोरिक्शा घर के सामने रुका, तो बरामदे की रोशनी जली हुई थी। सोचा, शायद खाने के बाद ये लोग बाहर बैठ गए होंगे।

उतरकर मीटर देखा। पैसे दिए।

कुंडा खोलते-खोलते एक धुन कानों में पड़ी। देखा, तो कोने में आरामकुर्सी पर जित्तन थे।

'हलो !' उन्होंने हांक लगाई, 'बड़ी देर कर दी आज ?' और झुककर ट्रांजिस्टर बंद कर दिया।

'हां, जरा एक फिल्म का प्रोग्राम बन गया था।'

'कौन-सी ?' उन्होंने सामने की कुर्सी से पांव समेट लिए।

नाम बताया।

वे तनिक मुस्कुराए, 'कौन था साथ ? गर्ल-फ्रेंड ?'

'हां !' कुछ रुककर पूछा, 'खाना खा लिया ?'

'हां ! बच्चे को खिलाना था, इसलिए…'

'और आप क्या करते रहे ?'

पल भर चुप्पी रही।

'मैं ?' वे विवशता की हंसी हंसे, 'शाम सोमू को जरा घुमाने ले गया था। बस !'

लमहे-भर को वे निगाह नहीं मिला सके। पछतावा हुआ कि क्यों पूछा। पर कई बार अनजाने ही हो जाता है। ढले-ढलाए वाक्य। मालूम नहीं पड़ता कि जुबान से कब फिसल गए।

'अच्छा, मैं जरा नहा लूं। भूख भी लगी है।'

'हां, चलो। मैं भी उधर ही आता हूं।'

सिर पर पानी की धार। तेज। एकरस…माथे के भारीपन को आई स्पर्शों से सहलाती। आंखों की क्लांति को हलके-हलके धोती… त्वचा पर पानी की ठंडक धीरे-धीरे जज्ब होती हुई।

दिन-भर के दुनियावी एक्सपोजर के बाद का नहाना, जो सुबह के नहाने से ज्यादा स्फूर्ति देता है और उससे ज्यादा जरूरी मालूम होता है।

कुर्ते की आस्तीन मोड़ता हुआ बरामदे में आया, तो जित्तन मेज पर थे। खबरें सुन रहे थे।

'क्या खबर है?' कुर्सी खींचते हुए पूछा और गिलास में पानी भरने लगा।

'वही इज़राइल-पैलेस्टाइन! यहां के सिपाही वहां घुस गए, वहां के गुरिल्ला यहां घुस आए।'

प्लेट में थोड़ी सब्जी डाली। कटोरदान से एक रोटी ली।

जित्तन ने एक गहरी सांस खींची, 'छोटे बच्चों को मार दिया यार, ये अच्छा नहीं किया।'

वे सिर झुकाए थे। एकटक नीचे देख रहे थे। वहां सोमू की गेंद पड़ी थी।

पहला पैग मैंने दस मिनट में ही खाली कर दिया। नलिनी ने अभी दो घूंट लिए थे और राजवंत ने पांच-छह। संकेत से बेटर को दूसरा पैग लाने को कहा और सिगरेट जलाने लगा।

'कुछ स्नैक्स तो नहीं चाहिए?' राजवंत ने पूछा और नलिनी की ओर देखा।

'हां, वेफर्स और फ्राइड फिश।'

दूसरा पैग दस मिनट में खत्म करने के बाद लगा कि मैं वहां के वातावरण के समतल आ रहा हूं। चेतना की सतह पर बुलबुले-से फूटते महसूस हुए, जो मेरे लिए नशे की पहली अवस्था है…बत्तियों में उलझा पारदर्शी रेशमी पर्दा और रुक-रुककर दीवारों व आकृतियों को

वहुत हलकी डगमगाहट…

संगीत का ऊंचा शोर था—विचित्र ध्वनियां, जिनमें लय-ताल कुछ नहीं था। उन्मादी स्वर, जो निरंकुश, बौराये हाथियों-से इधर-उधर दौड़ते चीत्कार कर रहे थे। इस पर क्षण-क्षण जलने-बुझने वाली प्रकाश-व्यवस्था, अजीब रूपाकारों वाला वह आलोक कांच-जड़ी दीवारों में प्रतिबिंबित होकर पल-पल एक नई कौंध को जन्म देता जा रहा था। उस रोशनी में कुछ भी निरंतर गतिमान नहीं था—एक क्षण गति, एक क्षण ठिठक, एक क्षण गति, एक क्षण ठिठक…

नलिनी के होंठ हिले। मुझे लगा कि मैंने सुना है, यह सुपरसॉनिक म्यूजिक है।

'क्या ?' मैंने हैरानी से कहा।

वह आगे झुककर बोली, थोड़े ऊंचे स्वर में, 'यह इलैक्ट्रॉनिक म्यूजिक है।'

'ओह…'

'मेरी रूममेट के कजिन ने एक टेप भेजा था—शिकागो से। करीब एक घंटे का। उफ, पूरा सुने, तो आदमी पागल हो जाए।'

'तुमने पूरा सुना है ?' राजवंश ने अर्थभरी मुस्कान से पूछा।

नलिनी हंस दी, 'मैं माने लेती हूं कि मैं पागल हूं।'

लाल-गुलाबी फूलों की जापानी नायलॉन साड़ी। पोनी टेल।

कुछ देर चुप्पी रही। फिर राजवंश बोला, 'कितना शोर है यहां।'

उसने मेरी ओर देखा, तो मैंने कमजोर समर्थन किया, 'हूं…'

'क्यों आते हैं लोग ऐसे शोर में ?'

'कभी-कभी अच्छा लगता है।'

'क्यों ?' यह राज था।

ध्यान से उसकी ओर देखा। सोचा कि शायद उसे कुछ चढ़ गई है।

'जिन लोगों के पास बहुत खामोशी होती है न…'

नजर मिलते ही नलिनी हठात रुक गई। फिर बायीं ओर देखने लगी, जहां बारटेंडर ड्रिंक तैयार कर रहा था। नलिनी के चेहरे पर

हल्की झेंप थी, जैसे उसका कोई गोपनीय रहस्य प्रकट हो गया हो। लगा कि मुझे कुछ कहना चाहिए, बिल्कुल भिन्न और विपरीत।

'क्या यह सच है राज साहब कि वर्ल्ड चिल्ड्रन्स डे के लिए अपना डिजाइन मंजूर होने के चांसेज हैं?'

राजवंश एकदम सतर्क हो गया, 'तुमने कहां से सुना?'

'यूनेस्को के एक ऑफिसर से मिलना हुआ था।'

'तो?'

'उन्होंने बताया कि आपकी एंट्री कमेटी को पसंद आई है। मतलब एक तरह से सेमी-फाइनल पार कर गई है।'

राज कुछ क्षणों विचारलीन ढंग से गिलास थपथपाता रहा। फिर बड़ी-सी मुस्कान के साथ नलिनी की तरफ मुड़ा, 'याद है नलिनी वो डिजाइन?'

'हूं...' वह किसी की ओर नहीं देख रही थी।

'यार, मेहनत बहुत की थी उस पर। यों बिल्कुल सादा स्कैच है। एक छोटा-सा भिखारी बच्चा—हाथ का कटोरा फैलाए...कैन्वस पर जैसे बस, उसका चेहरा है और चेहरे में भी जैसे बस, उसकी आंखें हैं... क्या है उसकी आंखों में? भूख? उम्मीद?...सिर्फ रोटी की नहीं। वो कौन-सी चीज है, जिसका अनुरोध कर रही हैं उसकी आंखें?' उन्होंने गिलास से एक घूंट भरा। तनिक मुस्कुराये, 'आत्मरति कभी मेरी आदत नहीं रही। लेकिन इस तस्वीर के बारे में बिल्कुल निश्चित हूं कि वो एक पोयम है।'

मेरी निगाह सामने नाचते जोड़ों पर थी। तेज लय की ऊंची धुन। एक-दूसरे को काटते हुए आकृतियों के रंग। पल-भर के लिए आंखें मुंदीं और वही दृश्य जैसे ७० एम० एम० व सिनेमास्कोप के आयामों में दूर तक फिसलता चला गया...

जलती-बुझती रोशनी में नृत्यलीन जोड़ों की गति हरएक पल संहित होती जा रही थी। यानी आपेंडी सामने। पिछला हिस्सा। युवक के दोनों हाथ उसकी कमर पर। युवती की दोनों बाहें युवक की गर्दन को घेरे। युवक उसके कपोल पर होंठ टिकाए। आंखें बंद...

बहुत हलकी डगमगाहट…

संगीत का ऊंचा शोर था—विचित्र ध्वनियां, जिनमें लय-ताल कुछ नहीं था। उन्मादी स्वर, जो निरंकुश, बौराये हाथियों-से इधर-उधर दौड़ते चीत्कार कर रहे थे। इस पर क्षण-क्षण जलने-बुझने वाली प्रकाश-व्यवस्था, अजीब रूपाकारों वाला वह आलोक कांच-जड़ी दीवारों में प्रतिबिंबित होकर पल-पल एक नई कौंध को जन्म देता जा रहा था। उस रोशनी में कुछ भी निरंतर गतिमान नहीं था—एक क्षण गति, एक क्षण ठिठक, एक क्षण गति, एक क्षण ठिठक…

नलिनी के होंठ हिले। मुझे लगा कि मैंने सुना है, यह सुपरसॉनिक म्यूजिक है।

'क्या ?' मैंने हैरानी से कहा।

वह आगे झुककर बोली, थोड़े ऊंचे स्वर में, 'यह इलैक्ट्रॉनिक म्यूजिक है।'

'ओह…'

'मेरी रूममेट के कजिन ने एक टेप भेजा था—शिकागो से। करीब एक घंटे का। उफ, पूरा सुने, तो आदमी पागल हो जाए।'

'तुमने पूरा सुना है ?' राजवंश ने अर्थभरी मुस्कान से पूछा।

नलिनी हंस दी, 'मैं माने लेती हूं कि मैं पागल हूं।'

लाल-गुलाबी फूलों की जापानी नायलॉन साड़ी। पोनी टेल।

कुछ देर चुप्पी रही। फिर राजवंश बोला, 'कितना शोर है यहां।'

उसने मेरी ओर देखा, तो मैंने कमजोर समर्थन किया, 'हूं…'

'क्यों आते हैं लोग ऐसे शोर में ?'

'कभी-कभी अच्छा लगता है।'

'क्यों ?' यह राज था।

ध्यान से उसकी ओर देखा। सोचा कि शायद उसे कुछ चढ़ गई है।

'जिन लोगों के पास बहुत खामोशी होती है न…'

नजर मिलते ही नलिनी हठात रुक गई। फिर बायीं ओर देखने लगी, जहां बारटेंडर ड्रिंक तैयार कर रहा था। नलिनी के चेहरे पर

की ओर बढ़ गया।

कुछ पल चुप्पी रही। एक बार नलिनी ने इस ओर देखा। लगा कि कुछ तो बोलना ही होगा।

'आपने अभी तक पहला भी खत्म नहीं किया?' उसके गिलास की ओर संकेत किया।

वह मुस्कुराई, 'मैंने तो यों ही ले लिया था—साथ देने को।'

तत्क्षण जुबान पर ढला-ढलाया वाक्य आएगा, आप किस-किस चीज में साथ दे सकती हैं? यह कमबख्त कौन-सी भट्ठी है अंदर, जो बराबर लोहा गर्म रखती है कि जब जिस घड़ी जरूरत पड़े···

निगाह कुछ बचाकर उसकी तरफ देखा। वह वैसी नहीं लगी, जैसी दफ्तर में अपनी मेज पर लगती थी—दूर और सर्द। इस बदली जगह पर जैसे उसके व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि भी बदल गई थी। वह भली और आकर्षक लगी—रोजाना के विपरीत। शायद इसीलिए आंखें बस, तीन-चार क्षणों के लिए उसके वक्ष पर चिपकी रह गईं। वह तनिक संकुचित हो उठी। पीछे की ओर सीधे होते हुए उसने सैकिंड के सौवें भाग के लिए एक नामालूम-सी हताश दृष्टि अपने उभारों पर डाली। उस पल लगा कि क्यों कोई-कोई भारतीय लड़की अपने सीने पर एक झीना-सा आवरण होने पर आश्वस्त अनुभव करती है। क्षण-भर के लिए आशंका हुई कि शायद वह किसी ढीठ युवती की तरह दो-टूक ढंग से उद्धत हो जाएगी—लो, देख लो। पर वह चेहरा तिरछा किए कलाई का स्ट्रैप पीछे खिसकाने लगी—कुछ इस भाव से, जैसे इस पूर्ण नारीत्व के लिए वह जिम्मेदार नहीं।

अपनी शर्मिंदगी को ढकने और उसे इस स्थिति से उबारने के लिए मुझे फिर कुछ कहना था।

'एक बात पूछूं?' यकायक उसने सीधे मेरी ओर देखा।

'हूं?'

'ठीक-ठीक बताएंगे?' अब उसके स्वर में अबश हठ था।

मेरे अंदर कहीं कुछ पिघलने लगा। नलिनी, जो चुप रहती है, जो बहुत अकेली है, जो अपनी मर्यादा में रहती है, अगर वह इस बिंदु

'अभी वो एंब्लैम नहीं देखा तुमने, जो इंडस्ट्रियल एग्ज़ीवीशन के लिए तैयार हो रहा है ?'

इनकार में सिर हिलाया।

'आइडिया बुनियादी तौर पर नलिनी का है। मैंने यहां-वहां कुछ फिनिशिंग जरूर की है।'

'आप लोग तो कुछ ले ही नहीं रहे।' नलिनी ने प्लेट मेरी तरफ खिसकाई, तो एक टुकड़ा उठा लिया।

राज ने एक घूंट लिया, 'दरअसल हमारे यहां एक बहुत बड़ी मुश्किल यह है कि···'

धुन की समाप्ति पर कुछ क्षणों का विराम आया। दो जोड़े खंडित होकर बाईं तरफ की मेजों की ओर बढ़े। धानी पल्लू की लहराहट के साथ युवती सीधी हुई। युवक की किसी बात का उसने उत्तर दिया। फिर उसका हाथ पकड़े हुए दाईं ओर को···उस एक क्षण वह चेहरा दूर तक कौंधता चला गया—जैसे एक कातर पुकार हो, बिदोऽऽ···'

केवल एक पल के लिए, अगले ही क्षण तेज धुन शुरू हो गई। वही मदोन्मत्त स्वर, जैसे हाथ में जलती मशालें लिए बौराई लयवती थिरकनें हों।

'जब तक सैक्शन में पूरी हॉर्मनी नहीं है, तब तक किसी भी तरह की बड़ी कामयाबी की बात नहीं सोची जा सकती। हमारे अच्छे नतीजे देना सिर्फ टीम-वर्क के जरिए ही···'

'क्या यहां हम ऑफिस को डिस्कस करने के लिए ही आए हैं ?' नलिनी के स्वर में विक्षोभ था।

राजवंश पल-भर ठिठका रहा। फिर हंस दिया, 'ओफ्फो, मैं तो भूल ही गया था कि आप लोग डैडीकेटिड नहीं हैं, दफ्तर के बाहर भी आपकी जिंदगी है। अच्छा, अब मैं कुछ नहीं बोलूंगा, पर शर्त यह है कि तुम दोनों को बात चलानी पड़ेगी।' सिगरेट ऐश-ट्रे में रगड़कर वह उठ खड़ा हुआ और खोज-भरी दृष्टि से यहां-वहां देखा।

'बाहर निकल कर—दाईं तरफ।'

'थैंक्यू।' उसने कुछ झुककर मुझसे कहा और लंबे कदमों से दरवाजे

की ओर बढ़ गया।

कुछ पल चुप्पी रही। एक बार नलिनी ने इस ओर देखा। लगा कि कुछ तो बोलना ही होगा।

'आपने अभी तक पहला भी खत्म नहीं किया ?' उसके गिलास की ओर संकेत किया।

वह मुस्कुराई, 'मैंने तो यों ही ले लिया था—साथ देने को।'

तत्क्षण जुबान पर ढला-ढलाया वाक्य आएगा, आप किस-किस चीज में साथ दे सकती हैं ? यह कमबख्त कौन-सी भट्ठी है अंदर, जो बराबर लोहा गर्म रखती है कि जब जिस घड़ी जरूरत पड़े···

निगाह कुछ बचाकर उसकी तरफ देखा। वह वैसी नहीं लगी, जैसी दफ्तर में अपनी मेज पर लगती थी—दूर और सर्द। इस बदली जगह पर जैसे उसके व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि भी बदल गई थी। वह भली और आकर्षक लगी—रोजाना के विपरीत। शायद इसीलिए आंखें बस, तीन-चार क्षणों के लिए उसके वक्ष पर चिपकी रह गईं। वह तनिक संकुचित हो उठी। पीछे की ओर सीधे होते हुए उसने सैकिंड के सौवें भाग के लिए एक नामालूम-सी हताश दृष्टि अपने उभारों पर डाली। उस पल लगा कि क्यों कोई-कोई भारतीय लड़की अपने सीने पर एक झीना-सा आवरण होने पर आश्वस्त अनुभव करती है। क्षण-भर के लिए आशंका हुई कि शायद वह किसी ढीठ युवती की तरह दो-टूक ढंग से उद्धत हो जाएगी—लो, देख लो। पर वह चेहरा तिरछा किए कलाई का स्ट्रैप पीछे खिसकाने लगी—कुछ इस भाव से, जैसे इस पूर्ण नारीत्व के लिए वह जिम्मेदार नहीं।

अपनी शर्मिंदगी को ढकने और उसे इस स्थिति से उबारने के लिए मुझे फिर कुछ कहना था।

'एक बात पूछूं ?' यकायक उसने सीधे मेरी ओर देखा।

'हूं ?'

'ठीक-ठीक बताएंगे ?' अब उसके स्वर में अवश [redacted] था।

मेरे अंदर कहीं कुछ पिघलने लगा ! नलिनी, जो चुप रहती है, जो बहुत अकेली है, जो अपनी मर्यादा में रहती है, अगर वह इस बिंदु

'अभी वो एंब्लम नहीं देखा तुमने, जो इंडस्ट्रियल एग्जीबीशन के लिए तैयार हो रहा है ?'

इनकार में सिर हिलाया।

'आइडिया बुनियादी तौर पर नलिनी का है। मैंने यहां-वहां कुछ फिनिशिंग जरूर की है।'

'आप लोग तो कुछ ले ही नहीं रहे।' नलिनी ने प्लेट मेरी तरफ खिसकाई, तो एक टुकड़ा उठा लिया।

राज ने एक घूंट लिया, 'दरअसल हमारे यहां एक बहुत बड़ी मुश्किल यह है कि…'

धुन की समाप्ति पर कुछ क्षणों का विराम आया। दो जोड़े खंडित होकर बाईं तरफ की मेजों की ओर बढ़े। धानी पल्लू की लहराहट के साथ युवती सीधी हुई। युवक की किसी बात का उसने उत्तर दिया। फिर उसका हाथ पकड़े हुए दाईं ओर को…उस एक क्षण वह चेहरा दूर तक कौंधता चला गया—जैसे एक कातर पुकार हो, विदोऽऽ…'

केवल एक पल के लिए, अगले ही क्षण तेज धुन शुरू हो गई। वही मदोन्मत्त स्वर, जैसे हाथ में जलती मशालें लिए बौराई लयवती थिरकनें हों।

'जब तक सेक्शन में पूरी हॉर्मनी नहीं है, तब तक किसी भी तरह की बड़ी कामयाबी की बात नहीं सोची जा सकती। हमारे अच्छे नतीजे देना सिर्फ टीम-वर्क के जरिए ही…'

'क्या यहां हम ऑफिस को डिस्कस करने के लिए ही आए हैं ?' नलिनी के स्वर में विक्षोभ था।

राजवंश पल-भर ठिठका रहा। फिर हंस दिया, 'ओफ्फो, मैं तो भूल ही गया था कि आप लोग डैडीकेटिड नहीं हैं, दफ्तर के बाहर भी आपकी जिंदगी है। अच्छा, अब मैं कुछ नहीं बोलूंगा, पर शर्त यह है कि तुम दोनों को बात चलानी पड़ेगी।' सिगरेट ऐश-ट्रे में रगड़कर वह उठ खड़ा हुआ और खोज-भरी दृष्टि से यहां-वहां देखा।

'बाहर निकल कर—दाईं तरफ।'

'थैंक्यू।' उसने कुछ झुककर मुझसे कहा और लंबे कदमों से दरवाजे

की ओर बढ़ गया।

कुछ पल चुप्पी रही। एक बार नलिनी ने इस ओर देखा। लगा कि कुछ तो बोलना ही होगा।

'आपने अभी तक पहला भी खत्म नहीं किया?' उसके गिलास की ओर संकेत किया।

वह मुस्कुराई, 'मैंने तो यों ही ले लिया था—साथ देने को।'

तत्क्षण जुबान पर ढला-ढलाया वाक्य आएगा, आप किस-किस चीज में साथ दे सकती हैं? यह कमबख्त कौन-सी भट्ठी है अंदर, जो बराबर लोहा गर्म रखती है कि जब जिस घड़ी जरूरत पड़े···

निगाह कुछ बचाकर उसकी तरफ देखा। वह वैसी नहीं लगी, जैसी दफ्तर में अपनी मेज पर लगती थी—दूर और सर्द। इस बदली जगह पर जैसे उसके व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि भी बदल गई थी। वह भली और आकर्षक लगी—रोजाना के विपरीत। शायद इसीलिए आंखें बस, तीन-चार क्षणों के लिए उसके वक्ष पर चिपकी रह गईं। वह तनिक संकुचित हो उठी। पीछे की ओर सीधे होते हुए उसने सैकिंड के सौवें भाग के लिए एक नामालूम-सी हताश दृष्टि अपने उभारों पर डाली। उस पल लगा कि क्यों कोई-कोई भारतीय लड़की अपने सीने पर एक झीना-सा आवरण होने पर आश्वस्त अनुभव करती है। क्षण-भर के लिए आशंका हुई कि शायद वह किसी ढीठ युवती की तरह दो-टूक ढंग से उद्धत हो जाएगी—लो, देख लो। पर वह चेहरा तिरछा किए कलाई का स्ट्रैप पीछे खिसकाने लगी—कुछ इस भाव से, जैसे इस पूर्ण नारीत्व के लिए वह जिम्मेदार नहीं।

अपनी नामिंदगी को ढकने और उसे इस स्थिति से उबारने के लिए मुझे फिर कुछ कहना था।

'एक बात पूछूं?' यकायक उसने सीधे मेरी ओर देखा।

'हूं?'

'ठीक-ठीक बताएंगे?' अब उसके स्वर में अवश हठ था।

मेरे अंदर कहीं कुछ पिघलने लगा! नलिनी, जो चुप रहती है, जो बहुत अकेली है, जो अपनी मर्यादा में रहती है, अगर वह इस बिंदु

तक आ जाए, तो···

'बतलाने की बात होगी, तो जरूर बतलाऊंगा।'

तभी दरवाजे पर राजवंश दिखलाई दिया। नलिनी हठात चुप हो गई, 'बाद में···' तनिक रुककर जोड़ा, करुण मुस्कान से, 'मेरे साथ यही होता है। मैं ठीक समय पर कुछ नहीं कह पाती।'

और यकायक उठ खड़ी हुई। मैंने ऊपर नहीं देखा।

किसी भूली हुई बात की तरह बिंदो की एक झलक पाने की याद थी। सामने के धूप-छांही अंधेरे-उजियारे में उसे ढूंढ़ने की कोशिश की। सामने के दूसरे काउच पर वह थी—एक बांह के दायरे में। वे बिल्कुल सटे बैठे थे। पल-पल जलते-बुझते प्रकाश में इतना देखा कि बिंदो बड़ी उमंग से कुछ बतला रही थी। बीच में एक सिगरेट निकाली गई, तो पीछे नीम-अंधेरे में खड़े अटेंडेंट ने लपककर जले लाइटर की लौ उससे छुआ दी। तभी दो थिरकते जोड़ों ने सामने आ काउच ढक लिया।

मोती महल में अब भी चार-पांच मेजें भरी हुई थीं। आर्डर देने के बाद हम प्रतीक्षा कर रहे थे।

'काफी देर तक लोग बाहर रहते हैं।' नलिनी आसपास देखते हुए बोली।

राज मुस्कुराया, 'काफी लोग कन्फर्म होते रहते हैं।'

नलिनी एकदम हंस दी—स्वच्छ, युवा खिलखिलाहट, जैसे बड़े दबाव के साथ फव्वारे में पानी की ऊंची फुहार। फिर सहसा सतर्क हुई और संभलने लगी।

'मैं काफी दिनों से कहना चाहता था—आपकी हंसी बहुत अच्छी है। आप कुछ ज्यादा क्यों नहीं हंसतीं?'

वह क्षण भर मेरी ओर देखती रही। फिर बोली, 'इतने मौके कहां मिलते हैं।'

टक्सी दिल्ली गेट से मुड़कर जफर मार्ग पर आ गई। सड़क सूनी थी। नियॉन साइन और एकाकी ट्रैफिक सिगनल जल-बुझ रहे थे।

'कैसा अजीब लगता है इस सड़क पर। दिन में इतनी चहलपहल रहती है और अब···' नलिनी धीरे-धीरे बोली—बाहर देखते हुए।

डिगडिग···डाडा···डिगडिग···डाडा···मेरे सिर के भीतर वही एकरस, एकताल धुन बजनी शुरू हो गई। खिड़की का कांच ज़रा-सा खोला, छुरी की धार-सी तिरछी, पैनी हवा की फांकें चेहरे पर महसूस कीं। नवंबर की हवा। तभी डीज़ल इंजिन की लंबी सीटी सुनाई दी। ह्यूडिंग ब्रिज से कोई ट्रेन जा रही थी। अंधेरे में जहां-तहां रोशनी के चौखटे खड़े थे। पहियों की छकपक के नीचे से हम गुज़र गए।

'हॉस्टल तक ये आवाज़ें आती हैं ?'

'हां। पहले तो कई बार घबराहट होने लगती थी। पर अब आदत पड़ गई है।'

तिराहे पर हरी बत्ती के लिए कुछ क्षण रुकने के बाद टैक्सी भगवानदास रोड पर मुड़ने लगी।

'यहीं रोक लीजिए, अगले गेट पर।'

रुकने के बाद मौन में कुछ पल इंजन की घरघराहट भरी रही। फिर नलिनी ने दरवाज़ा खोला। हलकी मुस्कान से कहा, 'ओके! थैंक्यू वेरी मच!'

'यह तो मुझे कहना चाहिए। इट वाज़ सच ए लवली ट्रीट···'

चौकीदार हड़बड़ाकर गेट खोलने लगा था।

'गुडनाइट···' दूधिया रोशनी में पलकें झपकाते हुए उसने कहा।

'गुडनाइट···'

कांच पूरा खोला और सिर पीछे टिकाकर आंखें मूंद लीं। हलके हिचकोलों की एकरस ताल में एक के बाद एक हवा के झोंके थपेड़े मारते रहे। सिर के भीतर वही राग शुरू होने लगा। उस लोहानी डिगडांग के बावजूद मुझे याद आया कि नलिनी कुछ पूछना चाहती थी। पर क्या ?

टैक्सी के निकल जाने पर कुंडा खोला—हलके हाथों से। आसपास यकायक कोई कुत्ता भौंक उठा। फिर उसकी व्यग्र भर्त्सना कुछ क्षणों

बाद अभ्यास के एकरस ताल पर आ गई। बरामदे की सीढ़ियां उतरकर बगल के अहाते में आया। जेब से चाबी निकाली। दरवाजा खोला। बंद किया। कमरे में आया। लैंप जलाया। जूते उतारे। कपड़े बदले। चप्पलों में पांव डाल बाथरूम तक आया। बेसिन का टैप खोला और ठंडे पानी के छींटे ताबड़तोड़ मुंह पर मारे।

बाहर निकलकर अपने कमरे की ओर बढ़ते हुए पैर सहसा ठिठक गए। गलियारा पार करके कोने तक आया। दरवाजे पर कान लगाए। अंदर बिल्कुल खामोशी थी। किवाड़ पर धीरे-से ठक्-ठक् की। कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। हलके हाथों से दरवाजा खोला। पर्दा लहराकर एक तरफ सिमट गया। जीरो पावर के बल्ब की रोशनी बहुत बारीक गुबार की तरह कमरे के शून्य में भरी थी। सोमू गहरी नींद में था—घुटने पेट से लगाए हुए।

बिंदो का बिस्तर खाली था।

सोमू के पैंताने से कंबल निकालना चाहा। एक सिरा उसके पंजे के नीचे दबा था। हलके झटके से खींचा, तो सोमू कुनमुनाया। पर अगले ही क्षण सांस फिर समतल हो गई। कंबल खोलकर उसके ऊपर फैला दिया।

निगाह अनजाने ही बिंदो के बिस्तर पर ठिठकी रह गई। उस पर मोटे हैंडलूम का बैडकवर था—छोटी-सी गुड़िया के मोटिफ वाला। पैंताने हाउसकोट रखा था। सिरहाने बैडकवर का कोना उलट गया था, जिससे सफेद चादर व सेमल वाले तकियों का एक कोना दिखाई दे रहा था। बिस्तर के दोनों ओर बिंदो की एक-एक जोड़ी चप्पल पड़ी थीं। तिपाई पर जग व गिलास।

एक नजर सोमू को देख निःशब्द बाहर निकला और आहिस्ता-से दरवाजा बंद कर दिया···

दरवाजे पर थपकी पड़ी। फिर जित्तन ने अंदर झांका।

'आइए।' मैंने हलकी मुस्कान से अखबार एक ओर रख दिया।

'बड़ी देर तक सोते रहे आज। मैं तीन चक्कर लगा चुका हूं।'

उन्होंने कुर्सी का मुंह इस तरफ घुमा लिया।

'हां, रात को देर से सोया था, इसलिए...' और बोलते-बोलते अटक गए।

'अच्छा, कहां का प्रोग्राम था?'

'यों ही, एक मुलीग कन्फर्म हुआ था, तो...' सिगरेट का पैकेट उनकी ओर बढ़ाते हुए कहा, 'लीजिए।'

उन्होंने एक सिगरेट जलाई। तीली ऐश-ट्रे में फेंकी। फिर एक लंबा कश लिया। विचारपूर्ण स्वर में बोले, 'गुल्लू, सब कुछ उलझ गया है।'

कुछ ठहरकर कहा, 'हां।'

उन्होंने एक गहरी सांस ली, 'पता नहीं था कि नौकरी न होने से इतनी दूर तक...' सही शब्द के लिए कुछ अटके, 'असर पड़ेगा।' कुछ क्षण नीचे देखते रहे, जैसे अपने अतीत में झांक रहे हों, 'डाइरेक्टर से उलझकर बड़ी गलती कर गया मैं! अगर माफी मांग लेता, तो सस्पेंशन का आर्डर रद्द हो जाता, पर तब तो मेरा दिमाग सातवें आसमान पर था...अब इस इन्क्वायरी की रिपोर्ट अभी एक साल न आए, दो साल न आए...और फिर इस बात का भी क्या भरोसा कि फैसला मेरे हक में ही होगा।' उन्होंने सिर पीछे टिकाकर आंखें बंद कर लीं। गहरी सांस ली, 'कहां से कहां आ गया मैं!'

खाने के बाद देर से उपन्यास पढ़ रहा था। लैंप का छोटा, गोलाकार प्रकाश। थोड़ी-थोड़ी देर के बाद पन्नों की सरसराहट।

धीरे-धीरे आहटें बंद होती गईं। अंधेरे और खामोशी से संबंध घना प्रगाढ़ होता गया। मैरी रो रही थी। बिस्तर पर, औंधी, घुटने ऊपर समेटे। गर्दन के पास का ऊपरी हुक खुल गया था। बालों की लटें चेहरे पर एक तरफ बिखरी हुईं। एक मुट्ठी चादर पर—अधखुली, असहज। दूसरी तकिये को भींचे हुए—तनी। कसी। इबारत के पार उसकी सिसकियां सुनाई दीं। आंसू की पतली लकीर होंठों के किनारे तक ढलक आई। मैरी रो रही है। मैरी को कोई चुप नहीं क

'मैरी रो रही है। मैरी को कोई चुप नहीं कराता।' जोर से कहा।

भड़ से दरवाजा खुला और पर्दे को हटाते हुए एक हाथ की चूड़ियां खनकीं। एक-डेढ़ सैकिंड···जब वाहर से आने वाला नीम-अंधेरे का अभ्यस्त होता है।

'हैलो···' विदो ने उमंग से कहा और आरामकुर्सी पलंग के पास खींच ली। खुशवू की एक मद्धिम थिरकन के साथ वैठी, सैंडिल से झटके से पैर निकाले और लिहाफ में डाल दिए। हाथ लैदर-कोट की जेव में, 'वड़ी सर्दी है।' एक हाथ तत्क्षण वाहर निकाला और पैकेट की ओर संकेत किया, 'एक सिगरेट···'

सामने वढ़ाए गए पैकेट से सिगरेट निकालकर मुंह में दवाई। तीली की लौ में लंवी सांस के साथ गोलाकार सुलगन। लंवे कश के साथ पीछे टिक गई और आंखें वंद किए धीरे-धीरे धुआं छोड़ा—व्हिस्की की वहुत हलकी गंध के साथ। पलकें खुलीं। और दृष्टि मिलने पर हलकी मुस्कान।

उस एक पल में सव कुछ स्पष्ट था—विदो की पूरी शाम। कसे आलिंगन। गहरे, लंवे चुंवन। चेहरे पर तृप्ति की परत।

'तुम वाहर नहीं निकले आज ?'

इनकार में सिर हिलाया।

'क्या पढ़ रहे हो ?'

किताव का कवर दिखाया।

'ओह···' फिर एक कश। फिर हलकी चुटकी से राख का झाड़ा जाना। कानों के वड़े-वड़े कुंडल हिले। फिर स्थिर होने लगे।

'कुछ पूछोगे नहीं ?' विदो यकायक आरोप के स्वर में वोली।

उसके चेहरे का भाव देखकर हंसी आने को हुई, 'जरूर···'

'वताऊं, मैं कहां से आ रही हूं ?'

किताव एक तरफ रखते हुए कहा, 'हां, वताओ।'

नलिनी ने मेज पर खट्-खट् की, 'आपका फोन···'

उठा। रिसीवर लिया, 'हैलो···'

उधर से एक पुरुष-स्वर ने पूछा, [illegible]?'

'जी।'

'मैं कौशल घोष बोल रहा हूँ, [illegible] एडवर्टाइजिंग। मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। [illegible] निकाल सकेंगे ?'

'मेरे पास समय ही समय है। बताइए।'

गेट के सामने आते ही ठिठक गया। वरामदे में जित्तन वैठे थे। आंखें नीचे झुकाए, ध्यानमग्न। निःशब्द भीतर आया। कुंडा वंद किया और विना किसी आहट के पोर्च की सीढ़ियों तक पहुंचा। वहीं से दिखाई दे गया, मेज पर सॉलिटेयर के पत्ते लगे थे···

कुछ क्षण वैसे ही खंभे के पीछे ठिठका रहा। ऐश-ट्रे से उठती धुएं की लकीर। मेज पर कोहनियां रखे, एक हथेली पर ठुड्डी टिकाए विचारलीन जित्तन। पीछे लंवी दीवार। सूना वरामदा। आसपास का सन्नाटा। लॉन पर ढलती धूप की जर्दी। और घर की वह निस्तब्धता। बियाबानी। जो घर के लोगों के साथ अपने संवंधों से जुड़ी है, पर उनके न होने पर भी जैसे घर में रेंगती रहती है—घिनौने, लिजलिजे सांप जैसी।

वे अनगिनत दोपहरें याद आईं, जब इसी तरह जित्तन के पास वैठा करता था। वह अंतरंगता ऐसी ही उदास, अकेली घड़ियों के साथ ही से तो पनपी थी···एक से दो वजना, दो से तीन, तीन से चार··· धूप के पोर्च से फिसलकर गेट तक पहुंचने की यंत्रणा हमने साथ-साथ झेली थी। हम साथ थे, शायद इसीलिए यह कचोट कुछ कम हो जाती थी। घड़ी की सुइयों का चूहों की तरह मन को कुतरना···

अंदर कहीं वह अनुभूति जीवित हुई। घूंट-सा भरकर निगल लिया।

जित्तन ने आत्मलीन ढंग से हाथ आगे वढ़ाया और यकायक दिमाग में किरन-सी कौंधी—पार्टनर···पार्टनर इन सॉलिटेयर। ऊपर सजावटी लैटरिंग, जित्तन जैसा एक विजुअल, नीचे मोर के इनसिग्निया के साथ मोटे अक्षरों में—पीकॉक प्लेइंगकार्ड्स···

'अरे तुम ? छुट्टी जल्दी हो गई क्या ?'

हलकी मुस्कान से आगे वढ़ा और वगल की रिलैक्सिंग कुर्सी पर फैल गया, 'मूड नहीं था कुछ।' साथ ही पैकेट वढ़ाया, 'लीजिए···।'

पैर स्टूल पर रख सिर पीछे टिकाया। हथेली वंद पलकों पर। थकान की मंद तंद्रा।

'तुम वहुत ठीक मौके पर आए।'

'अच्छा।'

'मैं एक बेईमानी की चाल चलने वाला था।'

सायास आँखें खोलीं। जितन के चेहरे पर साँप की मुस्कान थी।

'चलो, एक बाजी हो जाए।'

'जरूर।'

बिल्कुल ठीक छह बजे मोकॅम्स में घुसा। कुछ क्षण ठिठका रहा। किसी ओर से संकेत नहीं मिला। शायद कौशल अभी आए नहीं हैं, मन में सोचा। इस अंतर्द्वंद्व में एकाध कदम चला ही था कि बाहर टहलूँ या यहीं कोई खाली मेज देखूँ, कि 'वे साहब आपको बुला रहे हैं' के साथ एक वेटर ने पीछे संकेत किया।

निकट पहुँचने पर कौशल उठ खड़े हुए। मुस्कान के साथ हाथ मिलाया, 'तशरीफ रखिए।'

पल भर मौन रहा।

'सिगरेट ?'

उनके इंडिया किंग्ज की एक सिगरेट ली। लाइटर की नीली लौ। क्लिक के साथ। एक लंबा कश।

'आप क्या पसंद करेंगे ?'

'कॉफी।'

'और ?'

'कुछ भी।'

वे वेटर की ओर मुड़े, 'कोल्ड कॉफी, हैंबर्गर, चीज़-कटलेट।'

एक सिगरेट सुलगाई। लंबा कश। फिर आहिस्ता-आहिस्ता धुआँ निकालते हुए कहा। हल्की मुस्कान से, 'आपको इस तरह मेरे फोन से कुछ ताज्जुब तो हुआ होगा।'

अनिश्चित-सा मुस्कुरा दिया।

'मैं पिछले कुछ दिनों से आपसे मिलना चाहता था।' उँगलियों का पल भर टाई की गांठ की दुरस्ती का जायजा लेना। एक उंगली में बी० के० अक्षरों वाली अंगूठी। कोट के लैपेल पर चमकता सुनहरा क्लिप, 'मैंने एडवर्टाइजिंग पर आपका प्रोग्राम देखा था। मुझे आपकी

एप्रोच बहुत सुलझी हुई लगी।'

लगा कि जर्रानवाजी के अंदाज में कुछ कहना चाहिए। पर उनका भाव संजीदा था और तल्लीन भी।

'आप ये एडवर्टाजिंग में कब से हैं ?'

'करीब तीन महीने से।'

'इससे पहले आप कहां थे ?'

हलकी मुस्कान से कहा, 'कहीं नहीं।'

'क्या मतलब ?' वे कुछ उलझन से बोले, 'क्या यह आपका पहला जॉब है ?'

'जी।'

'इंटरेस्टिंग...' उन्होंने ऐश-ट्रे में राख झाड़ी, 'यानी आप सीधे कॉलेज से निकले हैं ?'

'एक तरह से।'

'यानी ?'

'एस० एस० सी० के बाद कॉलेज नहीं गया। और एस० एस० सी० का भी मैं आखिर में फार्मली इम्तहान नहीं दे पाया था।'

उन्होंने क्षण भर मेरी ओर देखा, 'आइ सी...'

वेटर के आ जाने से सिलसिला टूट गया। क्रॉकरी की आहट के बीच डायज की ओर देखने लगा, जहां क्रूनर हलकी लचक से माइक थामे खड़ी थी। आर्केस्ट्रा की प्रारंभिक गरमाहट। थोड़ा हिलने से उसकी नेकचेन के पेंडेंट की थिरक। और नीचे वह क्रॉस बड़े गोलाकार सिक्के में बदला, जिसके दोनों ओर पीले चौखाने की गर्माहट वाले उभार। उनकी उत्तेजक छुअन का अहसास कपोलों की त्वचा पर सरसराया और नसों में रक्त का संचार बढ़ता-सा महसूस हुआ। अनायास ही निगाह घड़ी पर पहुंची—मधु इस समय कालेज के समारोह में होगी। कसमसाती उंगलियां कुर्सी व जांघों के बीच में भींच लीं।

'लीजिए।'

हैंबर्गर का एक टुकड़ा काटा और कप में चम्मच चलाने लगा। अब वह हलकी-सी बेचैनी महसूस हुई, जो अपरिचित व्यक्ति के साथ

मौन में होती है—जानने की बिल्कुल प्रारंभिक प्रक्रिया में।

'मैंने पिछले दिनों बड़े चाव से आपकी कॉपियां देखी हैं। हाल में यू० पी० में आपके फर्टिलाइजर के पोस्टर भी देखे। पिछले हफ्ते खास तौर से आमफअनी रोड और पूना रोड गया—आपकी दोनों होर्डिंग देखने के लिए।' उन्होंने हलकी उंगलियों से रैपर ऊपर खिसकाया, हैमबर्गर का टुकड़ा काटा, चबाया। फिर कॉफी का घूंट लिया, 'मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि ऐसी सामग्री इस शहर में पहली बार सामने आई है। आपकी चीजें सादी, एकदम ध्यान खींचने वाली और असरदार हैं। सच्चाई तो यह है कि वे कॉपी-राइटिंग को लगभग कला के स्तर तक ले जाती हैं।'

एक नामालूम-सी निगाह अपनी उंगलियों पर डाली, अब कंपकंपाहट नहीं थी। और अव्यवस्थित करने वाली अपरिचय की बेचैनी भी नहीं। तो क्या प्रशंसा की तीन पंक्तियों से इस व्यक्ति के साथ तादात्म्य का सूत्र जुड़ने लगा? लगा कि अनायास ही चेहरे पर मुस्कान आ गई। फिर अवसर का ध्यान आते ही तत्काल गंभीर हो गया।

'अगर आप अनुमति दें, तो मैं मतलब की बात पर आ जाऊं?' वे मुस्कुराए, 'हंसा के बारे में शायद आपको कुछ बतलाने की आवश्यकता नहीं होगी। मैं सिर्फ इस बात की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहूंगा कि कॉपी-राइटिंग के प्रति आपका दृष्टिकोण हमसे बहुत मिलता-जुलता है···जैसा कि मैंने अभी कहा, आपकी कॉपियां व्यावसायिक उद्देश्य को पूरा करते हुए भी उससे कहीं अलग, कहीं ऊंची हैं। अगर मैं गलत नहीं समझा, तो उनसे एक रचनात्मक बेचैनी प्रकट होती है। स्वाभाविक है कि ऐसा रुख अपनाने के कारण आप कंपनी से कुछ सुविधाओं की अपेक्षा रखते हैं—बल्कि मैं तो यह कहना चाहूंगा कि वे आपका अधिकार है। जैसे एक कामचलाऊ पुस्तकालय, सभी प्रमुख देशी-विदेशी पत्रिकाएं और अलग केबिन।' उन्होंने रूमाल का एक कोना बड़ी नफासत से होंठों के इर्द-गिर्द फिराया। जार उठाकर अपना कप भरा। क्रीम उड़ेली। एक चम्मच चीनी मिलाई। बड़े स्वाद से दो-तीन घूंट लिए, 'अगर कभी आपका बंबई, हमारे हैड ऑफिस में आने का संयोग

हो, तो आप स्वयं देख सकते हैं कि हमारे यहां कॉपी-राइटिंग सैल का, क्या महत्त्व है।' एक सिगरेट सुलगाई। धीरे-धीरे धुआं छोड़ते हुए विचारपूर्ण स्वर में कहा, 'यह स्वीकार करते हुए मुझे शर्मिंदगीभरा दुख है कि चाहते हुए भी यहां के कार्यालय में ऐसा नहीं हो सका··· बात आ गई है, तो कहना ही पड़ेगा, क्योंकि आत्मालोचन विकास-यात्रा का एक अनिवार्य पड़ाव है—यह किसी विदेशी लेखक ने कहा है।' हलकी मुस्कान से एक कश लिया, 'यों तो हमारी यहां की कॉपी-राइटिंग यूनिट में दो लोग हैं—काफी अनुभवी। पर किसी के पास—मुझे कहते हुए सचमुच दुख होता है—वह दृष्टि नहीं है, जो हमारी महत्त्वाकांक्षाओं के अनुरूप हो···जो कॉपी-राइटिंग को शुष्क, सतही व्यावसायिक दल से निकालकर उसे साहित्यिक-सांस्कृतिक परंपरा के साथ जोड़ सके···जैसे आपकी वह होर्डिंग—मीरजी जाएं कहां दिल्ली की गलियां छोड़कर···'

उन्होंने चुटकी के साथ राख ऐश-ट्रे में डाली। मेज से कोहनियां हटाकर पीछे को हो गए, ताकि वेटर को चीजें हटाने में सहूलियत हो, 'फिर एक बात यह भी है कि अब वह समय आ गया है, जब हमें तेजी से भारतीय भाषाओं की ओर झुकना है। कुछेक कैंपेन तो ऐसी हैं, जिन्हें सिर्फ प्रादेशिक भाषाओं में ही चलाना होगा। जैसे बीज, खाद। इस सिलसिले में अंग्रेजी से जो चीजें अनूदित होती हैं, वे सिर्फ खाना-पूरी बनकर रह जाती हैं। जरूरत इस बात की है कि ऐसी सामग्री सीधे उसी स्थानीय भाषा में तैयार की जाए और उस आइडिया की जड़ें लोकजीवन में हों। उदाहरण के लिए आपका वह पोस्टर—मीरा के गिरिधर गोपाल···या वह लीफलैट, जिसमें नथ, झूमरी, चूनर जैसी ग्रामीण शब्दावली का प्रयोग किया गया है। यह अप्रोच बहुत असरदार है, क्योंकि यह कंज्यूमर को एकदम हिट करती है।'

उन्होंने सिगरेट ऐश-ट्रे में मसल दी। कोहनियां मेज पर रख दोनों पंजे आपस में फंसाए, 'अब मैं फिर मतलब की बात पर आता हूं। हालांकि शुरुआत यही समझकर की थी, लेकिन अभी समझ में आया कि वह सिर्फ भूमिका बनकर रह गई···देखिए, भाषा भी कैसी फिसलन-

भरी है! हम समझते हैं कि हम चल रहे हैं, लेकिन पाते हैं कि दरअसल हैं वहीं, जहां पहला कदम रखा था···इसीलिए तो मैं कहता हूं कि भई, भाषा का सतीत्व तो सिर्फ कुछ भावनाशील हाथों में सुरक्षित है। बाकी लोग तो उसके साथ बस, बलात्कार करते हैं।'

आतिथेय हंसता है, तो मुस्कुराहट कर्त्तव्य बन जाती है। पर मुझे यह व्यक्ति अच्छा लगने लगा था—विशेषकर उसका बोलना। हालांकि ढंग किताबी था, पर प्रवाहयुक्त और आत्मीयताभरा।

'अब तक आप समझ गए होंगे कि मेरा संकेत किस ओर है। तो अब उसे बिना किसी लागलपेट के भी कह दूं। हम चाहते हैं कि आप हमारे कॉपी-राइटिंग सैल में चीफ बनकर आ जाएं।' उन्होंने क्षण भर मेरी ओर देखा। फिर नई सिगरेट जलाई। चेहरे पर हलकी मुसकान आ गई, 'अब उस एंबैरेसिंग चीज का जिक्र हो सकता है, जो सिक्योरिटी प्रेस, नासिक से छपकर आती है।' कुछ क्षणों की चुप्पी रही, 'यह पूछने की धृष्टता के लिए आप मुझे क्षमा करेंगे कि अभी आपका क्या वेतन है?'

वस्तुतः मौन के साथ ही मेरा दिमाग जल्दी-जल्दी काम करने लगा था, 'तुम्हें दुनियादार बनना है।' मन-ही-मन सख्ती से कहा, 'माथे की नमी और चेहरे की तमतमाहट के साथ इस असार संसार में गुजर नहीं होनी।' दोनों पंजे फिर जांघों के नीचे भींच लिए, 'सब साले खुदगर्ज हैं। समझे?'

'छह सौ।' मैंने जैसे अपने स्वर का टेप सुना। और अगले पल ही लगा कि भूल हो गई। पर अब तो कह दिया था। अपनी लापरवाही व निर्लिप्तता प्रकट करने के लिए सिगरेट जलाई और निःसंकोच भाव से दो-तीन कश खींचे। बीच में कृत्रिम दिलचस्पी से कूलर की थिरकन देखी। एक बार मन में आया कि संगीत की धुन पर हलकी सीटी भी मार दी जाए, पर फिर लगा कि ज्यादा हो जाएगा।

'देखिए, आपके सामने मैंने अपने पत्ते बिल्कुल शुरू से ही खोल दिए हैं। आपको देखते ही मुझे लगा था कि आपके चेहरे पर जो कमउम्री व मासूमियत है, वह मुझे विवश कर देगी···वरना मेरा ढंग दूसरा ही

रहा होता।' वे मेरी ओर देखते हुए जरा मुस्कुराए। और उस पल चेहरे की लकीरों व आंखों की छाया में उस कुटिल दुनियादारी की झलक दिखाई दे गई। लगा कि मैं सिहर उठा। आत्मनिर्भरता के तीखेपन से मुंह का स्वाद खराब होने लगा, 'हूं, दुनियादार बनने चले हो! अरे, तुम्हें तो ये जल्लाद सब्जी की तरह काटकर फेंक देंगे—साले, बैंगन कहीं के!'

'हम फोर फिगर्स से आपका वेतन शुरू करेंगे। यों एक साल के प्रोवेशन का नियम है, पर मैं देखूंगा, शायद उसे कुछ रिलेक्स किया जा सके। एक महीने की तनख्वाह के बराबर बोनस हो जाता है। इसके अलावा और सारे बेनीफिट हैं ही।' पल-भर ठहरकर मेरी प्रतिक्रिया देखनी चाही, 'अभी मैंने आपसे जिन सुविधाओं की बात की, वे तो खैर, हम आपको देंगे ही, लेकिन उनके अलावा जिन और चीजों की जरूरत आप महसूस करें, उनका प्रबंध करके हमें खुशी होगी। यह कहने की जरूरत नहीं कि किसी भी प्रतिभाशाली और महत्त्वाकांक्षी नौजवान के लिए यह बहुत अच्छा अवसर है।' उन्होंने कुछ क्षण मेज पर माचिस की टक्-टक् की। फिर मंद स्मित से मेरी ओर देखा, 'तो क्या विचार है आपका?'

लगा, जैसे आंखों में कोहरा भर गया है—सब अस्पष्ट। धुंधला। अटककर कहा, 'आप सोचने के लिए कुछ समय देंगे?'

'जरूर, मेरी तरफ से आप एक हफ्ता ले लीजिए।'

'नहीं, इतना नहीं। मैं तीन-चार दिन बाद आपको फोन करूंगा।'

'बहुत बेहतर।' वे मुस्कुराए और वेटर को बिल के लिए संकेत किया।

सेंट्रल फाउंटेन की धारों की एकरस, समान फेंक बहुत ऊंची थी—हल्के पीले प्रकाश में चमकती हुई। बल्कि आलोकित तरलता जल-जैसी मालूम नहीं देती थी—उन लंबी, ऊंची सफेद सिल्लियों का पुंज जैसे अपने-आप में एक ठोस रचना था। पर बिल्कुल पास जाने पर उसकी नन्ही-नन्ही, नामालूम-सी फुहियों का आभास हुआ। एक अमूर्त नमी

चहरे को छूने लगी।

जेबों में हाथ डाले धीमे कदमों से फव्वारे का एक चक्कर लगाया। कुछेक जोड़े व परिवार यहां-वहां बिखरे हुए थे। चलते हुए कभी किसी वाक्य का टुकड़ा, कभी किसी हंसी की खनक, कभी किसी किलकारी की थिरकन···

अंधेरा गहरा हो गया था। हवा मद्धिम, कुछ ठंडी। हौले-हौले कानों में गुनगुनाती, फिर यकायक बिना चेतावनी के मुंह पर थपेड़े मार देती।

आसपास सड़क और दुकानों की रोशनियां चमक रही थीं। नियॉन-साइन लयबद्ध ताल से जल-बुझ रहे थे। और लगातार ट्रैफिक की एक-रस गूंज।

'यह सब क्या हो रहा है दोस्त ?' एकालाप का टेप चलने लगा, 'आखिर यह सब क्या हो रहा है ? क्या मतलब है इस अनहोनी का ? क्या प्रमाणित होने के लिए पिछला मौका काफी नहीं था ? अब दूसरी बार फिर परीक्षा होगी ? फिर नसों का तनाव ? फिर आत्मविश्वास का संकट···'

'हूं, उस चीज का संकट, जो तुममें कभी थी ही नहीं।'

नेहरू पार्क के सुंदर तराश वाले टीले व ढलाव। यहां से वहां तक फैली, आंखों को ठंडक देती हरीतिमा। दिसंबर की ढलती दोपहर में हलके पीलेपन से घुलीमिली।

'एक बात पूछूं ?' ऊन व सलाई वाली बिंदो की लगातार चलती उंगलियां पल को ठिठकीं।

'हूं ?' सिर तनिक घुमाया, तो आकाश के चौखटे में बिंदो का चेहरा सिमट आया।

'दो-तीन शामों से तुम लगातार घर पर ही हो। क्या बात है ?' वाक्य शुरू मुस्कान से हुआ था, पर अंत तक आते-आते संजीदापन आ गया, बल्कि कुछ आशंका मिली व्यग्रता भी।

जुड़ी हथेलियां सिर के नीचे लगाए, लेटे-लेटे एक नजर बिंदो को

रहा होता।' वे मेरी ओर देखते हुए जरा मुस्कुराए। और उस पल चेहरे की लकीरों व आंखों की छाया में उस कुटिल दुनियादारी की झलक दिखाई दे गई। लगा कि मैं सिहर उठा। आत्मनिर्भरता के तीखेपन से मुंह का स्वाद खराब होने लगा, 'हूं, दुनियादार बनने चले हो! अरे, तुम्हें तो ये जल्लाद सब्जी की तरह काटकर फेंक देंगे— साले, बैंगन कहीं के!'

'हम फोर फिगर्स से आपका वेतन शुरू करेंगे। यों एक साल के प्रोबेशन का नियम है, पर मैं देखूंगा, शायद उसे कुछ रिलेक्स किया जा सके। एक महीने की तनख्वाह के बराबर बोनस हो जाता है। इसके अलावा और सारे बेनीफिट हैं ही।' पल-भर ठहरकर मेरी प्रतिक्रिया देखनी चाही, 'अभी मैंने आपसे जिन सुविधाओं की बात की, वे तो खैर, हम आपको देंगे ही, लेकिन उनके अलावा जिन और चीजों की जरूरत आप महसूस करें, उनका प्रबंध करके हमें खुशी होगी। यह कहने की जरूरत नहीं कि किसी भी प्रतिभाशाली और महत्त्वाकांक्षी नौजवान के लिए यह बहुत अच्छा अवसर है।' उन्होंने कुछ क्षण मेज पर माचिस की टक्-टक् की। फिर मंद स्मित से मेरी ओर देखा, 'तो क्या विचार है आपका?'

लगा, जैसे आंखों में कोहरा भर गया है—सब अस्पष्ट। धुंधला। अटककर कहा, 'आप सोचने के लिए कुछ समय देंगे?'

'जरूर, मेरी तरफ से आप एक हफ्ता ले लीजिए।'

'नहीं, इतना नहीं। मैं तीन-चार दिन बाद आपको फोन करूंगा।'

'बहुत बेहतर।' वे मुस्कुराए और बेटर को बिल के लिए संकेत किया।

सेंट्रल फाउंटेन की धारों की एकरस, समान फेंक बहुत ऊंची थी— हल्के पीले प्रकाश में चमकती हुई। बल्कि आलोकित तरलता जल-जैसी मालूम नहीं देती थी—उन लंबी, ऊंची सफेद सिल्लियों का पुंज जैसे अपने-आप में एक ठोस रचना था। पर बिल्कुल पास जाने पर उसकी नन्ही-नन्ही, नामालूम-सी फुहियों का आभास हुआ। एक अमूर्त नमी

चहरे को छूने लगी।

जेबों में हाथ डाले धीमे कदमों से फव्वारे का एक चक्कर लगाया। कुछेक जोड़े व परिवार यहां-वहां बिखरे हुए थे। चलते हुए कभी किसी वाक्य का टुकड़ा, कभी किसी हंसी की खनक, कभी किसी किलकारी की थिरकन···

अंधेरा गहरा हो गया था। हवा मद्धिम, कुछ ठंडी। हौले-हौले कानों में गुनगुनाती, फिर यकायक बिना चेतावनी के मुंह पर थपेड़े मार देती।

आसपास सड़क और दुकानों की रोशनियां चमक रही थीं। नियॉन-साइन लयबद्ध ताल से जल-बुझ रहे थे। और लगातार ट्रैफिक की एक-रस गूंज।

'यह सब क्या हो रहा है दोस्त ?' एकालाप का टेप चलने लगा, 'आखिर यह सब क्या हो रहा है ? क्या मतलब है इस अनहोनी का ? क्या प्रमाणित होने के लिए पिछला मौका काफी नहीं था ? अब दूसरी बार फिर परीक्षा होगी ? फिर नसों का तनाव ? फिर आत्मविश्वास का संकट···'

'हूं, उस चीज का संकट, जो तुममें कभी थी ही नहीं।'

नेहरू पार्क के सुंदर तराश वाले टीले व ढलाव। यहां से वहां तक फैली, आंखों को ठंडक देती हरीतिमा। दिसंबर की ढलती दोपहर में हलके पीलेपन से घुलीमिली।

'एक बात पूछूं ?' ऊन व सलाई वाली बिंदो की लगातार चलती उंगलियां पल को ठिठकीं।

'हूं ?' सिर तनिक घुमाया, तो आकाश के चौखटे में बिंदो का चेहरा सिमट आया।

'दो-तीन शामों से तुम लगातार घर पर ही हो। क्या बात है ?' वाक्य शुरू मुस्कान से हुआ था, पर अंत तक आते-आते संजीदापन आ गया, बल्कि कुछ आशंका मिली व्यग्रता भी।

जुड़ी हथेलियां सिर के नीचे लगाए, लेटे-लेटे एक नजर बिंदो को

देखा, 'मतलब ?' और सायास मुस्कान दबाई । पीली ट्राउजर । पीली-कत्थई धारियों वाला हाइ-नैक स्वेटर ।

'मतलब तुम समझते हो ।' उसके चेहरे पर तरल सरोकार था, 'तुम्हारी दोस्त कहां है ?'

'मधु हफ्ते भर के लिए बंबई गई है—एक शादी में ।' पैकेट से एक सिगरेट निकाली । पहली तीली बुझ गई । दूसरी से लौ निकलते ही कश लिया । गोलाकार किनारों का सुलग उठना । धुएं के बगूले का मुंह से होते हुए भीतर तक उतर जाने का अहसास···

'तभी तुम इस तरह गुमसुम हो ।' विदो यों मुस्कुराई, जैसे चोरी पकड़ ली हो ।

बाईं ओर अशोका होटल की चिमनी से धुएं की पतली-पतली लकीरें उठ रही थीं । थोड़ी समांतर ऊंचाई तक एकसाथ चलतीं, फिर हवा के थपेड़ों से इधर-उधर छितरा जातीं ।

'उसे मिस कर रहे हो ?'

'बहुत ।' बोलने के लिए सोचने की जरूरत नहीं हुई । जैसे गेंद दीवार पर लगे और टप्पा खाकर पीछे उछल जाए । और बांहें पल भर को कसमसा उठीं । बंद आंखों के अंधेरे में उस जिस्म की रेखाएं उभरीं —ऊष्म स्पर्श की कमनीय गर्माहट की कल्पना···

आंखें खोलते हुए करवट ली । धूप, कोलाहल और आसपास के लोग । भीतर सुई छिदने की-सी अनुभूति कम होने लगी ।

मेरी आवाज में जाने क्या था कि विदो देखने लगी । तनिक झुकी और नर्म हथेली माथे पर रख दी, 'गुल्लू···'

कहीं कुछ हुआ—दरवाजा खटका, कोई शीशा टूटा या कुछ गिरा··· और नींद टूट गई । आंखें खुलीं—अंधेरा । अंदर-बाहर कुछ क्षण के लिए चेतना की सतह पर सब कुछ धुंधला था । फिर याद आया—अपना नाम, अपना घर, आसपास के लोग और पूरी जिंदगी के ताने-बाने ।

धीरे-धीरे जागने के अहसास का पूरा होना । खिड़की के चौखटे में अंधेरे का घोल बहुत गाढ़ा । कुछ देर वैसे ही पड़ा रहा । फिर करवट ।

सोच का अचेतन, अनियंत्रित सिलसिला, एक-दूसरे को डंसते-काटते बिंब···

तेज़ी से चलते चार पहिये—राजपथ की चिकनी सतह पर फिसलते हुए। अचानक लाल बत्ती होने पर ब्रेक का पिसटता दबाव···कतारों की चमकती-बुझती रंगीनियां—फ़िलिप्स, एटलस, शाहिबसिंह···शीशों के बंद होने की झनकदार खट् के साथ लिफ़्ट का सघन उठाव। छह अंकों का नंबर डायल करने की व्यग्र घर्र-घर्र के बाद व्यस्त होने की एकरस चीख···

ठंडी सांस के साथ फिर करवट। तकिये के नीचे हाथ डालकर घड़ी देखी—दो-पच्चीस!

कुछ देर बाद उठा। चप्पलों में पांव डाले। दरवाज़े की सिटकनी खोली। बरामदे से उतरकर नीचे आ गया।

सब कुछ मूक। निस्तब्ध। मकान में आधी रात की ख़ामोशी की गंध। बाग में उस सात्त्विक नीरवता की महक, जो इसी रात में स्वतः घुलीमिली रहती है। हल्की हवा से फूल-पत्तियों व पौधों के हिलने में निश्छल ख़ामोशी की प्रतीति।

घास पर उतरने पर नमी का अहसास। कुछ कदम यहां-वहां चलने पर हल्की आहट से कीड़ों की निरंतर गुनगुन का यकायक थमना। कुछ क्षण, जिनमें मौन और भी स्थिर हो जाता है—पानी की ठहरी सतह के समान। फिर कंकड़ फेंके जाने-सी एक अकेली झंकार, और इर्द-गिर्द से अनेकानेक गूंजें दूर तक फैलती जाने वाली हिलोर की तरह मुखरित होतीं···

ऊपर तारों की मद्धिम टिमटिमाहट। एक कोने में पीली-सी फांक की उजास। अनिद्रा से क्लांत आंखों को ऐसी रातें कैसी लगती हैं··· उजली सफ़ेदी से दीप्त···

ऐसी रातों को किसी लेखक ने 'सफ़ेद रातों' की संज्ञा दी थी।

खट-खट हुई, तो निगाह उठाई। मलिनी ने फ़ोन की ओर इशारा किया।

उठा, रिसीवर थामा, 'गुलशन···'

पल भर बाद धीमा, मृदु स्वर सुनाई दिया, 'हैलो, कैसे हो तुम ?'

अंदर हलकी झनझनाहट हुई, 'ठीक ! कब आई तुम ?'

'कल रात ।'

क्षण भर विराम ।

'शाम कुछ कर रहे हो ?'

'नहीं ।'

'मुझे नीरू को कुछ शापिंग कराने ले जाना है। उसके बाद मिलोगे ?'

'हूं···'

'आफिस से कुछ पहले निकल सकते हो ? फिर नीरू के लिहाज से देर हो जाएगी ।'

'अच्छा ।'

'तो चार बजे । रैंविल में···।'

'ठीक ।'

दो-तीन क्षण प्रतीक्षा करता रहा कि वह रिसीवर रख दे, तो मैं रखूं लेकिन जब वहां से क्लिक सुनाई नहीं दी, तो रिसीवर रख दिया। क्रेडिल पर उंगलियों के छूते ही लगा था कि नलिनी एकटक इसी ओर देख रही है। निगाह मिलते ही अव्यवस्थित हो गई। और हड़बड़ाहट में शार्पनर उठाकर नुकीली पेंसिल को ही फंसा लिया।

समान अंतर के कदमों से अपनी मेज तक आया। सामने तीन-चार पत्रिकाएं खुली थीं। बैठा। मेज की बाहर निकली निचली दराज पर जूते का कोना टिकाया। थोड़ा पीछे टिक गया। व्हाट एल्स लुक्स सो स्मूथ एंड टाइमलैस थ्रू ग्लास—जानीवाकर।—थाई एयर हॉस्टेस शी नेवर फरगेट्स हाउ इंपोर्टेंट यू आर···फार द मैन विद द मल्टी-फेसेटिड पर्सनैलिटी—ए मैनी-स्प्लैनडर्ड आफ तुकाराम शर्ट्स···

मौन कुछ गहरा लगा। उसमें पिन-जैसी नोकें थीं जो चुभने लगीं।

बाहर जाने पर खुली हवा का जो पहला झोंका आया, तो भला-सा

महसूस हुआ। केवल एक घंटा पहले निकलने पर भी लगा कि अभी ताजगी है। अगर रोजाना की तरह पाँच बजे बाहर आता, तो शायद यही थक लिए जाने की अनुभूति ही बाकी रहती। या इसके पीछे कहीं मधु है?···

धूप थी अभी। शुरू दिसंबर की ऊष्म। पूरी बाँहों व ऊँचे गले के स्वेटर के बावजूद स्वागत के लायक। 'स्टेट्समैन' के स्पाट-न्यूज वाले बोर्ड पर एक अफ्रीकाई देश में रक्तहीन क्रांति की खबर थी। ट्रैफिक का अनवरत कोलाहल और सामने के बस-स्टॉप पर व्यग्र भीड़···

हरी बत्ती होने पर सड़क पार की और 'ग्रीनवेज' के सामने से निकलते हुए रेडियल रोड पर आ गया।

इतने दिनों के बाद अभी मधु मिलेगी। उसकी कमनीय स्मित, उसकी स्निग्ध भाव-भंगिमा। यह स्फूर्ति अपने-आप ही जागी थी या···

सीटी में एक नृत्य-धुन बजानी शुरू की और उसी के अनुरूप तेज चाल पकड़ ली। सामने से आते लोगों के लिए कहीं भी रुके बिना, आड़े-तिरछे होकर जगह बनाता गया। उसी ताल में अपने जूतों की आहट सुनाई देती रही—खट्-खट्-खट्···खट्-खटाखट्-खट···खटखटा-खट खटखटाखट खटाखटाखट···

'रेम्ब्रिस' के बायें गेट से देख लिया कि मधु ऊपरी तल पर है। स्लोप पर चलते हुए हमारी दृष्टि मिली। उसके चेहरे पर हल्की मुस्कान थी। बगल में बैठी नीरू से उसकी बात बीच में कटी, तो मधु की नजर का पीछा करके उसने इस ओर देखा। तब तक मैं एस्प्रेसो प्लांट के सामने से निकलकर उनके पास पहुँच गया था। सामने की कुर्सी पर बैठते हुए नीरू से कहा, 'हैलो···'

नीरू ने मधु की तरफ देखा। फिर मेरी ओर, फिर नीचे मेज की तरफ देखते हुए कहा, 'हैलो···' और कुर्सी मधु के थोड़े पास खिसका ली।

जाने हुई नीरू को पहली बार देख रहा था। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में अबोध कौतूहल था। नाक-नक्श बहुत तीखे, मधु के समान।

'तुम क्या लोगे?' मधु ने मेरी ओर देखा।

'कॉफी।'

उठा, रिसीवर थामा, 'गुलशन'

पल भर बाद धीमा, मृदु स्वर सुनाई दिया, 'हैलो, कैसे हो तुम ?'

अंदर हलकी झनझनाहट हुई, 'ठीक ! कब आई तुम ?'

'कल रात ।'

क्षण भर विराम ।

'शाम कुछ कर रहे हो ?'

'नहीं ।'

'मुझे नीरू को कुछ शापिंग कराने ले जाना है। उसके बाद मिलोगे ?'

'हूं...'

'आफिस से कुछ पहले निकल सकते हो ? फिर नीरू के लिहाज से देर हो जाएगी ।'

'अच्छा ।'

'तो चार बजे । रैंविल में...।'

'ठीक ।'

दो-तीन क्षण प्रतीक्षा करता रहा कि वह रिसीवर रख दे, तो मैं रखूं लेकिन जब वहां से क्लिक सुनाई नहीं दी, तो रिसीवर रख दिया। क्रेडिल पर उंगलियों के छूते ही लगा था कि नलिनी एकटक इसी ओर देख रही है। निगाह मिलते ही अव्यवस्थित हो गई। और हड़बड़ाहट में शार्पनर उठाकर नुकीली पेंसिल को ही फंसा लिया।

समान अंतर के कदमों से अपनी मेज तक आया। सामने तीन-चार पत्रिकाएं खुली थीं। बैठा। मेज की बाहर निकली निचली दराज पर जूते का कोना टिकाया। थोड़ा पीछे टिक गया। व्हाट एल्स लुक्स सो स्मूथ एंड टाइमलैस थ्रू ग्लास—जानीवाकर।—थाई एयर हॉस्टेस वी नैवर फरगैट्स हाउ इंपोर्टेंट यू आर...फार द मैन विद द मल्टी-फेसेटिड पर्सनैलिटी—ए मैनी-स्प्लैनडर्ड आफ तुकाराम शर्ट्स...

मौन कुछ गहरा लगा। उसमें पिन-जैसी नोकें थीं जो चुभने लगीं।

बाहर जाने पर खुली हवा का जो पहला झोंका आया, तो भला-सा

महसूस हुआ। केवल एक घंटा पहले निकलने पर भी लगा कि अभी ताजगी है। अगर रोजाना की तरह पांच बजे बाहर आता, तो शायद यही घुस लिए जाने की अनुभूति ही बाकी रहती। या इसके पीछे कहीं मधु है ?···

धूप थी अभी। शुरू दिसंबर की ऊष्म। पूरी बाहों व ऊंचे गले के स्वेटर के बावजूद स्वागत के लायक। 'स्टेट्समैन' के स्पाट-न्यूज वाले बोर्ड पर एक अफ्रीकाई देश में रक्तहीन क्रांति की खबर थी। ट्रैफिक का अनवरत कोलाहल और सामने के बस-स्टॉप पर व्यग्र भीड़···

हरी बत्ती होने पर सड़क पार की ओर 'ग्रीनवेज' के सामने से निकलते हुए रेडियल रोड पर आ गया।

इतने दिनों के बाद अभी मधु मिलेगी। उसकी कमनीय स्मित, उसकी स्निग्ध भाव-भंगिमा। वह स्फूर्ति अपने-आप ही जागी थी या···

सीटी में एक नृत्य-धुन बजानी शुरू की और उसी के अनुरूप तेज चाल पकड़ ली। सामने से आते लोगों के लिए कहीं भी रुके बिना, आड़े-तिरछे होकर जगह बनाता गया। उसी ताल में अपने जूतों की आहट सुनाई देती रही—खट्-खट्-खट्···खट्-खटाखट्-खट···खटखटा-खट खटखटाखट खटखटाखट···

'रैम्बिल' के बायें गेट से देख लिया कि मधु ऊपरी तल पर है। स्लोप पर चलते हुए हमारी दृष्टि मिली। उसके चेहरे पर हलकी मुस्कान थी। बगल में बैठी नीरू से उसकी बात बीच में कटी, तो मधु की नजर का पीछा करके उसने इस ओर देखा। तब तक मैं एस्प्रेसो प्लांट के सामने से निकलकर उनके पास पहुंच गया था। सामने की कुर्सी पर बैठते हुए नीरू से कहा, 'हैलो···'

नीरू ने मधु की तरफ देखा। फिर मेरी ओर, फिर नीचे मेज की तरफ देखते हुए कहा, 'हैलो···' और कुर्सी मधु के थोड़े पास खिसका ली।

जागी हुई नीरू को पहली बार देख रहा था। उसकी बड़ी-बड़ी आंखों में अबोध कौतूहल था। नाक-नक्श बहुत तीखे, मधु के समान।

'तुम क्या लोगे ?' मधु ने मेरी ओर देखा।

'कॉफी।'

'हम भी कॉफी।' नीरू बोली।

'और ?'

'हॉट डॉग।' उसने जीभ जरा-सी बाहर निकालते हुए कहा।

वेटर निकट आकर झुका, 'जी ?'

'दो एस्प्रैसो, एक सैट चाय, एक हॉट डॉग और एक प्लेट सैंडविचेज, कौन-से ?'

'चीज।'

मधु कॉट्सवूल का लाल टॉप पहने थी। बाल खुले। कमर की बेल्ट में ब्रास का गोल्ड बकल। आस्तीनों में सफेद मोतियों के कफ-लिंक। कसावट में वक्ष के उभार का रेखांकन हो गया था। हालांकि एक पल के लिए ही उस ओर देखा, लेकिन फिर भी मधु ने वह दृष्टि लक्ष्य कर ली। बगल में नीरू की गोद देखने लगी, जहां रखे छोटे-से पैड पर वह पेंसिल से रेखाएं खींच रही थी।

'शादी कैसी रही ?'

'ठीक।' उसने निगाह उठाई। छोटी-सी मुस्कान।

कुछ पलों का विराम।

'और तुम क्या करते रहे ?

'बस, सुबह-शाम···' एक बार भीतर वे रातें कौंधीं—अकेली, यातनामयी। नीचे देखने के बाद निगाह बचाकर एक बार ऊपर देखा —आंखों का वह भाव, एक ओर तनिक झुके चेहरे की वह भंगिमा।

वेटर ने सामान मेज पर रखा। मधु ने हॉट डॉग नीरू के सामने खिसका दिया और सॉस की बोतल खोलकर उसके हाथ में दे दी।

तीन तरफ से ट्रैफिक चल रहा था। रुक-रुककर वातावरण में कंपकंपाती हॉर्न की पुकारें। यहां बैठने पर लगता है कि जैसे किसी द्वीप पर हूं। नीचे पहियों की व्यग्रता को देखकर कई बार कौतुक भी होता है कि अभी थोड़ी देर पहले हम भी इसी का एक भाग थे। जगह जैसे दूर की वह तटस्थ ऊंचाई है, जहां से नीचे की यह उतावली ओछी लगती है···

'इस पर तुम क्या बनाती हो ?' नीरू से पूछा, सामने खुले पैड की

ओर संकेत करके।

यह मुंह ही मुंह में बोली, 'ड्राइंग।'

'मैं देख सकता हूं?'

नीरू ने मधु की ओर देखा। फिर पैड आगे खिसका दिया।

'यह क्या है?'

'कॉकोच।'

एक पन्ना और उलटा, 'और यह?'

'हाथी मेरे साथी।'

जेब से बालपैन निकालकर पूछा, 'अच्छा, तुम्हारा पोर्ट्रेट बनाऊं?'

हामी में सिर हिलाते हुए उसके चेहरे पर बहुत बारीक मुस्कान आ गई। फिर उसने मधु की ओर देखा, जो कौतुक से मुस्कुराई।

दो-तीन मिनट में पतली-मोटी लकीरों से एक आकृति बन गई। नीरू ने एक उंगली दांतों-तले दबाकर स्केच देखा, ह्हीं-हीं-हीं हीं...' बहुत बारीक हंसी। जैसे कई बाली घुनकी की तन्नाहट की एक लकीर मेज के ऊपर कहीं हवा में थरथराई। देखते-देखते सहसा उसकी आंखें सिकुड़ीं, सजग हुईं, 'यह क्या है मेरी नाक में?'

'सोने की लौंग है, जिसमें सफेद हीरा जड़ा है।'

नीरू ने प्रतिवाद किया, 'यह मैं कहां पहने हूं? यह तो मधु पहने है।'

मधु ने ऊपर की गर्म रोटी उठाई और मेरी प्लेट में रख दी।

एक-दो निवाले खाने के बाद मेरा ध्यान गया, 'तुम?'

'है तो...' उसने हाथ में टोस्ट का छोटा-सा टुकड़ा दिखलाया।

'दी इज डायटिंग।' नीरू अपनी कापी पर पूर्ववत झुकी हुई बोली। एक हथेली पर ठुड्डी टिकाए, विचारलीन मुद्रा में लिखती हुई।

मैं तो यही सोचती हूं कि तुम्हें ज्वायन कर लेना चाहिए।' मधु तनिक रुककर बोली।

'हां, है तो...'

उसने मेरी ओर देखा, 'ऐसी गिरी हुई आवाज में क्यों बोल रहे हो ?'

जरा-सा मुस्कुराकर रह गया।

मधु ने मेरा एक हाथ अपनी हथेलियों में लिया, 'तुम्हें अच्छा नहीं लगता एक बड़ी चुनौती का सामना करना ?'

'मिलेगा क्या ?'

'अपने उचित होने का संतोष।'

'यह कौन-सा मुहावरा है ?'

वह गंभीर रही, 'क्यों ? तुम्हें यह कचोट नहीं होती कभी ?'

मेरी मुस्कान अपने-आप विलुप्त हो गई।

शाहजहां की क्या स्पैलिंग है ?' नीरू ने मुंह ऊपर उठाया, 'जे-ए-एच-ए…?'

'जे-ई-एच-ए…'

नीरू कुछ क्षण चिंतनलीन सामने देखती रही। फिर सिर झटक कर मंद मुस्कान से बोली, 'कमी…'

खिड़कियां बंद। पर्दे खिंचे। कोने में लैंप के निचले गोलाकार किनारों से झरती रोशनी।

'ऐश-ट्रे ?' मधु बोली। मेरे कुछ कहे बिना। और पूरी तरह सवाल नहीं, जैसे बोल कर सोच रही हो।

चलने पर दीवार पर उसकी छायाएं बनीं—सीधी, तिरछी, बौनी-लंबी। एक-दूसरे को काटती हुई।

कोने में रखे सनफ्लावर की एकरस घर्र-घर्र। उष्णता के मंद, थिरकते थपेड़े। बाहर कहीं कुछ नहीं। सिर्फ ठहरा हुआ सन्नाटा।

एक लंबा कश, जो भीतर गहराई तक गया और पल भर के लिए तंद्रिल-सी लहर जगा गया। लिहाफ के अंदर मधु ने करवट बदली और सट गई—आंखें मूंदे, एक हाथ पीठ पर फैला, होंठ गले पर।

गर्माहट की हलकी हिलोर। मछली-सी लहराती हुई।

हलके चुंबन के साथ देखा, मधु के चेहरे पर पूरी सहजता थी—

बिल्कुल निजी एकांत की स्वाभाविकता। आदवस्ति देती अंतरंगता की छाप लिए।

सहसा सामने पिछले साल का एक दिन कौंध गया—दिसंबर का आखिरी हफ्ता। क्रिसमस और नए साल के उत्साह के बीच का एक दिन—कनॉट प्लेस की सजी हुई दुकानें। जगह-जगह विशेष रिडक्शन सेल। कम्यूनिकेशन बिल्डिंग के पोस्ट ऑफिस के सामने वाले अहाते का मौसमी बाजार। 'रेम्बिल' में रंगबिरंगे कुमकुमों के जलते-बुझते स्पार्क। बीच के फव्वारे का प्रफुल्लित उठाव। और एम्प्लीफायरों की गोलाकार शृंखला पर शहनाई की उन्नत, अनवरत धुन—चारों ओर उत्सव के जैसा वातावरण। भीड़ में कुछ अजीब चंचलता। कोलाहल में कुछ विशेष स्फूर्ति···उस समूह में शामिल थी, पर चपलता की तरंगें ऊपर से छू-छूकर निकल जाती थीं, जैसे कटीले तारों से घिरा कोई वर्जित क्षेत्र हो, जहां किसी तरह की ऊष्मा दाखिल नहीं हो सकती···

जनपथ के प्रवाह में कुछ देर लोगों के साथ दबाव के साथ बहना—जेबों में हाथ डाले कनाट प्लेस के भीतरी गोले का एक चक्कर। सामने से आते किसी आत्मलीन जोड़े को रास्ता देना—किसी दुकान की डिस्प्ले विंडो के सामने ठिठक जाना—रॉ सिल्क की चौड़ी लाल टाई, साथ हल्की तिरछी, धनुष के आकार की पिन, नीचे तीर की नोक—जैसे कपालिक···नहीं, सोम नहीं, और न कपोट। केवल उदास कौतूहल···कि अच्छा, लोग सचमुच उत्साह से ये सब खरीदते हैं, पहनते हैं? कोने में शुभ्र, श्वेत रुई के फाहों से बर्फ का आभास और बीच में वैसी ही सफेद दाढ़ी पर मुसकुराता, रबर-फोम के सांता क्लास का चेहरा···

कॉफी हाउस। कुछ देर। सघन कलरव और धुआं। यहां से वहां तक बातों का दबाव। सीलिंग पर ध्वनियों की छटपटाहट।

एक मेज। उस पर तीन अजनबी। एक ईवनिंग न्यूज में तल्लीन। दूसरा डायरी के किसी हिसाब में डूबा। तीसरा मैं, चुपचाप कॉफी के घूंटों के साथ इधर-उधर देखता हुआ। ट्रैवलिंग-एजेंट का काउंटर। पैन-इंडिया का स्टाल। अखबारों व पत्रिकाओं का कोना, आवाजें—

आवाजें, कान जैसे शहद का छत्ता और ये आसपास बराबर हिलते हुए होंठ मधुमक्खियों की तरह।

ईवनिंग न्यूज ने ईवनिंग न्यूज खत्म किया। डायरी की ओर देखा। डायरी व्यस्त थी—शायद कहीं कोई आंकड़ा छूट रहा था···आसपास के उस तीखे कोलाहल के बावजूद अंदर बिंधती पैने अकेलेपन की वह टीस मुद्दत तक नहीं भूली। तब लगा था कि बस, यही तो है अपनी जिंदगी का स्थायी पैटर्न।

मधु ने करवट ली और अधमुंदी आंखों से वक्ष से सट गई। मांसल उष्णता का आश्वस्त अहसास और···। कुछ नीचे झुका और उसके होंठों पर होंठ रख दिए।

बिंदो गेट पर ही मिल गई। तैयार—टसर सिल्क साड़ी, काठ के बटन वाला काला कोठ, सुनहरी चेन का स्विंग बैग।

'अच्छा हुआ, तुम आ गए। घर में कोई नहीं है। सोमू आने वाला होगा।' उसने घड़ी देखी।

'हूं।'

चुप्पी।

'गुल्लू।' यकायक बिंदो ने कहा, व्यग्रता से।

'हूं?'

'मैं कुछ नहीं कर सकती। मेरे बस में कुछ नहीं रहा।' उसने हताशा से हथेलियां फैलाईं, 'मैं नहीं चाहती थी कि कुछ ऐसा हो। पर अब मैं बिल्कुल विवश हूं।' तनिक ठिठकी। हाथ जेबों में डाल लिए, 'तुम समझ रहे हो न?' सहसा कातर होकर बोली।

'हूं।'

'हूं क्या?' स्वर उद्धत था, 'हां या ना में जवाब दो। तुम्हें किसी तरफ कमिट करना पड़ेगा।'

'मैं तटस्थ हूं।'

'जीवन में तटस्थता पैसीमिज्म की सूचक है। क्या तुम पैसीमिस्ट हो?'

'तटस्थ तो हिंदुस्तान भी है। क्या वो पेसीमिस्ट है?'

'तुम हिंदुस्तान नहीं हो। प्लीज़, मैं बहुत गंभीर हूं।'

बिंदो की ओर देखा। उसकी दृष्टि प्रार्थनामयी थी।

'मैं क्या कहूं बिंदो? तुम मुझसे क्या सुनना चाहती हो?'

कुछ क्षण सामने देखती रही। फिर पलकें झपकाईं, 'मुझे पता है, विजन के लिए तुम्हारे मन में सॉफ्ट कार्नर है।'

'इस संबंध में मैं भी विवश हूं।'

'लेकिन तुम मेरे लिए थोड़ी सहानुभूति के साथ नहीं सोच सकते?'

'सकने की क्या बात है? सोचता हूं।'

'तो तुमने नहीं देखा कि मैंने कितनी यंत्रणा सही है?'

बिंदो की इस निगाह की ताब नहीं ला सका। देखते-देखते उसकी आंखों की कोरों पर नमी-सी आने लगी—क्षोभ की हल्की लालिमा की जगह उसकी आर्द्रता, जो पुतली की सफेदी पर एक परत की तरह चढ़ गई और साथ में उसकी व्यक्तिगत चोट की दुहाई देने की शर्म।

बिंदो के संकेत पर स्कूटर रुक गया।

कुछ देर चुपचाप गेट पर खड़ा रहा, इसके अंधेरे में आसपास कहीं-कहीं बत्तियां थीं। सामने घर।

अंधेरा और खामोशी।

अचानक घंटी। खाली अंधेरे घर में फोन की घंटी बजना। बजते जाना। सुनना अच्छा लग रहा है। व्यग्र उतावली। अंदाज लगाता हूं कि यह बेसब्री किसके लिए है, कौन किया गया है, कहां से, क्यों, कब तक—आठ-दस-बारह। ट्रिन-ट्रिन, ट्रिन-ट्रिन, ट्रिन-ट्रिन···इस घंटी की नियति मेरे हाथ में है। चाहूं, तो इसकी दुस्सह प्रतीक्षा मिटा दूं। चाहूं, तो इसी बेताबी में कलपने दूं। उठे रिसीवर से सटा कान, सारा ध्यान अपेक्षित उत्तर की ओर लगा हुआ।

लंबी सांस के साथ और फैलकर बैठ जाता हूं। मैं क्यों दूं उत्तर? मुझे तो किसी ने उत्तर नहीं दिया।

एक सांस। दो सांसें।

आवाजें, कान जैसे शहद का छत्ता और ये आसपास बराबर हिलते हुए होंठ मधुमक्खियों की तरह।

ईवनिंग न्यूज ने ईवनिंग न्यूज खत्म किया। डायरी की ओर देखा। डायरी व्यस्त थी—शायद कहीं कोई आंकड़ा छूट रहा था···आसपास के उस तीखे कोलाहल के बावजूद अंदर बिंधती पैने अकेलेपन की वह टीस मुद्दत तक नहीं भूली। तब लगा था कि बस, यही तो है अपनी जिंदगी का स्थायी पैटर्न।

मधु ने करवट ली और अधमुंदी आंखों से वक्ष से सट गई। मांसल उष्णता का आश्वस्त अहसास और···। कुछ नीचे झुका और उसके होंठों पर होंठ रख दिए।

बिंदो गेट पर ही मिल गई। तैयार—टसर सिल्क साड़ी, काठ के बटन वाला काला कोट, सुनहरी चेन का स्विंग बैग।

'अच्छा हुआ, तुम आ गए। घर में कोई नहीं है। सोमू आने वाला होगा।' उसने घड़ी देखी।

'हूं।'

चुप्पी।

'गुल्लू।' यकायक बिंदो ने कहा, व्यग्रता से।

'हूं?'

'मैं कुछ नहीं कर सकती। मेरे वश में कुछ नहीं रहा।' उसने हताशा से हथेलियां फैलाईं, 'मैं नहीं चाहती थी कि कुछ ऐसा हो। पर अब मैं बिल्कुल विवश हूं।' तनिक ठिठकी। हाथ जेबों में डाल लिए, 'तुम समझ रहे हो न?' सहसा कातर होकर बोली।

'हूं।'

'हूं क्या?' स्वर उद्धत था, 'हां या ना में जवाब दो। तुम्हें किसी तरफ कमिट करना पड़ेगा।'

'मैं तटस्थ हूं।'

'जीवन में तटस्थता पैसीमिज्म की सूचक है। क्या तुम पैसीमिस्ट हो?'

'तटस्थ तो हिंदुस्तान भी है। क्या वो पेसीमिस्ट है ?'
'तुम हिंदुस्तान नहीं हो। प्लीज़, मैं बहुत गंभीर हूं।'
बिंदो की ओर देखा। उसकी दृष्टि प्रार्थनाभरी थी।
'मैं क्या कहूं बिंदो ? तुम मुझसे क्या सुनना चाहती हो ?'
कुछ क्षण सामने देखती रही। फिर पलकें झपकाईं, 'मुझे पता है, नितन के लिए तुम्हारे मन में सॉफ्ट कार्नर है।'
इस संबंध में मैं भी विवश हूं।'
'लेकिन तुम मेरे लिए थोड़ी सहानुभूति के साथ नहीं सोच सकते ?'
'सकने की क्या बात है ? सोचता हूं।'
'तो तुमने नहीं देखा कि मैंने कितनी यंत्रणा सही है ?'
बिंदो की उस निगाह की ताब नहीं ला सका। देखते-देखते उसकी आंखों की कोरों पर नमी-सी आने लगी—विक्षोभ की हल्की लालिमा की जगह उजली आर्द्रता, जो पुतली की सफेदी पर एक परत की तरह चढ़ गई और साथ में इतनी व्यक्तिगत चीज की दुहाई देने की शर्म।
बिंदो के संकेत पर स्कूटर रुक गया।
कुछ देर चुपचाप गेट पर खड़ा रहा, हलके अंधेरे में आसपास कहीं-कहीं बत्तियां थीं। सामने घर।
अंधेरा और खामोशी।

अचानक घंटी। खाली अंधेरे घर में फोन की घंटी बजना। बजते जाना। सुनना अच्छा लग रहा है। व्यग्र उतावली। अंदाज लगाता हूं कि यह बेसब्री किसके लिए है, कौन दिखा रहा है, कहां से, क्यों, कब तक—आठ-दस-बारह। ट्रिंग-ट्रिंग, ट्रिंग-ट्रिंग, ट्रिंग-ट्रिंग···इस घंटी की नियति मेरे हाथ में है। चाहूं, तो इसकी दुसह प्रतीक्षा मिटा दूं। चाहूं, तो इसी बेताबी से कसमसने दूं। उठें रिसीवर से सटा कान, सारा ध्यान अपेक्षित उत्तर की ओर लगा हुआ।
लंबी सांस के साथ और फंसकर बैठ जाता हूं। मैं क्यों दूं उत्तर ? मुझे तो किसी ने उत्तर नहीं दिया।
एक सांस। दो सांसें।

जैसे यकायक घंटी हुई थी, वैसे ही यकायक उसका थम जाना। वातावरण में कुछ क्षणों तक जैसे गुंजन की लरजिशें। सहसा महसूस होना कि चुप्पी और गहरी हो गई है। घंटी न बजती, तो चुप्पी की सतह वही होती। घंटी बजी तो जैसे बसूले की तरह काठ में दूर तक छेद करती गई।

सोचने की कोशिश की कि इस टनटनाहट से पहले क्या सोच रहा था। जैसे कोई बहुत महत्त्वपूर्ण बात हो।

बंद आंखों के सामने पहले अंधेरे की झालर झिलमिलाई, फिर धीरे-धीरे एक आकृति उभरी—एक कमनीय नारी की रूपरेखा। विचारपूर्ण ढंग से चलती हुई, आसपास से बेखबर—हाथ के पर्स को आहिस्ता-आहिस्ता झुलाती। एक हाथ से बिखरे बाल ठीक करती। रास्ते में कुछ आगे एक पत्थर, बड़ा-सा। किसी आहट पर उसने दायीं ओर देखा, कदम बढ़ाते-बढ़ाते—'देखकर, संभलकर।' मैं यकायक चिल्लाने को हुआ।

'गुल्लू मामा !'

काली धुंध के पीछे से अचानक एक आकृति सामने आ गई—स्पष्ट, आलोकित।

सोमू सामने की कुर्सी पर बैठ गया। पैर ऊपर रखे। सिर पीछे टिकाए।

'कहां गए थे ?'

'रुद्रा के यहां।'

पल भर ठहरकर कहा, 'भूख लगी हो, तो खाना खा लो।'

'ऊं हूं।'

सोमू उसी तरह बैठा रहा। आंखें बंद किए। सोचता-सा। धीरे-धीरे अंधेरे की एक झालर उसके चेहरे पर छितराई और नक्श धुंधलाने लगे। कुछ क्षणों बाद बदले हुए चेहरे पर दायीं भौंह के पास चोट का निशान था। आसपास ऐसा ही सन्नाटा। किचन में हलकी आहट। फिर नौकर की खरखराती आवाज, 'भैया, खाना लगा दूं ?'

'अच्छा, तुम लोग यहां बैठे हो।' अंधेरे में सुलगी सिगरेट का हिलना,

'लाइट तो जली थी।'

स्विच दबाकर जित्तन सामने की कुर्सी पर आ गए।

'पन्ना के यहां गए थे?' वे सोमू की ओर मुड़े।

'हूं।'

'क्या लिया?'

'क्रिकेट, कॉमिक…'

'अच्छा! गुड।'

उन्होंने कश लिया। पास में इंडिया किंग्स का पैकेट था।

'और क्या करते रहे?'

'बस, ऐसे ही…'

उनका रुक-रुककर बोलना कुछ ज्यादा ही महसूस हुआ। कुछेक शब्दों के बीच में ही कितने विराम आए। यह क्या भीतरी स्थिति ही है, जो बोलने में उतर आती है?

'आप कहां गए थे?'

'रंजीत के यहां।' उनके चेहरे का भाव थोड़ा बदल गया। हल्की यातना-सा आभास, जैसे मन-ही-मन पूरी शाम का रिव्यू कर रहे हों। एक गहरी सांस के साथ उभरे, 'एक जगह के बारे में बताया था उसने। कुछ कोशिश भी की है। देखो…'

और खोजती-सी निगाह मुझ पर, प्रतिक्रिया ढूंढ़ती हुई।

उनकी दिलजोई करने का मन नहीं चाहा।

'कोई है नहीं अंदर?'

उनकी ओर नहीं देखा। इनकार में सिर हिला दिया। उन्होंने एक बार अपने कमरे की दिशा में देखा। लगा कि कुछ कहने वाले हैं। फिर रुक गए। एक कश लिया।

चुप्पी—लंबी, बोझिल। अंदाज लगाने की कोशिश की कि जित्तन क्या कहने वाले थे, बिन्दो के बारे में? उसकी शामों के बारे में? इस एक विशेष शाम को लेकर कुछ? फिर उन्होंने मौन बेहतर समझा। शायद सोमू के कारण।

'चुप्पी बेहतर है जित्तन!' मन-ही-मन कहा, 'चुप्पी सबसे अच्छी है,

जैन मुनि देखे हैं न ! सफेद कपड़े की एक चिप्पी मुंह पर बंधी रहती है। तुम भी अपना मुंह बंद ही रखो, अहिंसा के लिए। क्योंकि जिस दिन तुम्हारा मुंह खुला, उस दिन…'

छुरी से लिफाफा खोला। अंदर बड़ा, सफेद कागज था। ऊपर सजावटी अक्षरों में कंपनी का नाम। दो-तीन बार मन-ही-मन इबारत पढ़ी, 'कंपनी को आपकी सेवाओं की आवश्यकता है।' अच्छा वाक्य है। कुछ बार दुहराने के बाद जबान पर मिठास-सी आ गई।

पैर फैला लिए। एक मेज के नीचे मूढ़े पर। हत्थों पर बांहें टिकाए, पीछे को फैल आया—आपकी जरूरत कहीं महसूस की जा रही है।

अंदर घुसते हुए अभिवादन किया।

'आइये।' पाइप वाले हाथ का इशारा।

लिफाफे के ऊपर लगा नियुक्ति-पत्र मेज पर रखा और बैठ गया।

क्षण के छोटे-से हिस्से के लिए वे चौंके। फिर प्रकृतिस्थ हो गए।

धड़कन थोड़ी बढ़ी-सी लगी। कुछ समय पहले की याद आई, जब मैं पहली या दूसरी बार यहां बैठा था। और अब ?

पैकेट निकाला। एक सिगरेट जलाई। आगे झुककर तीली ऐश-ट्रे में डाली। फिर पीछे टिका। कश लिया।

'हूं।' वे नीचे ही देख रहे थे। फिर सीधे हुए, 'आइ सी…'

धुएं के कुछ बगूले ऊपर उठे। फिर हलके-हलके छितराने लगे।

'तो…?' अब सीधे मेरी ओर देखा—बिल्कुल आंखों में। पैनी, भेदी दृष्टि। पर सिर्फ इतनी ही नहीं—उस विराम में पहली भेंट की याद दिलाती, तोलती निगाह। जो सामने वाले के पैरों-तले की जमीन का जायजा लेती है।

'आप वहां जाना चाहते हैं ?' स्वर का तल बदल गया था। शातिर लुकाछिपी से थका। सीधा।

'यह निर्भर करता है।'

पल भर मेरी ओर देखते रहे। फिर नीचे। अपनी बंद मुट्ठियों को, जहां अंगूठी का ऊपरी हिस्सा नाम के दो हर्फों के आकार में कटा था।

'काफी फर्क है।' वे बुदबुदाए। तनिक सोचते रहे, 'अगर इतना पूरा हो जाए, तो···?'

'जब नाप-तोल होती है, तो तराजू का एक पलड़ा नीचे ही होना चाहिए।'

'अच्छा चलिए, पचास ज्यादा सही। वैसे मुझे देखना होगा कि हमारे बजट में इतनी गुंजायश है भी।'

'पचास का फर्क क्या कुछ इतना फर्क है, जो ऐसा फैसला करा सके?'

क्षण भर वे अपने पर नियंत्रण नहीं रख सके, 'मिस्टर गुलशन···' पर अगले ही पल संभल गए, 'हमें भी यह समझने दीजिए कि आप पर हमारा थोड़ा-सा हक है।'

हमारी निगाह मिली। अब यह आदमी मन-ही-मन मुझसे नफरत करता रहेगा। मैंने सोचा, 'काम के स्तर में जरा भी अंतर आया कि··· बिल्कुल पहले ही अवसर पर यह मेरे पांवों के नीचे से जमीन खिसका लेगा।'

'ओक्के···' मैं खड़ा हुआ, 'बहुत-बहुत शुक्रिया।'

हमने हाथ मिलाए। वह लमहा जैसे फ्रीज हो गया हो—यह राउंड तो तुम जीत गए, अब आगे···?

सुबह जब नींद टूटी, तो नौ बज रहे थे। पल भर को ताज्जुब हुआ काम के दिनों में कितनी ही बार देर से सोया हूं, पर पच्चीस-तीस मिनट के अंतर से आंख हमेशा खुल जाती है। शायद अवचेतन को किसी तरह पता चल जाता है कि आज इतवार है।

उठकर बैठते ही पलकों पर पारे की एक परत का आभास हुआ और सिर के भीतर सितार के मोटे तार-जैसी सपाट सनन-सनन।

बंद खिड़की पर धूप सीधी थी। उसकी उजली चमक का आभास कांच व मोटे पर्दे के पार भी होता था।

बाथरूम से निकलकर किचिन में आया। केटिल में पानी उबल रहा था। मग में एक चम्मच ब्रू डाली, एक चम्मच चीनी और थोड़ा-सा दूध।

बरामदे से अखबार उठाकर कमरे में आया। एक सिगरेट जलाई। तकिये सीधे लगा बिस्तर पर बैठ गया। कॉफी के तीन-चार घूंट भरे, तो तंद्रा की कसावट टूटती-सी लगी।

उत्तरी वियतनाम पर फिर गोलाबारी—डाकुओं का आत्मसमर्पण—बस-दुर्घटना—शहर का मौसम—रेडियो : दिल्ली ए पर नेशनल प्रोग्राम ऑफ टॉक्स—टेलीविजन : मिरर आफ द वर्ल्ड—संस्था समाचार : वाइ० एम० सी० ए०…कालीबाड़ी बंगाली सोसाइटी—इंस्टीट्यूट ऑफ मॉस कम्यूनिकेशन—मैक्समूलर भवन—हाउस ऑफ सोवियत कल्चर—मिनिस्ट्री ऑफ एग्रीकल्चर—सहसा ठिठक गया—कल्चर एंड एग्रीकल्चर—फॉम कल्चर टु एग्रीकल्चर—दो-तीन बार दुहराया। अच्छा वाक्य है। बीज या खाद की किसी कॉपी में इस्तेमाल हो सकता है।

ऊपर बाएं कोने में एयर-इंडिया का विज्ञापन था—बांगला देश रिकग्नाइजेस एयर इंडिया। कसी हुई चुस्त कॉपी और आकर्षक विजुअल। पन्ना खोलते ही निगाह उस ओर जाती थी। घोंसले में तीन अंडों के विजुअल के साथ मूनब्रांड कागज का इश्तहार था—नेचर्स क्रियेशन ऑर मैन्स इन्वेंशन्स आर पैकेज्ड टु पर्फेक्शन इन मून ब्रांड पेपर। सामान लादे एक कछुए के विजुअल का विज्ञापन था—द लांगर दे ट्रैवल, द लैस दे अर्न…

गेट में घुसते ही लगा कि आज शांति आवश्यकता से कुछ अधिक है। बरामदे तक आते-आते चुप्पी की जो किस्म महसूस हुई, वह रोज से विशिष्ट थी—तनिक चौंकी, कुछ स्तब्ध-सी।

क्यारियों के परे सूखी घास के दायरे में जित्तन टहल रहे थे। मेरी आहट पाकर मुड़े।

'गुड ईवनिंग।'

'हैलो…' उनके चेहरे पर बारीक-सी मुस्कान उभरी। फिर जैसे

उसी सांस मौन के दबाव में विलुप्त हो गई।

'घर में कोई नहीं है क्या ?'

उन्होंने इनकार में धीरे से सिर हिलाया।

'आज स्कूल में हाउस-फंक्शन है। कुछ देर से आएगा।' वे ठिठके। मेरी ओर देखा, 'जुगनू मर गई है।'

जैसे रागिनी की व्यग्र ऊंचाई पर एक तार सहसा टूटे और उसकी झनझनाहट वातावरण में कुछ देर कंपकंपाती रहे।

'कैसे ?'

'सड़क पर ट्रक से कुचल गई—दोपहर में।'

संकेत पर मैं पीछे हो लिया। वे मेहंदी के झाड़ के पास रुके। पीछे ओट में पुराने धुले तौलिए में जुगनू लिपटी थी। जहां-तहां खून के धब्बे, जो अब सूख चुके थे और बदरंग पपड़ियों में बदलने लगे थे।

झुका। तौलिए का एक कोना तनिक उठाया। खाल कट गई थी और मिचा हुआ रक्तरंजित मांस का लोथड़ा दिखाई दे रहा था। आंखें खुली हुईं। निस्तेज। दोनों लौएं निष्प्रभ।

रसोई में आकर केतली धोई और पानी चढ़ा दिया। दो प्याले साफ किए। बेसिन के नीचे सफेद रकाबी पड़ी थी, जिसमें अपनी गुलाबी पंखुरी जैसी जीभ चुभलाकर जुगनू दूध पिया करती थी। पल-भर को एक तस्वीर सामने उभरी—दुम उठाए निश्चिंत जुगनू सड़क पार करती हुई और विशालकाय शक्तिमान ट्रक के भारी-भरकम पहिये प्रमाद की रफ्तार से भन्नाए। अगले दाएं पहिये का यकायक सड़क की सतह से पांच-छह इंच ऊपर उठना, फिर रक्त के छिड़काव के साथ क्षणभर बाद पिछले पहियों का भी। एक मासूम गतिशीलता का कुचलना, एक नन्ही स्फूर्ति का मिट जाना।

चाय का डिब्बा उठाते हुए ठिठका। ये तो अच्छे वाक्य हैं। अगले महीने रोड सेफ्टी वीक में इस्तेमाल हो सकते हैं।

जिलन सिगरेट सुलगाए रिलैक्सिंग कुर्सी पर बैठे थे। 'थैंक्स' कहकर उन्होंने कप ले लिया। एक घूंट लिया। विचारपूर्ण स्वर में बोले, 'सोम से किस तरह कहना ठीक होगा ? कुछ तैयार करके ?'

'हूं...'

'क्या-क्या हुआ स्कूल में।

'सांग। डांस। ड्रामा।'

'कैसा रहा?'

'मजेदार।'

जित्तन ने एक बार मुझे देखा, फिर सोम को। कुछ कहने को हुए। फिर यकायक उठते हुए बोले, 'मैं तुम्हारा दूध गर्म करके लाता हूं।'

'नहीं, मैंने अभी-अभी कोक पिया है।' सोम कुर्सी पर बैठ गया और दरवाजे की ओर मुंह किए हुए पुकार लगाई, 'जुग्गी...'

क्षण भर मेरी ओर जित्तन की निगाह मिली रही। फिर वे संजीदगी से बोले, 'सोमू!'

'हूं?'

उन्होंने कुछ अटक कर कहा, 'दुनिया में कुछ भी हमेशा नहीं रहता। सब कुछ बदलता, टूटता, बिखरता रहता है।

सोम अपनी जगह स्थिर हो गया। उसने हम दोनों को बारी-बारी से देखा। उसके चेहरे पर वही तनावभरा भाव आने लगा—अपनी उम्र से आगे की स्थितियों में रख दिए जाने की अनाश्वस्ति।

'तुमने अपनी किताब में गौतम बुद्ध वाली स्टोरी पढ़ी है। जो भी दुनिया में पैदा होता है, एक दिन उसकी सांस भी टूटती है।

जित्तन तनिक चुप रहे। शायद वे अगले वाक्य की रूपरेखा निर्धारित कर रहे थे। मौन में आशंका की लरजन भर गई—सिहरनभरी अकुलाहट।

'क्या जुगनू मर गई?' सोम का स्वर समतल था।

जित्तन पल भर को निश्चल हो गए। उन्हें इतनी जल्दी सोमू के विषय तक पहुंचने की आशा तक नहीं थी। उन्होंने हामी में सिर हिलाया।

सोमू पूर्ववत सामने देखता रहा। खुली हथेलियां हत्थों पर दबाए। क्षण को उसके चेहरे पर कातरता का भाव आया—अकेलेपन की तीखी अनुभूति की दयनीयता। फिर वही सूनापन आंखों में उभरने लगा।

'कैसे मरी ?'

'कुचल कर। सड़क पे...'

हम चुपचाप गेट से बाहर निकले। दाईं ओर बढ़े। मिल्क बूथ के निकट पहुंचकर जित्तन ने संकेत किया। सड़क के किनारे से लगभग दो फुट अंदर वह धब्बा था—मलिन लालिमा। धूल की तह पर टायर के कटावों के चिह्न थे। नीचे झुकने पर रोमों के साथ त्वचा की ऊपरी झिल्ली की कोई कटी-फटी चिंदी भी चिपकी दिखाई दी।

हम चुपचाप वापस लौटे। सोम ने दोनों हाथ निकर की जेबों में डाल रखे थे। सिर झुका हुआ।

मेंहदी के झाड़ तक आकर हम रुके। जित्तन ने तौलिए की ओर संकेत किया। सोम आगे बढ़ा और झुकने को हुआ।

'क्या फायदा बेटे ? यो तो अब...' जित्तन ने अटक कर कहा। उसके चेहरे पर आशंका थी।

'रहने दो सोम। बेकार...' मुझे भी लगा कि क्षत-विक्षत जुगनू को देखकर उस पर, पता नहीं क्या प्रतिक्रिया हो।

'एक बार देखूंगा।'

उसके चेहरे पर वयस्कों के जैसा सच्चाई से साक्षात्कार का दृढ़ संकल्प था।

हम चुप रहे। कुछ पीछे जित्तन के निकट खड़ा रहा। सोम ने तौलिए का कोना हटाया और एकटक नीचे देखता रहा। उसकी कच्ची आंखों ने जुगनू को देखने की कोशिश की। वह नन्हा-सा जीव, जो उसके आसपास मंडराता था, उसके संकेतों पर चलता था, उसके दुरूह एकांत का संगी, अब निस्पंद पड़ा है। एक परिचित चेतन प्राणी को यों बेजान देखने का यह सोम का पहला अवसर है—यह मृत्यु के साथ उसका पहला साक्षात्कार है। किसी की कमी की यह कचोट, जो समय के थोड़े विस्तार में रोजमर्रा की जिंदगी में डूब कर धीरे-धीरे मंद पड़ेगी—अबोध, मासूम संवेदना को पहली बार विचलित कर रही है।

शाम डूबने लगी थी, जब हम चले। जित्तन बाईं ओर थे, एकाध

कदम आगे। सोमू मेरे साथ था।

सूरज पूरा छिप चुका था। लालिमा के छींटे भी वदरंग पड़ने लगे थे। अंधेरे की पहली परत के आभास के साथ ही लैंप-पोस्ट जल उठे।

घर के पिछवाड़े की पगडंडी कुछ नीचे उतरी।

सामने एक गड्ढा था—लगभग आधे फुट का।

हमने किनारों से कुछ सूखी घास उखाड़ी और जमीन पर विछा दी। जित्तन संभलकर झुके और शव को जतन से घास पर रख दिया। मैंने तौलिए के ऊपर घास की एक परत और विछा दी।

सोमू निकर की जेवों में हाथ डाले, चुपचाप खड़ा रहा।

गड्ढे के दोनों ओर मिट्टी के ढेर थे। जित्तन ने एक अंजलि भरी और धीरे से घास पर डाल दी। फिर मैंने एक अंजलि भरी और आहिस्ता से घास पर डाल दी। फिर उन्होंने। फिर मैंने।

सहसा सोमू भी झुका और हथेलियों में मिट्टी भरने लगा।

'विश्वास नहीं होता कि यह फरवरी की रात है।' मधु ने कहा।

सच, दिन गर्म और तीखा। रात भली और नर्म। हवा के झोंकों में बहुत हल्की आर्द्रता। ऐसे में कई वार लगता है कि मौसम और क्या है—हवा के सिवा।

सामने 'टाइम' था, पर तिरछी निगाह मग में काफी डालती मधु पर—डेनम व्लू सूट और तोते के रंग का टॉप। जैकेट के बटन खुले। गले में काला बैंड।

'आज सुवह से क्या किया ?'

आखिर उसका प्रिय सवाल सामने आया।

'सुवह सात बजे नींद खुली। एक मिनट तक सीधा पड़ा रहा। फिर पंद्रह मिनट में दो वार दाएं और तीन वार बाएं करवट बदली। फिर अखबार उठाकर सुर्खियां देखीं। एक हवाई दुर्घटना पर दुख हुआ। एक बांध के उद्घाटन पर खुशी हुई। फिर वाथरूम में आया। ट्यूब से शेविंग क्रीम निकालकर चेहरे पर लगाई। फिर गर्म पानी में भीगे ब्रश से झाग पैदा की। रैपर से ब्लेड निकाला और…'

'अच्छा बस, रहने दो।' मधु ने झेंपी मुस्कान से देखा।

'तुम्हें बहुत उत्सुकता रहती है, दूसरों की दिनचर्या के बारे में।'

'कुछ लोगों की।'

'क्यों ?'

'अच्छा लगता है जानना कि जब हम पास नहीं थे, तो वे क्या कर रहे थे।'

कॉफी का एक घूंट भरा, 'और तुम क्या करती रहीं ?'

एक ओर देखते हुए मधु अचानक आत्मलीन-सी हो गई। फिर एक गहरी सांस, 'थोड़ी पेंटिंग की। फिर कुछ प्रेज़ेंट खरीदे। फिर…'

'क्यों ?' अपने स्वर का तनाव खुद महसूस किया।

'परसों बाहर जाना है—राजकोट। रोहित की कज़िन की शादी है।'

तनिक ठहरकर पूछा, 'कब तक रहोगी वहां ?'

'आठ-दस दिन तो लग ही जाएंगे।

एक लैंप की गोलाकार रोशनी पन्ने पर थी। मद्धिम आलोक मधु के चेहरे पर—हिलते होंठ। कभी उसके दांतों पर प्रतिबिंबित प्रकाश का बहुत बारीक निखरना…

सहसा उन सफेद दांतों का ध्यान आया और उसी आकस्मिकता से अजीब तरह की बेचैनी महसूस हुई। दबे-छिपे जैसे उन अनुभवों के शिकंजे थे—क्रूर, दहशतभरी। वे धारदार सिहरनें जैसे तारों-सी आस-पास सरसरा रही थीं। वह पुरानी दहशत ऐसे जागने लगी, जैसे किसी वन्य, हिंस्र पशु का तेज नाखूनों वाला जहरीला पंजा लहूलुहान करने वाली तीखी खरोंच के साथ छू जाए।

मुझे पता नहीं, लेकिन शायद अनजाने ही मेरे मुंह से कुछ निकला। मधु ने मेरी ओर देखा। मेरे चेहरे का भाव देखकर उसकी आंखें सहसा आतंकित हो उठीं।

'मैं कुछ दिनों से तुमसे कुछ बात करना चाह रहा था।'

मधु ने कहा कुछ नहीं। वैसे ही देखती रही।

'हम दोनों के बारे में।'

मधु यकायक अव्यवस्थित हो उठी।

'अपने संबंधों को लेकर हमें अब कुछ फैसला कर लेना चाहिए। जहां तक मेरी बात है, मैं बिल्कुल निश्चित हूं कि तुम्हारे बिना अब···'

मधु सहसा उठ खड़ी हुई, 'वक्त हो गया है, नीरू को पिक कर लेना चाहिए। देर हो जाती है न, तो वो बहुत घबराने लगती है। बच्चों को तो तुम जानते ही हो। चलो, प्लीज़···'

'जी ?'

उन्होंने निगाह उठाई और कुर्सी की ओर संकेत किया, 'यह बहुत जरूरी काम आ गया है।' फाइल खोली और यहां-वहां से कुछ पन्ने पलटे, 'फूड कॉर्पोरेशन आफ इंडिया के नाम से तो आप परिचित होंगे ही ?'

'हां।'

'तो जैसा कि आप जानते ही हैं, इस संस्थान की स्थापना एक पार्लियामेंट्री एनैक्टमेंट से हुई थी और इसका मुख्य उद्देश्य था फूड ग्रेंस के बाजार को अनुशासित करना। पिछले दिनों इन्होंने अपनी गति-विधि बढ़ाई है। फरीदाबाद में इनका चौबीस एकड़ का इंजीनियरिंग कॉम्प्लैक्स है। इसमें एक सोयाबीन प्रोसैसिंग प्लांट के लिए प्रारंभिक सर्वेक्षण हो रहा है, एक ग्रेन स्टोरेज लगभग तैयार है, जिसकी कैपेसिटी बीस हजार मिलियन टन होगी और बारह दिन बाद एक मेज मिलिंग प्लांट का उद्घाटन होने वाला है। यह इटैलियन सरकार की ओर से एक भेंट है, पर कर्मचारी सब भारतीय हैं।' उन्होंने तीली जलाई और पाइप सुलगाया, 'इन्हें तीन इश्तहार चाहिए। एक, उद्घाटन; दो कॉर्पोरेशन के काम के बढ़ने की सूचना; और तीन, अपने भुट्टे की सिफारिश।'

पैड सामने खींचा और नोट्स लेने लगा।

'कॉपी ऐसी हो, जिसमें भारतीय गणतंत्र की रजत जयंती के वर्ष में कॉर्पोरेशन के काम के विस्तार पर बल पड़े—कुछ नेशन-बिल्डिंग एक्टिविटी के समान। साथ ही कॉर्पोरेशन के सोशल आब्जैक्टिव्स का भी रेखांकन हो जाए।' एक कश लेकर वे पल भर सोचते रहे, 'ये

विज्ञापन आठ-बाइ-दस के होंगे यानी शब्द नब्बे-सौ के लगभग। शाम छह बजे मैं उनसे मिल रहा हूं। अगर पहली कापी आप साढ़े पांच तक मुझे दे दें, तो सहूलियत होगी।' उन्होंने फाइल से तीन-चार पैम्फलेट निकाले, 'यह थोड़ा-सा लिट्रेचर है, जिससे आपको कुछ मदद मिल जाएगी।'

'हूं...' वे कापी पढ़कर विचारपूर्ण ढंग से सामने देखते रहे। फिर ऐश-ट्रे में तंबाकू झाड़ते हुए दुबारा इबारत पढ़ी, 'इसका कैप्शन आपने क्या सोचा है?'

'दो सूझे हैं।'

'हूं?'

'एक तो, फ्रॉम इटैली विद लव; और दूसरा, मेज-मिलिंग : इटैलियन स्टाइल।'

कुछ क्षणों के मौन में एयरकंडीशन की घर्र-घर्र सुनाई देती रही।

'पहला शीर्षक मुझे अच्छा लगा, लेकिन उससे इतालवी सहयोग पर बल पड़ जाता है। कॉर्पोरेशन वाले इसे पसंद नहीं करेंगे। दूसरे इसमें उद्घाटन की कोई बात नहीं है, इसलिए इसका विजुअल के साथ कोई संबंध नहीं जुड़ पाएगा।'

'क्या इसका विजुअल निश्चित हो चुका है?'

'हां, क्यों नहीं।' वे तनिक ठिठके, 'क्या मैंने इस बारे में आपको नहीं बतलाया?'

हमारी दृष्टि मिली—एक पल, दो पल। लगा कि जैसे पर्दे पर शॉट फ्रीज हो गया हो। तो क्या आपने कूट-कौशल शुरू कर दिया है? मन-ही-मन कहा और अपेक्षाकृत लंबे मौन को भरने के लिए इनकार में सिर हिलाया।

'ओह!' मुझे कुछ ऐसा ध्यान रहा, जैसे इस बारे में बात हो चुकी है। इसमें हम फैक्ट्री का एरियल व्यू दे रहे हैं, जिसे एक कटा हुआ रिबन घेरे है। इसलिए शीर्षक में उद्घाटन को रेखांकित करने के लिए नया सम्भार, नयी शुरुआत, नया क्षितिज, नया विस्तार जैसी कुछ शब्दावली होनी चाहिए।' उन्होंने घड़ी की ओर देखा, 'दस-पंद्रह मिनट हैं अभी।'

'बिल्कुल इस वक्त तो कुछ नहीं सूझ रहा है।' स्वर निढाल था, दिन भर के तनाव के बाद।

वे पल भर एकटक देखते रहे, 'ऐसे कैसे काम चलेगा जनाब, इतना बड़ा अकाउंट है। अगर हम क्रिएटिव राइटिंग जैसा वक्त लेने लगे, तो दो दिन में मार्किट से उखड़ जाएंगे।'

चुप्पी रही, जिसमें शिथिल उंगलियां आपस में उलझा लीं।

'ख़ैर, अब कल देखिएगा। लेकिन बारह से पहले, ताकि मैं उनसे लंच अप्वाइंटमेंट ले सकूं। ओके, गुडनाइट।'

मार्च की शुरुआत—जब गहराती शामों में सर्दी के चले जाने की आहट होती है। पेड़ों के कुछ झरे हुए पत्ते, हल्की हवा में उनके उड़ने की खड़खड़ाहट, और गोधूलि की कुछ देरी रोशनी—वातावरण की एक खास तरह की चमक और चुप्पी के साथ।

'दफ़्तर में कैसा चल रहा है?' जितन ने पूछा और जुड़ी हथेलियां सिर के नीचे लगा लीं।

'ठीक...'

'कोई खास काम है आजकल?'

'एक सॉफ्ट ड्रिंक मार्किट में आने वाली है। उसी की कैंपेन शुरू हो रही है।'

अंधेरे में जहां-तहां तारे। हवा धीमी।

एक कार गेट पर रुकी। इंजिन बंद हो गया। क्षण भर बाद बिंदो की खिलखिलाहट। फिर एक पुरुष-स्वर। फिर बिंदो की हंसी। खंभे और झाड़ की ओट थी, इसलिए दिखाई कुछ नहीं दिया। ध्वनि से अंतरंगता जरूर झलक रही। बिंदो की प्रफुल्लित 'गुडनाइट' इंजन की आवाज के साथ धुंए की आहट। दो पलों बाद बिंदो प्रकट हुई। हाथ उल्टा कंधे तक और पर्स पीठ पर झूलता हुआ। होंठों पर गुनगुनाहट।

'बिंदो!' जितन का स्वर सख्त था, भिंचा हुआ।

बिंदो की गुनगुनाहट बीच में ही कट गई। जहां-की-तहां ठिठकी। इस ओर देखा—अंधेरा था। इसलिए चेहरे के भाव का बदलना लक्षित नहीं किया जा सका। पर बदला जरूर, जो उसके आगे बढ़े स्थिर कदमों

से स्पष्ट था।

'क्या है ?' स्वर में चुनौती थी, जैसे सामने वाला अपनी निर्धारित सीमा से बाहर आ गया हो।

'यह कौन था ?'

पल भर चुप्पी रही। वातावरण की निस्तब्धता क्या होती है, उस क्षण समझ में आया।

'मेरा सबसे नजदीकी दोस्त।'

क्षण भर फिर मौन रहा, जिसमें जिरान ने इस उत्तर से साक्षात्कार किया। शायद घूंट-सा भरा, 'आ कहां से रही हो ?'

'होटल डिप्लोमेट के बार से।'

'विदो !' जिरान खड़े हो गए—थरथराते।

'चीखो मत। मुझे ऊंची आवाज की आदत नहीं है।' विदो का स्वर समतल था। पर तीखा। ध्वनियों को महसूस करो, तो दांतों के पैनेपन का अहसास हो।

'तुम हद से आगे बढ़ रही हो।'

जितना निःशब्द उठ सकता था, उठा और अंदर को बढ़ा।

'हुम्म्।' विदो ने उस ओर देखा, 'तुम यहीं ठहरो।' फिर जिरान की ओर मुड़ी, 'मैं जो ठीक समझूंगी, वो करूंगी।'

'जो तुम तुम कर रही हो, वो ठीक है ?'

'मेरे लिए, बेशक...'

जिरान एक कदम बढ़ आए। दोनों पंजे भींचे, असहाय-से हवा में झूलते, 'देखो, मैंने तुम्हें बहुत बर्दाश्त किया है, लेकिन अगर तुम...'

'बहुत खूब।' विदो ठसक हंसी हंसी, 'बर्दाश्त तुमने मुझे किया है या मैंने तुम्हें ?'

हंसी की खड़खड़ाहट बिलकुल नंगी। अश्लील।

जिरान ने एकटक देखा। आंखों में चोट खाया भाव भी था और आत्मग्लानि भी, 'देखो, वसीम...'

'और बोलो। अपने बारे में जरा भी गलतफहमी मत रहने देना।'

बरामदे की सीढ़ियां चढ़ रहा था, जब विदो की पुकार सुनी।

रुका नहीं। मुड़कर नहीं देखा। सिर्फ इतना कहा, 'यह तुम लोगों का आपसी मामला है।'

ड्राइंगरूम में घुसते ही देखा, अंधेरे में कोने वाली खिड़की से सटा सोमू खड़ा था। आहट सुनकर उसने इस ओर देखा—आंखों में तरल कातरता। एक बार मन में आया कि इसे उठा लूं, यहां से ले चलूं। पर अगले ही क्षण अंदर कहीं कुलबुलाती उदासीनता गहरी हो गई—मैं क्या कर सकता हूं ? मैं कहां तक बचाऊंगा ?

कमरे में घुसकर दरवाजा बंद किया। बत्ती जलाई। बिस्तर पर लेटा।

आवाजें ऊंची हो गई थीं। बिंदो की आवाज—तीखी, बेबाक।

हाथ बढ़ाकर रेडियो खोल दिया। ऊंची भरभराहट। सुई यों ही घुमाई। बीच में ही सितार की रागिनी पकड़ में आ गई। वॉल्यूम तेज कर दिया।

बिस्तर पर चित लेटा। सिर के नीचे हथेलियां लगा लीं। बगल में लैंप जल रहा था—शेड थोड़ा तिरछा। रोशनी सीलिंग के बीच वाले हिस्से को छूती हुई। आहिस्ता चलते पंखे के ब्लेड पीछे छाया-प्रकाश का खेल खेल रहे थे—रोशनी और अंधेरेपन के आकार बारी-बारी से एक-दूसरे को काटते हुए।

ध्वनियों की तरंगें—कोने से आगे। हवा की लहरें—ऊपर से नीचे। दोनों कमरों में धीरे-धीरे भरती हुई। ऐसे कि बाहरी कोलाहल उनमें दब गया।

कहीं कुछ हुआ। कोई आहट, या कोई खटका, और नींद टूट गई।

कुछ पल अंधेरे में देखता रहा—गहरे काले, कत्थई रंगों के आड़े-सीधे चकत्तों के पार। हाथ बढ़ाकर लैंप जलाया—भरपूर रोशनी में तस्वीर, वार्डरोब, स्टीरियो।

'फ्रॉम इटैली विद लव !'

तकिये उठाकर पीछे रखे और टेक लगाकर बैठ गया। आंखें बंद।

...मरा। घाटी में कोहरे के मानिंद छाया हुआ। मैं ऊपर,
...र—आसमान की सतह पर, परिंदों की तरह हवा में तैरता
...ीचे नीले रिबन के दायरे में सिमटी कैंप्टी···

एक नये क्षितिज का उद्घाटन।

पंखों पर स्वागतमय भार।

बस पाप से ज्यादा ज़िन्दगी।

...आँखें फिर लग गईं। सपनों में पाव आये। और सावन की छाती
...ा हुआ बाहर आ गया।
...हुआ नहीं। पर उसका आभास। ऊपर चांदनी का कटिबावा
...ाता। नीचे आधी रात का अंधेरा और उसकी गुनगुनाहटें। तकिये
...-सी घास की गंध के साथ।

सूने अहाते में। सड़क सन्नाटे में डूबी। मेन-पोस्ट के नीचे आलोक
...या के पोस्टर-सा लटका हुआ।

मट्ठा!
आपके लिए हमारे स्नेह की नयी निशानी!
अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना का प्रतीक : मट्ठा!
भारत की समृद्धि का नया चरण : मट्ठा!
मट्ठ सोल्जर का प्रिय : मट्ठा!

दिमाग की नसें कुछ अजीब तरह से लिपटी हुई थीं। अंदर भारी चिड़चिड़ाहट, जो मन का कहीं भी स्वाद नहीं होने देती थी।

एक बजे एलान हुआ, जब नलिनी बाहर निकली। तुरंत नंबर डायल किया। घंटी बजी।

'हैलो!'

'हैलो मधु!' पल भर का मौन, 'तुम पांच दिन से हो कहां? इसी दुनिया में हो या···'

'ज़रा बिज़ी थी, इसलिए···'

'किस चीज़ में बिज़ी थीं? और इतनी बिज़ी थीं कि एक बा...
...ोन करके बता नहीं सकती थीं? पता है, ये पांच दिन कैसे बिता...

काटे हैं ?'

'हां, कुछ ऐसा ही रहा, और तुम कैसे हो ? दफ्तर का काम ठीक-ठाक चल रहा है ?'

'दफ्तर जाए भाड़ में और उसके साथ तुम भी ।'

इंडिया इंटरनेशनल सेंटर का ऑडीटोरियम। ठीक साढ़े छह पर आखिरी घंटी बजी। लाउंज में जमा लोगों पर सरसरी निगाह डालते हुए सिगरेट बुझाई और अंदर आ गया।

जानबूझकर वहां नहीं बैठा, जहां बगल की कुर्सी खाली हो। आठ-दस मिनट तक इक्के-दुक्के लोग आते रहे। पर किसी ओर मुड़कर नहीं देखा।

एक तरह से आधा ध्यान फिल्म पर था। आंखें जैसे अभ्यासवश सबटाइटिल पढ़ती थीं पर उनका अर्थ बिखर जाता था। पर्दे पर के चेहरे के बीच एक और चेहरा उभर आता था। अभिनेताओं के नक्श घुलकर एक और आकृति बना देते थे।

जब हॉल में रोशनी हुई, तो दो घंटे हो चुके थे। उड़ती नजर से देखा, मधु पीछे नहीं थी। बाहर निकलते-निकलते निगाह पड़ी, वह सामने के काउच से उठ रही थी। बड़े डग भरकर पास आई। आशंकायुक्त हलकी मुस्कान से मेरी ओर देखा। कहा, 'हैलो।'

लोदी गार्डन। मकबरे को चारों ओर से आलोकित करते प्रकाश-वृत्त। फूलों व गीली घास की गंध। हलकी हवा में आसपास पेड़ों के होने का अहसास।

नीची बत्तियों वाला पक्का, संकरा रास्ता। आगे अंधेरे में गुम होता। चिनान सिल्क की साड़ी। बैकलैस ब्लाउज। आहट—जूतों व सैंडिलों की। खट्-खट्-खट्-खट्···

'माफ करना। मुझे देर हो गई।' लंबी चुप्पी के बाद मधु ने कहा, 'आजकल कुछ ऐसी हड़बड़ है कि···'

'पूछ सकता हूं कि वजह क्या है ?' उसकी ओर नहीं देखा। नजर

काटे हैं ?'

'हां, कुछ ऐसा ही रहा, और तुम कैसे हो ? दफ्तर का काम ठीक-ठाक चल रहा है ?'

'दफ्तर जाए भाड़ में और उसके साथ तुम भी ।'

इंडिया इंटरनेशनल सेंटर का ऑडीटोरियम। ठीक साढ़े छह पर आखिरी घंटी बजी। लाउंज में जमा लोगों पर सरसरी निगाह डालते हुए सिगरेट बुझाई और अंदर आ गया।

जानबूझकर वहां नहीं बैठा, जहां बगल की कुर्सी खाली हो। आठ-दस मिनट तक इक्के-दुक्के लोग आते रहे। पर किसी ओर मुड़कर नहीं देखा।

एक तरह से आधा ध्यान फिल्म पर था। आंखें जैसे अभ्यासवश सबटाइटिल पढ़ती थीं पर उनका अर्थ बिखर जाता था। पर्दे पर के चेहरे के बीच एक और चेहरा उभर आता था। अभिनेताओं के नक्श घुलकर एक और आकृति बना देते थे।

जब हॉल में रोशनी हुई, तो दो घंटे हो चुके थे। उड़ती नजर से देखा, मधु पीछे नहीं थी। बाहर निकलते-निकलते निगाह पड़ी, वह सामने के काउच से उठ रही थी। बड़े डग भरकर पास आई। आशंकायुक्त हलकी मुस्कान से मेरी ओर देखा। कहा, 'हैलो।'

लोदी गार्डन। मकबरे को चारों ओर से आलोकित करते प्रकाश-वृत्त। फूलों व गीली घास की गंध। हलकी हवा में आसपास पेड़ों के होने का अहसास।

नीची बत्तियों वाला पक्का, संकरा रास्ता। आगे अंधेरे में गुम होता। चिनान सिल्क की साड़ी। बैकलैस ब्लाउज। आहट—जूतों व सैंडिलों की। खट्-खट्-खट्-खट्···

'माफ करना। मुझे देर हो गई।' लंबी चुप्पी के बाद मधु ने कहा, 'आजकल कुछ ऐसी हड़बड़ है कि···'

'पूछ सकता हूं कि वजह क्या है ?' उसकी ओर नहीं देखा। नजर

सामने ही रही।

'एक तो रोहित की बहन व बच्चे आए हुए हैं। दूसरे, बिजनेस की कुछ उलझनें हैं। कई जगह मुझे भी साथ जाना होता है। हमेशा इर्द-गिर्द होता है कोई। जब तुमने फोन किया तो माया पास ही थी। और अभी भी इतनी मुश्किल से आ पाई हूं कि···' कहते हुए पल भर को ठिठकी। कलाई मोड़कर समय देखा, 'सब सोचेंगे, पता नहीं क्या बात है जो···' एक ओर के अंधेरे में देखते हुए वाक्य को अधूरा छोड़ दिया।

'सब क्या सोचेंगे, यह तो सोचा, और मैं क्या सोचूंगा, यह बिल्कुल नहीं सोचा ?'

आवाज का तनाव चिंगारी के समान अंधेरे में कौंध गया। कुछ पल उसकी थरथराहट बनी रही—तीखी। दहनशील।

'ये पांच दिन मैंने किस तनाव में काटे हैं, यह जानती हो तुम ?'

मधु ने एक बार मेरी तरफ देखा। फिर सिर झुका लिया। दोनों हथेलियां मुड़ी हुई कोहनियों पर जमाए चुपचाप चलती रही। फिर सिर तनिक झुकाया, 'मुझे अफसोस है···'

'तुम्हें पिछले हफ्ते में एक मिनट का समय नहीं मिला कि मुझे फोन कर लो ?'

'कहा न कि मैं अकेली नहीं थी।' स्वर में झुंझलाहट की छाया।

'चौबीस घंटों में तुम्हें एक मिनट भी अकेला नहीं मिला ?'

'मिला, लेकिन मेरे पास सोचने के लिए कुछ और भी हो सकता है।'

'जैसे ?'

'जैसे बहुत कुछ है।'

'क्या ? जरा मैं भी तो जानूं ?'

'गुलदान, प्लीज···'

'क्यों ? मुझे मालूम तो होना चाहिए कि मेरी जगह क्या है ?'

'तुम बच्चों की तरह पज़ेसिव हो रहे हो।'

पैर अपने-आप वहीं ठिठक गए, 'अच्छा ?'

'मेरी समझ में नहीं आ रहा कि झगड़ा किस बात का है ? मेरा घर

सोमू ने उनकी ओर देखा, फिर मेरी ओर। उनकी आंखें सचमुच में गीली थीं—कपोलों की कच्ची त्वचा पर नमी का अहसास।

उसके बालमन के उद्वेलन का ध्यान आया। आंखें पीछे, दूर अतीत में डिज़ाल्व होने लगीं, जहां ऐसा ही सन्नाटा था। सूनापन। तनाव।

जैसे झटके से स्वयं को उस गह्वर से निकाला, 'तो अब होना क्या है?' कुछ झल्ला कर पूछा।

'इसे डिक्सन के पास ले आओ।'

'कहां?'

'मुकुंद के यहां, और कहां।' ममा के स्वर में विद्रूप था।

बिंदो अंदर से निकली। तैयार। ऑरेंज बॉर्डर की बैंगनी औरंगाबादी। बड़ा-सा रिंगलेट्स जूड़ा। हाथ में लेदर बैग।

'चाय बची है कुछ?'

'हूं…' ममा तीसरा कप बनाने लगीं।

बिंदो ने हाथ की चीज़ें कुर्सी पर रख दीं। फिर सीधी दृष्टि से देखा—सोमू की ओर। उसने निगाह नीची कर ली। जूते की नोक से फर्श कुरेदने लगा।

'तुमने बात की थी उनसे?' मैंने पूछा।

'हां।'

'क्या?'

ममा की भौंहें झुंझलाहट से थोड़ी सिकुड़ गईं, 'यहां आने के लिए। और क्या?' उन्होंने बिंदो की तरफ नहीं देखा।

'ज़रूरत क्या थी फोन करने की?' बिंदो तनी-सी खड़ी थी।

'यह जो रोए जा रहा है छत्तीस घंटे से!' सोमू की ओर संकेत करते हुए ममा ने कहा और सीधे बिंदो की आंखों में देखा।

'तो रोता रहता!' बिंदो बेबाकी से बोली, दोटूक स्वर में, 'अगर रोना उसकी किस्मत में ही लिखा है, तो क्या कर सकता है कोई?' स्वर की तीक्ष्णता में पैनी धार थी—प्रतिहिंसा-सी।

'मां-बाप के झगड़े की सज़ा बच्चे को नहीं मिलनी चाहिए।'

'चाहने-न चाहने का सवाल नहीं है। जब मैं [illegible]

हूं, तो कुछ उम्मीद भी तो रखती हूं। मैंने भी तो बहुत सहा है इसकी ख़ातिर !'

'तो बाप को भुला दे ?'

'भुलाए नहीं, पर उसके बिना ज़िंदा तो रह सके।'

'ज़िंदगी में सबकी अपनी जगह होती है।'

'इसे चुनना पड़ेगा।' विंदो के स्वर में सख्ती थी। जबड़े भिंचे हुए।

'चुनने के लिए अभी छोटा है।'

'और सहने के लिए मेरी सारी उम्र पड़ी है ?'

मुझसे और रहा नहीं गया, 'तुम लोग लड़ क्यों रही हो ?'

'कोई कर क्या सकता है, अगर तुम्हारा बेटा अपने बाप को ज्यादा चाहता है, तो ?'

विंदो ने भर्त्सना की दृष्टि से सोमू को देखा। चाय के तीनेक घूंट भरे। फिर सामने देखा—सड़क की तरफ। कुछ अपने-आप से ही कहा, 'धीरे-धीरे—इसी तरह ज़िंदगी पर से आस्था खत्म होती है।'

'अच्छा नहीं लगता कि वो दोस्त के यहां रूठा पड़ा है।' ममा मनाने के लहजे में बोलीं, 'बेकार लोगों को दस तरह की बातें करने का मौका मिलता है।'

'अच्छा तो मुझे भी नहीं लगता। पर जब उसे ही अच्छा लगता है, तो क्या कर सकता है कोई ?'

'एक फैसला कर सकता है।'

'मैंने तो कर लिया है, पर जब वो करे, तब न।'

'इस तरह सबकी जान सांसत में डालने का कोई मतलब नहीं।'

विंदो क्षण भर चुप रही। ठंडी निगाह से ममा को घूरा, 'मैंने अपनी तरफ से कभी नहीं चाहा कि तुम्हारी जान सांसत में डालूं।'

'मेरा ये मतलब नहीं था, जो तुमने लगाया है।'

'मैंने वही मतलब लगाया है, जो तुम्हारा था।'

'जबर्दस्ती था ? मैं तो यह कह रही थी कि…'

'जो कह रही थी, वो मैं अच्छी तरह जान…'

'ख़ाक जान…'

'तुम लोग अपनी किच-किच बंद करोगी या नहीं ?' मैं अनजाने ही फट पड़ा।

दोनों तत्क्षण चुप हो गईं और मेरी ओर देखा—कुछ ताज्जुब से।

'जित्तन ने फोन पर क्या कहा ?' मैं ममा से मुखातिब था।

'मैं नहीं आऊंगा।'

'हमेशा वहीं रहेंगे—मुकुंद के यहां ?'

'हूं, रह लिए···' बिंदो ने अवज्ञा से मुंह बिचकाया, 'उसकी बीवी चार दिन में निकाल बाहर करेगी।'

'वो फोन पर ही ऐसी नकचिड़ी-सी बोल रही थी।' ममा ने नकल उतारी, 'देखती हूं, क्या कर रहे हैं। कल तो भरपेट नाश्ते के बाद सो गए थे।'

पल भर सोमू को देखता रहा। जिसके चेहरे पर तनाव की लकीरें साफ पढ़ी जा रही थीं, 'बहुत हो चुका। इस बात का फैसला अब हो जाना चाहिए।'

जब सुंदरनगर मार्किट के पास हमने स्कूटर छोड़ा, तो अंधेरा होने लगा था। घरों में रोशनियां जल गई थीं। कभी किसी खिड़की से कोई धुन बाहर छनक आती थी। पार्क के गेट पर आयाओं का एक झुंड वापस लौटने की तैयारी में था—कुछ बच्चे गोद में, कुछ गाड़ियों में। अंदर कुछ लड़के-लड़कियां अभी भी क्रिकेट खेल रहे थे। बीच-बीच में उनकी किलकारियां सुनाई दे जाती थीं।

गेट पर मुकुंद का नाम आलोकित था। बगल में स्टूल पर बैठा गोरखा दरबान बीड़ी सुलगाने का उपक्रम कर रहा था। हमें गेट की ओर बढ़ते देख उसने सिर उठाया और सीधे होते हुए बीड़ी वाला हाथ पीछे ले जाकर दूसरे हाथ से सलाम किया।

अंदर घुसते हुए गीली घास और फूलों की मिलीजुली महक आई। ड्राइंगरूम की खिड़कियां खुली थीं। कोने का पैडस्टल लैंप जल रहा था। खिड़की की राह से पल भर को टी० वी० पर नृत्यरत आदिवासियों की झलक और ढोल की ऊंची-ऊंची थापें भी सुनाई दीं।

ट्रिंग ट्रीं, ट्रिंग ट्रीं···

नौकर ने दरवाजा खोला।

'जित्तन साब हैं ?'

पल भर को उसके चेहरे पर नासमझी का भाव झलका।

'साहब के दोस्त।'

'ओ···' वह दरवाजा खोलते हुए एक ओर हट गया, 'बरसाती में हैं।' उसने जीने की तरफ इशारा किया।

'आओ।'

सोमू का हाथ थामे छत तक पहुंचा। कमरे में रोशनी थी और पर्दे का एक हिस्सा बाहर लहरा रहा था। सोमू ने यकायक अपना हाथ खींचा और भीतर दौड़ गया। जित्तन की किंचित चौंकी आवाज सुनाई दी, 'बेटे···'

जब मैं अंदर दाखिल हुआ, तो सोमू कुर्सी पर बैठे जित्तन के सीने से लगा हुआ था।

'हैलो गुल्लू !' वे मुस्कुराए, 'आओ। बैठो।'

स्वर में कुछ ऐसा उत्साह, जैसे यह उनकी अपनी जगह हो। और हलका-सा गर्व भी कि मेरे पास विकल्प है। घर से चली आती मन की वितृष्णा और गहरी हो गई।

'पापा। तुम घर से यहां क्यों आ गए ?'

जित्तन झेंपी हंसी हंसकर रह गए। लगा, अगर मैं यहां नहीं होता, तो शायद वे कोई जवाब देते। एक क्षण को मन में आया, पांच मिनट छत पर चहलकदमी कर आऊं, पर अगले ही लमहे कुछ कड़वाहट-सी भीतर भर गई—ऐसे क्या होगा ? कब तक निभेगा ?

'सिगरेट पियो।' उन्होंने सामने से उठाकर इंडिया किंग्स का पैकेट बढ़ाया।

एक बार उनकी ओर देखा। फिर पैकेट ले लिया। सिगरेट जलाई। धुआं छोड़ते हुए सामने देखता रहा।

वे सफेद पायजामा-कुर्ता पहने थे—मुकुंद का। शायद बांहें लंबी थीं, इसलिए उन्हें कोहनी के ऊपर तक मोड़ रखा था। एक दिन की

वढ़ी दाढ़ी थी। आँखें थोड़ी लाल। उनके नीचे गड्ढे जरा उभरे हुए। मालूम हो रहा था कि ठीक से सोए नहीं। साथ ही इस बात का भी आभास था कि जैसे इस सारी तैयारी के साथ जित्तन इंतजार में थे कि घर से कब कोई आता है।

सहसा जित्तन उतने जाने-पहचाने, उतने अपने नहीं लगे। कुछ था, जो उस पुरानी अंतरंगता में आड़े आ रहा था। खुद को टटोला। क्या इसके पीछे जित्तन का व्यवहार है? कहीं ऐसा उन बातों के कारण तो नहीं है, जो मुझे कहनी हैं? और जिन्हें कहने का इरादा यहां आने के बाद और पक्का हो गया।

सोमू अब चुप था, जैसे जित्तन की निकटता के बाद कुछ कहने की जरूरत न हो।

'मैं कल तुम्हारा इंतजार करता रहा।' जित्तन बोले।

'कल?' तनिक नासमझी का अभिनय किया।

'हां। मैंने सोचा कि शाम को दफ्तर से आने के बाद शायद तुम…'

एकटक उनकी ओर देखते हुए एक गहरा कश लिया। कुछ क्षणों बाद लगा कि इस निर्निमेष दृष्टि से वे कुछ आत्मसजग हो रहे हैं।

'जित्तन भाई!'

'हूं?' वे चौंके हुए लगे। थोड़े आशंकित।

'ऐसे कब तक चलेगा?'

वे पल भर मेरी ओर देखते रहे। फिर कुछ अपराधी जैसे स्वर में बोले, 'मैंने क्या किया है?'

'सवाल आपके करने-न करने का नहीं है। सवाल यह है कि आज जो हालत है, वो कब तक और खींची जा सकती है?'

'जब तक केस का फैसला नहीं होता, तब तक…' उन्होंने अटक-अटक कर कहा।

'मान लीजिए, केस का फैसला अभी पांच साल और नहीं होता, तब?'

पल भर को जित्तन की आंखों में अविश्वास झलका, जैसे यह आवाज मेरी नहीं, किसी और की है। फिर उन्होंने निगाह झुका ली।

कुछ देर वैसे ही नीचे देखते रहे, 'मालूम नहीं था मुझे कि मेरी दो वक्त की रोटी इतनी भारी पड़ रही है।'

बात सिर्फ रोटी की ही होती, तो बहुत आसान थी। लेकिन ऐसा है नहीं।'

'तो कैसा है ?'

आपकी इस हालत का बहुत बुरा असर पड़ रहा है।'

'किस पर ?'

'आम तौर से घर पर और खास तौर से सोमू पर।'

वे कुछ तीखे स्वर मे बोले, 'इसके लिए मैं जिम्मेदार हूं या इसकी मां ?'

'मां भी है, लेकिन हालत बदलेगी तो आपके ही कुछ करने से।'

'तो मैं क्या करूं ? जमुना में छलांग लगा लूं ?'

ठंडी निगाह से उन्हें देखा, 'और दूसरे हैं आप खुद !'

वे तुरंत भड़के, 'मैं क्यों, बिंदो कहो।'

'बिंदो खुदगर्ज है। उसने अपनी खुशी ढूंढ़ ली है। वो आप हैं, जो सह रहे हैं।'

मौन। जिसमें सोमू ने बारी-बारी से कुछ नासमझी भरे डर से हमारे चेहरे देखे और उन पर का भाव उसे हमसे दूर ले गया। इतना उसके सामने स्पष्ट था कि यह कुछ महत्त्वपूर्ण घट रहा है। बूढ़ा होने के बाद जब वह कभी इस शाम के बारे में सोचेगा, तो उसे लगेगा कि किस तरह आज हम उसके लिए अजनबी हो गए थे।

'अगर मैं सह रहा हूं, तो उसका भी एक मतलब है।'

उनके चेहरे पर का भाव शहीदाना लगा, और वितृष्णा और गहरी हो गई।

'अगर आप सोच रहे हैं कि चीजें कभी पहले-जैसी हो जाएंगी, तो मुझे डर है कि आपका त्याग और यातना बिल्कुल बेकार जाएगी ?'

'बिंदो ने तुमसे कुछ कहा है ?'

'वो मुझसे बहुत कुछ कहती रहती है, पर इसका मतलब यह नहीं कि मैं वह सुनता हूं या मानता हूं।'

'तो तुम कैसे कह सकते हो कि…?'

'क्योंकि परसों के झगड़े के बाद मेरी समझ में आ गया है।'

'क्या आ गया है?'

'कि उसने एक फैसला कर लिया है।'

कुछ देर जितन सोचते रहे। फिर यकायक दुगुने आवेग से बोले, 'उसके अकेले के फैसले से क्या होता है। मैं उसे हर्गिज आज़ाद नहीं करूंगा।'

'मत कीजिए। लेकिन क्या इससे आप उसे अपने से बांधे रख सकते हैं? और अगर रख भी सकते हैं, तो दोनों की घुटन के अलावा इसका कुछ और भी हासिल है? पर मुझे इस बारे में कुछ नहीं कहना। यह आपका जाती मामला है। मुझे सिर्फ इतना कहना है कि घर के और लोगों पर आप दोनों की खींचातानी भारी पड़ रही है।

जितन की आंखों में आहत भाव तैर आया। निगाह मुझसे कहीं पीछे चली गई। फिर एक गहरी सांस ली, 'ठीक है। अब तुमने अपनी जगह बना ली है, इसलिए तुम भी बदल गए हो। क्या भी भूल गई हैं कि कैसे सब लोग पूरी-पूरी गर्मियों में मेरे यहां रहा करते थे। आज मैं मजबूर हूं, तो राह का पत्थर हूं।'

'और आप अपनी यह दया जगाने वाली आदत भी छोड़ दीजिए। इससे भी कुछ नहीं होने का।' थोड़ी खीज के साथ कहा।

'तो क्या करूं, जिससे कुछ हो?' वे भी चिढ़े हुए बोले।

'जमुना में कूदने के अलावा कुछ कीजिए।'

कुछ क्षणों के मौन में तनाव था—तल्खी भरा, जिसमें पुरानी अंतरंगता पिघलती हुई लगी।

दरवाज़े पर थपकी से दोनों को छुटकारा मिला।

'साब ने बोला है कि आप जाते हुए ज़रा एक मिनट मिलकर जाइएगा।'

'आओ, बैठो।' मुकुंद ने मुस्कान के साथ सामने की कुर्सी की ओर संकेत किया। और बिस्तर पर बैठी पत्नी से बोले, 'भई, मुनगन को

ड्रिंक दो।'

वे गाउन पहने कुर्सी पर बैठे थे। बगल की तिपाई पर आधा खाली गिलास रखा था।

'आप सुनाओ, काम कैसा चल रहा है ?'

'ठीक है।' मंद स्मित से कहा।

'दफ्तर कहां है तुम्हारा ?'

'बाराखंभा रोड पर। आकाशदीप···'

चित्रा गिलास सामने रखते हुए मुस्कुराई, 'मुझे मालूम था, गुलशन जिंदगी में दूर तक जाएंगे।'

'क्यों नहीं, समझदार लड़का है।' मुकुंद ने हंसकर अपना गिलास उठाया—'चियर्स !'

'चियर्स !' एक छोटा और एक बड़ा घूंट लिया और अंदर खिंचती हुई गरमाहट की लकीर महसूस की।

कुछ क्षण चुप्पी रही, जिसमें सिर्फ एयरकंडीशन की घर्र-घर्र सुनाई दे रही थी। चित्रा ने काजू की प्लेट सामने बढ़ाई, तो दो-तीन टुकड़े उठा लिए। मुकुंद जैसे कुछ सोच रहे थे।

'जित्तन जा रहा है तुम्हारे साथ ?' सहसा उन्होंने पूछा।

पल भर रुककर कहा, 'वैसे मैं उन्हें लेने के लिए तो नहीं आया, पर आप कहें, तो ले जाता हूं।' फिर तनिक ठहरकर प्रतिक्रिया देखी और जोड़ा, 'हालांकि उससे फायदा कुछ नहीं होगा, क्योंकि चार दिन के बाद फिर झगड़ा होगा और वे फिर इसी तरह यहां आ जाएंगे।'

'बात क्या है ?' मुकुंद ने झिझक छोड़कर सीधे मेरी आंखों में देखा।

'अब उनकी और बिंदो की निभ नहीं सकती।'

'जित्तन ने तो ऐसा कुछ नहीं कहा।'

चित्रा बोल उठी, 'पता नहीं, आप क्यों नहीं समझते ? कल जिस तरह वो पिये जा रहे थे, मुझे तो उसी से लगा था कि···'

खुली बांहों पर ठंडक की एक पर्त चढ़ती महसूस हुई। दो घूंट भरे।

'वो यहां कुछ दिन रहें, इसमें मुझे कोई मुश्किल नहीं है।' उन्होंने चित्रा की ओर देखे बिना कहा, 'लेकिन यह उसी के लिए ठीक नहीं है।'

'आप उनके लिए किसी छोटी-मोटी नौकरी का बंदोबस्त नहीं कर सकते—दिल्ली के बाहर ?'

'क्यों नहीं कर सकता ? लेकिन वो करना चाहे, तब न। मैंने तो तीन-चार बार जिक्र भी किया, पर उसने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई।'

'वो नहीं दिखाएंगे, क्योंकि उनके सोचने का ढंग दूसरा है। लेकिन मैंने उनके सामने जाहिर कर दिया है और आप भी कर दीजिए कि उनके सामने अब कोई चारा नहीं है।'

मुकुंद ने एक घूंट भरा। 'हूं...' विचारपूर्ण स्वर में कहा।

चुप्पी के दौरान सामने जित्तन का चेहरा घूमता रहा।

फिर जैसे झटके से मुकुंद सीधे हुए, 'अच्छा, मुझे एकाध दिन की मोहलत दो। देखता हूं, क्या हो सकता है।'

दरवाजे पर दस्तक से नींद टूटी—जैसे किसी क्रूर, बर्बर पंजे ने निर्ममता से झकझोरते हुए खींचा हो। कुछ क्षण लगे—बाहरी दुनिया के साथ चेतना का तालमेल बैठाने में। फिर पर्दे की सिलवटों के बीच बिंदो का चेहरा उभर आया, 'फोन है।' और जैसे आया था, वैसे ही गुम हो गया।

कुछ पल उठकर बैठा। जम्हाई ली। पूछा नहीं कि कौन है। जान लेने पर इतवार की अलससुबह फोन आने का सारा एडवेंचर खत्म हो जाता है।

सूचना के बाद हल्की धक्-धक्। चप्पलों में पैर फंसाए ड्राइंगरूम तक आना। रिसीवर उठाकर 'हैलो' की अदा...

'हैलो !'

'हाइ...' नारी-स्वर क्षण भर को ठिठका, 'नलिनी...'

'ओह... हैलो नलिनी, कैसी हो ?'

'ठीक...सो रहे थे ?'

'हांआं···इतवार की एक ही तो सुवह होती है···

'माफ करना, तुम्हें जगाया, पर मुझे लग रहा था कि सुवह-सवेरे पिकनिक-विकनिक पर कहीं निकल गए, तो···'

'नहीं, जाना तो कहीं नहीं है। और अभी नहीं जागता, तो आध-पौन घंटे वाद जागता। इसलिए तुम्हें कुछ बुरा महसूस करने की जरूरत नहीं है।' पल भर की चुप्पी, 'कुछ काम है क्या ?'

'हूं ! आज मिल सकते हो कुछ देर को ?'

'हां, क्यों नहीं।'

'कव ?'

'जव तुम्हें सहूलियत हो।'

'दोपहर को ठीक है ?'

'दो···प···ह···र···' जैसे तोलते हुए कहा।

'सोना होगा ?' स्वर में मुस्कान का आभास था, 'अच्छा, शाम को रख लो।'

'नहीं, ऐसी कोई वात नहीं। हर इतवार को तो सोता हूं। दोपहर में ही मिल लेते हैं। कहां ?'

'हॉस्टल के पास ही कहीं। मेरी तवीयत ठीक नहीं है कुछ।'

'हां-हां, ठीक है।'

'जू ?'

विराम।

'क्या वात है ? पसंद नहीं है जगह ?'

'नहीं, ठीक है। कव ?'

'लंच के वाद, दो-ढाई के वीच, मेन गेट पर। ओक्के ?'

'ओक्के !'

'तुम्हें कुछ अटपटा-सा लगा था, जव मैंने यहां आने के लिए कहा ?

'हां। लगा तो था।'

'क्यों ?'

'क्योंकि यहां कभी आया नहीं था लड़की के साथ !'

नलिनी हंसी। पर पूरी खिलखिलाहट नहीं। मुस्कान के तनिक बाद। खनकदार। और दबी-दबी। बस, क्षणिक ही।

'मैं तो छुट्टी के दिन अक्सर ही यहां आती हूं।'

कुछ देर हम चुपचाप चलते रहे।

बायीं तरफ पुराने किले का ऊंचा, मेहराबदार दरवाजा था और जर्द, काई-लगी दीवार दूर तक चली गई थी। फसीलें, कंगूरे और बुर्ज। फिर तराशी हुई घास वाले जमीन के छोटे-बड़े कई टुकड़े। दायीं ओर पेड़ों व झाड़ियों के आसपास जंगले, गुफाएं और बावड़ी। और कच्चे-पक्के रास्तों की भूलभुलैया।

शुरू मार्च की धूप। पीली। म्लान। हल्की ऊष्मा जगाती। वातावरण में नाजुक बंदनवार-सी टंगी हुई और कहीं अदृश्य धागे से गुंथा इतवार के होने का अहसास।

'मेरा फोन पाकर तुम्हें ताज्जुब तो हुआ होगा?' नलिनी दोनों हाथ वक्ष पर बांधे थी—निगाह सामने।

'बिल्कुल ताज्जुब तो नहीं, हां, कुछ चौंका जरूर था।'

'क्यों?'

'सोचा कि तुम शनिवार को कह सकती थी।'

'हूं।' नलिनी की आंखें नीचे आ गईं, 'तब तक तय नहीं किया था।'

हवा के एक के बाद एक कुछ तेज झोंके आए। उसने एक हाथ से कंधे पर फिसलता पर्स का स्ट्रैप संभाला। और दूसरे से बाल। बाल खुले थे। लंबे। घने। बीच-बीच में ताजे शैंपू का निखार।

'एक मिनट यहां हो लें।'

संकरी क्यारी फांदकर नलिनी एक जंगले के सामने रुक गई। उसने औसत फ्लेयर की कत्थई जीन्स पहन रखी थी। और बड़े-बड़े चारखानों की कमीज। आस्तीनें कोहनियों से ऊपर तक मोड़े हुए थी।

'गुलाब…' उसने लकड़ी के फ्रेम पर एक हाथ टिकाया, तनिक झुकी और जाली से मुंह सटाकर पुकारा, 'गुलाब…'

झुंड में कहीं पीछे से एक बंदर निकला और दो-तीन छलांगों में

बाद हमारे सामने आ गया।

नलिनी ने हल्की स्मित से मेरी ओर देखा, जिसमें उपलब्धि की चमक थी।

'कैसे हो गुलाब ?' उसने पर्स से एक लिफाफा निकालते हुए कहा।

बंदर की आंखों में पहचान का सूत्र था। उसने उल्टे पंजे से अपनी ठुड्डी खुजलाई। अपने-आप कुछ चीं-चीं की। फिर जाली पर पिछली तरफ ऊपर चढ़ आया। एक छेद में से पंजा बाहर निकाला। और नलिनी की फैली हथेली से चने उठाने लगा।

'तुम गुलाब के जेंडर के बारे में श्योर हो ?'

नलिनी सामने देखते हुए मुस्कुरा दी।

मैं उसके बिल्कुल पीछे था—खंभे पर हाथ टिकाए। उसकी पीठ मेरे कंधे से छू रही थी।

मुस्कान चेहरे पर धीरे-धीरे घुल गई। होंठों के इर्द-गिर्द की लकीरें तनिक कंपकंपाईं।

'मैंने कंसीव कर लिया है।'

भाव स्थिर था। आवाज सपाट।

खुली हथेली पर से एक-एक दाना उठाया जा रहा था। पीछे दो-तीन बंदर और आ गए, तो गुलाब ने मुड़कर उन्हें गीदड़भभकी दी। नलिनी ने दूसरे हाथ से कुछ चने जंगले के दूसरे सिरे पर बिखेर दिए।

'मैं अपनी नातजुर्बेकारी से तंग आ चुकी थी। अट्ठाईसवां साल चल रहा था और यह भी नहीं मालूम था कि···' उसने सिर को एक झटका दिया, असहिष्णु भाव से, 'मैं जिंदगी के उस पैटर्न से आजिज आ चुकी थी, जिसमें कहीं कुछ नहीं होता था। आखिर यह बदन मेरे साथ है और अपनी जरूरत की बात कहता है। मैं कब तक उस एक सही आदमी के इंतजार में रहूं, जो पता नहीं, कभी आएगा भी या नहीं, या जब आएगा भी, तो इतनी देर हो चुकी होगी कि···' उसने फिर सिर को एक झटका दिया। उसी तरह, जैसे किसी की अवज्ञा कर रही हो, 'धीरे-धीरे खाओ न !' स्नेह की भर्त्सना से गुलाब की तरफ देखा, 'मैं कहीं भागी तो नहीं जा रही हूं !'

ऊपर आसमान साफ था और फुनगियों पर धूप दुबकी हुई थी। हल्की हवा में पौधों की कतारें सरसरा रही थीं। जब-तब गर्जन या चिंघाड़ सुनाई दे जाती थी।

नलिनी ने सिर घुमा कर मेरी ओर देखा, 'अभी चल कर कॉफी पिएंगे।'

हामी में सिर हिलाया।

'ऐसे क्यों देख रहे हो मेरी तरफ?'

'तुम्हारे बात करने का ढंग कुछ बदल गया है।'

पल भर ठहरकर बोली, 'मैं अपराधी महसूस नहीं कर रही हूं।'

'मैं यह नहीं कह रहा था।'

कुछ क्षण चुप्पी रही। सींखचों के भीतर भी। इसलिए चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई दे गई—एकाग्र और अनवरत।

नलिनी ने मुखाब के सामने लिफाफा उल्टा करके हिला दिया, 'बस, खेल खतम, पैसा हजम।' फिर लिफाफे की एक पर एक तह लगाई और झाड़ी के पीछे उछाल दिया, 'मैंने इतिमा की थी, तो दूसरी ओर से कुछ अजीब-सी प्रतिक्रिया हुई। जैसे कि मैं खेल के कायदे नहीं जानती, और कि आदमी को आज के नतीजों के लिए जिम्मेदार या गारंटीदार मानना दकियानूसी बात है। फिर एहसान-सा जताते हुए कहा गया कि ठीक जगह का पता करके बताऊंगा। शनिवार तक बताने की बात थी।' चेहरे पर सख्ती आ गई, 'अब मैं उससे कोई मदद नहीं चाहती।'

नलिनी सीधी हुई और हाथ जेबों में डाल लिए। पल भर चौड़ी ढलवां पट्टी संभलकर पार की और पगडंडी पर आ गए।

'मैं हॉस्टल में भी पूछ सकती हूं, लेकिन वहां बात छिपी नहीं रहेगी। मुझे वहां समझदार माना जाता है, पर यह बात सुनने के बाद…' नलिनी ने पल भर ठहरकर जैसे कल्पना में उस दृश्य का जायजा लिया और चेहरे पर वही सख्ती आ गई, 'पैसे मेरे पास काफी हैं। अगर तुम ठीक जगह का पता कर सको और मुझे से चलो, तो…' चेहरे पर एक पतली पर्त अभी भी उसी सख्ती की थी, जैसे मेरे उत्तर के बाद ही

उसे हटाना या जमाए रहना हो, 'अगर मैंने तुम्हें एम्बेरेस किया हो, तो माफ कर देना। मेरी मांग तुमसे कितनी अचानक और अजीब है, मैं जानती हूं···'

'पागलपन की बात मत करो।' स्वर में अनजाने ही स्नेह की झिड़क आ गई, 'मैं तुम्हें शाम को ही ले चलूंगा। बस, एक फोन करके जगह का पता लेना होगा।'

नलिनी नीचे देखती रही, जैसे अपने कदम गिन रही हो। कच्चे रास्ते पर कंकड़ थे और सूखी पत्तियां, जो बीच-बीच में चरमरा उठती थीं।

'जो मुझे थोड़ा-सा भी जानता है, वो समझ जाएगा कि मेरे साथ बिलकुल यही होना था। यह मेरा पहला मौका था। मुझे समझ जाना चाहिए था कि नतीजा क्या होगा। और बहुत सारी चीजों के अलावा मेरे पास अच्छी किस्मत भी नहीं है। मैं अक्सर सोचती हूं कि अगर मैं सुंदर न हो सकी, तो शायद थोड़ी खुशकिस्मत होने पर संतोष कर लेती। अच्छे नसीब वालों से मुझे सचमुच जलन होती है। जैसे मेरी चचेरी बहन। हर चीज मामूली—मामूली सूरत, मामूली पढ़ाई, लेकिन किस्मत···जो चाहती है, वही पाती है। वो उन लोगों में से है, जो नाले में भी गिरते हैं, तो हाथ में सोने की अंगूठी लिए निकलते हैं। अगर मैं खुशकिस्मत होती, तो मेरा छोटा-सा तजुर्बा वहीं खत्म हो जाता। लेकिन नहीं, और जगह भी रोहतक रोड, फ्रेंड्स कालोनी या सुंदर नगर का कोई सजीला फ्लैट ही होता—स्टीरियो से उभरता हुआ मधुर संगीत और हवा में लहराते हुए लेस-कर्टेन। लेकिन नहीं, मैंने अपना कुआंरापन खोया रोहतक रोड के एक पुराने, सीलन-भरे कमरे में मूंज की चारपाई पर···'

अगले दिन जब लंच के बाद दफ्तर लौटा, तो मेज पर संदेश रखा था कि जितन का फोन आया था और वे आपके फोन की प्रतीक्षा करेंगे।

'वैरायटी' और 'प्लेबॉय' के पन्ने पलटते हुए सोचता रहा, पर फोन करने का मन नहीं हुआ।

टी॰ डब्ल्यू॰ ए॰ व दीपेन की कापियाँ पढ़ते हुए ध्यान बार-बार जितन का आया कि वे किस तरह समय काट रहे होंगे—बिस्तर पर करवटें बदलते, कुर्सी पर सिगरेटें फूंकते, छत के शहतीर तकते। नाश्ते और खाने के समय नीचे उतरना, चित्रा का सामना करने की शर्मिंदगी, नौकर का रुख…

'कहाँ खो गए ?'

राजवंश फीकी मुस्कान से मेज पर थपकी दे रहा था।

देखा और मुस्कुराने की कोशिश की, 'कुछ नहीं, यों ही…'

'इतनी संजीदगी हीरो साइकिल की चोरी के लिए तो नहीं हो सकती।'

पल भर ठहरकर कहा, 'एक शेर है, जिसका मतलब है कि हमें अपने प्रिय लोगों की भावनाओं का बहुत खयाल रखना चाहिए। मोतियों को कहीं ठेस न लग जाए।'

इस ओर देखती नलिनी की मुस्कान डूब गई। फिर नीचे देखने लगी। फिर बोली, 'यह मोती के ऊपर निर्भर करता है।'

लगा कि वातावरण बोझिल हो गया है। अनायास कही गई कोई बात दूसरे के मन में ऐसे आसंग जगा देती है, जिनकी स्मृति भली नहीं होती।

दूसरे दिन चार बजे के लगभग डायरेक्टरी में मुकुंद के दफ्तर का नंबर देखा और डायल किया। ऑपरेटर के उठाने पर नाम बताया।

'हैलो गुलशन !' कुछ क्षणों बाद उधर से आवाज आई, 'मैं तुम्हें फोन करने ही वाला था।'

'क्या खबर है ?'

'खबर अच्छी है। गोल्ड स्टार ट्रांसपोर्ट के सनेजा हैं न, उनसे बात हो गई है। उन्हें अपने शिमला ऑफिस के लिए एक आदमी चाहिए—भरोसे का। शुरू में तनख्वाह तो बस, काम चलाने लायक ही है—चार सौ। दफ्तर के ऊपर ही कमरा भी है, जहां रहने का इंतजाम हो जाएगा। अभी उनका छोटा भाई देखरेख कर रहा है। महीने भर में

उसे हटाना या जमाए रहना हो, 'अगर मैंने तुम्हें एम्बेरेस किया हो, तो माफ कर देना। मेरी मांग तुमसे कितनी अचानक और अजीब है, मैं जानती हूं...'

'पागलपन की बात मत करो।' स्वर में अनजाने ही स्नेह की झिड़क आ गई, 'मैं तुम्हें शाम को ही ले चलूंगा। बस, एक फोन करके जगह का पता लेना होगा।'

नलिनी नीचे देखती रही, जैसे अपने कदम गिन रही हो। कच्चे रास्ते पर कंकड़ थे और सूखी पत्तियां, जो बीच-बीच में चरमरा उठती थीं।

'जो मुझे थोड़ा-सा भी जानता है, वो समझ जाएगा कि मेरे साथ बिल्कुल यही होना था। यह मेरा पहला मौका था। मुझे समझ जाना चाहिए था कि नतीजा क्या होगा। और बहुत सारी चीजों के अलावा मेरे पास अच्छी किस्मत भी नहीं है। मैं अक्सर सोचती हूं कि अगर मैं सुंदर न हो सकी, तो शायद थोड़ी खुशकिस्मत होने पर संतोष कर लेती। अच्छे नसीब वालों से मुझे सचमुच जलन होती है। जैसे मेरी चचेरी बहन। हर चीज मामूली—मामूली सूरत, मामूली पढ़ाई, लेकिन किस्मत...जो चाहती है, वही पाती है। वो उन लोगों में से है, जो नाले में भी गिरते हैं, तो हाथ में सोने की अंगूठी लिए निकलते हैं। अगर मैं खुशकिस्मत होती, तो मेरा छोटा-सा तजुर्बा वहीं खत्म हो जाता। लेकिन नहीं, और जगह भी रोहतक रोड, फ्रैंड्स कालोनी या सुंदर नगर का कोई सजीला फ्लैट ही होता—स्टीरियो से उभरता हुआ मधुर संगीत और हवा में लहराते हुए लेस-कर्टेन। लेकिन नहीं, मैंने अपना कुआंरापन खोया रोहतक रोड के एक पुराने, सीलन-भरे कमरे में मूंज की चारपाई पर...'

अगले दिन जब लंच के बाद दफ्तर लौटा, तो मेज पर संदेश रखा था कि जित्तन का फोन आया था और वे आपके फोन की प्रतीक्षा करेंगे।

'वैरायटी' और 'प्लेबॉय' के पन्ने पलटते हुए सोचता रहा, पर फोन करने का मन नहीं हुआ।

टी० डब्ल्यू० ए० व वीपेन की कापियां पढ़ते हुए ध्यान बार-बार जितन का आया कि वे किस तरह समय काट रहे होंगे—बिस्तर पर करवटें बदलते, कुर्सी पर सिगरेटें फूंकते, छत के चक्कर लगाते। नाश्ते और खाने के समय नीचे उतरना, चित्रा का सामना करने की शर्मिंदगी, नौकर का रुख...

'कहां खो गए ?'

राजवंश फैली मुस्कान से मेज पर थपकी दे रहा था।

देखा और मुस्कुराने की कोशिश की, 'कुछ नहीं, यों ही...'

'इतनी संजीदगी हीरो साइकिल की कॉपी के लिए तो नहीं हो सकती।'

पल भर ठहरकर कहा, 'एक शेर है, जिसका मतलब है कि हमें अपने प्रिय लोगों की भावनाओं का बहुत खयाल रखना चाहिए। मोतियों को कहीं ठेस न लग जाए।'

इस ओर देखती नलिनी की मुस्कान डूब गई। फिर नीचे देखने लगी। फिर बोली, 'यह मोती के ऊपर निर्भर करता है।'

लगा कि वातावरण बोझिल हो गया है। अनायास कही गई कोई बात दूसरे के मन में ऐसे प्रसंग जगा देती है, जिनकी स्मृति भली नहीं होती।

दूसरे दिन चार बजे के लगभग डायरेक्टरी में मुकुंद के दफ्तर का नंबर देखा और डायल किया। ऑपरेटर के उठाने पर नाम बताया।

'हैलो गुलशन!' कुछ क्षणों बाद उधर से आवाज आई, 'मैं तुम्हें फोन करने ही वाला था।'

'क्या खबर है ?'

'खबर अच्छी है। गोल्ड स्टार ट्रांसपोर्ट के तनेजा हैं न, उनसे बात हो गई है। उन्हें अपने शिमला ऑफिस के लिए एक आदमी चाहिए—भरोसे का। शुरू में तनख्वाह तो बस, काम चलाने लायक ही है—चार सौ। दफ्तर के ऊपर ही कमरा भी है, जहां रहने का इंतजाम हो जाएगा। अभी उनका छोटा भाई देखरेख कर रहा है। महीने भर में

जब ये काम समझ लेंगे, तो वो अपनी चंडीगढ़ ब्रांच में वापस आ जाएगा।'

एक पल को मेरी धड़कन बढ़ गई, 'तो क्या जित्तन ने मंजूर कर लिया?'

'कल रात को तो वो चुप रहा था, पर आज लंच से पहले यहीं ऑफिस में आ गया और हामी भर दी। मैंने तनेजा के यहां जाकर मिलवा भी दिया।'

'तो बात पक्की हो गई?'

'बिल्कुल। मैंने दो-चार दिन में जाने के लिए कहा था, पर वह बोला कि नहीं, आज ही जाऊंगा।'

'आज?'

'उसने बड़ी जिद की भई, क्या करता! हारकर कालका मेल का टिकट मंगवा दिया। वैसे एक नजर से देखो, तो अच्छा ही है। जब एक बार फैसला कर ही लिया है, तो···नहीं क्या?' स्वर में सफाई की याचना थी।

'जी, बात तो ठीक है।' क्षण भर चुप्पी रही, 'अब कहां हैं?'

'घर होगा। कहा था कि पैकिंग करूंगा।'

'अच्छा।'

मुकुंद ने जैसे कुछ हिचकिचाकर कहा, 'गुलशन भैया, बिंदो भाभी को जरा समझा देना। यह घर भी उन्हीं लोगों का है, पर तुम्हारे कहने पर ही मैंने···'

'आप ऐसा बिल्कुल मत सोचिए। हम सब आपके शुक्रगुजार हैं। आपने वही किया है, जो हम चाहते थे। और उसी में जित्तन की भी भलाई है।'

विराम।

'अच्छा, फिर कभी आना। बिंदो को भी लाना।

'जी हां। हम लोग चक्कर लगाएंगे।'

'अच्छा···'

उधर से लाइन कट जाने के बाद भी कुछ क्षणों तक चोंगा वैसे ही मुट्ठी में दबा रहा। फिर आहिस्ता से उसे क्रैडिल पर रख दिया। फिर मेज पर टिकी दोनों कोहनियों की उंगलियां आपस में उलझा लीं।

गहरी सांस ली।

'तो जितन जा रहे हैं।'

कहा।

खाली कमरे में अपनी आवाज और ऊंची मालूम हुई।

जब स्कूटर से उतरा, तो छह बज रहे थे। कुंडा खोलते-खोलते देखा, बरामदे में तीनों थे—ममा, बिंदो और सोमू।

'ठीक वक्त पर आए। चाय बिलकुल गर्म है।' मेरे सीढ़ियों तक पहुंचने पर बिंदो बोली और केतली उठाकर पानी डालने लगी।

पास की कुर्सी पर बैठा। सामने की प्लेट से दो-तीन वेफर्स उठाए। ममा के चेहरे पर तनाव के चिह्न थे। शायद उनके व बिंदो के बीच अभी-अभी कुछ बात हुई थी।

'खबर मिल गई क्या?'

'हां।' बिंदो प्याली में चीनी चलाते हुए बोली, 'चित्रा ने फोन किया था।'

एक-दो घूंट लेकर पूछा, 'जितन हैं क्या अंदर?'

बिंदो ने इनकार में सिर हिलाया।

'अरे, मुकुंद ने तो बताया था कि दोपहर में ही यहां से चले गए थे।'

बिंदो ने एक गहरी सांस ली, 'अब जाने से पहले थोड़ा-सा नाटक भी नहीं होगा क्या?'

घंटे भर बाद भीतर गया। नहाया। कपड़े बदले। फिर बाहर आया। बरामदे में सिर्फ बिंदो थी। उसी कुर्सी पर। पैर सामने छोटी मेज पर टिका लिए थे।

'देखते तो हैं आए दिन तमाशे। क्या हालत कर लेता है वो बरसों!'

बिंदो ने सख्ती से जबड़े भींच लिए, 'किस्मत है उसकी!'

'किस्मत उसकी है या...'

'ममा!' बिंदो बौखला उठी, 'आखिर तुम चाहती क्या हो? मैंने तुमसे कहा है कि जो कुछ हो रहा है, बिलकुल ठीक हो रहा है। बल्कि आज से कम से कम एक साल पहले हो जाना चाहिए था।

'हूं, अगर तुम्हारी समझ से सब कुछ चलता, तो न जाने कब से...'

'ममा!' मैंने यकायक अपनी आवाज सुनी, 'यह बिंदो का निजी मामला है। जो वो ठीक समझती है, कर रही है।'

'सिर्फ वो ही क्यों, तुमने खुद मुकुंद से क्या कहा था?'

'मैंने वही कहा था, जो ठीक समझा था।'

'क्या ठीक समझा था?'

'कि इस चीज को खींचने से अब कोई फायदा नहीं, कुछ न कुछ फैसला होना ही चाहिए।'

'और जो कुछ हो रहा है, उसके अलावा फैसला हो भी क्या सकता है!'

'लगता तो यही है।' बिंदो बोली।

ममा के होंठों के कोने वक्र हो गए, 'तुम्हें तो लगेगा ही।'

'सवाल सिर्फ मेरा है, क्योंकि जिंदगी तो मेरी ही बनती है।'

ममा ने तेजी से कहा, 'तब फिर मुझे क्यों सुननी पड़ती हैं इस तरह की बातें?'

बिंदो एक पल सोचती दृष्टि से देखती रही। फिर बोली, 'ठीक है। मैं छोड़ दूंगी यह घर! फिर तो कोई तुम पर उंगली नहीं उठाएगा?'

'अभी भी सोच लो। बिना खूंटे की गाय की तरह जगह-जगह मुंह मारने से तो अच्छा है कि...'

'बस, बहुत हुआ।' मैं चीखा।

बिंदो आवेश में कुर्सी से उठ खड़ी हुई, 'अगर तुममें जरा-सी भी शर्म बाकी है, तो एक लफ्ज भी मुंह से मत निकालना।'

नौ बजे मैंने मुकुंद के यहां फोन किया। पति-पत्नी दोनों ही नहीं थे। नौकर ने बताया कि जित्तन साब तो सुबह ग्यारह बजे ही चले गए थे—अपने कपड़े पहनकर। फिर वापस नहीं आए।

डाइरेक्टरी में गोल्डन ट्रांसपोर्ट देखा। फिजूल लग रहा था। पर फिर भी डायल किया। कुछ देर बाद रिसीवर उठाया गया। जवाब मिला कि वह चौकीदार है। दफ्तर तो बंद है, वह इस नाम के आदमी के बारे में कुछ नहीं जानता। हां, मालिक का नंबर है। और उसने डायरेक्टरी में दिया हुआ निवास का नंबर दुहरा दिया।

कुछ क्षण हाथ में चोंगा लिए सोचता रहा। नौकरी तै होने के ही दिन अगर जित्तन के बारे में ऐसी पूछताछ की जाएगी, तो उनके बारे में क्या धारणा बनेगी?

रिसीवर रख दिया।

आठ-दस मिनट बाद बाहर ऑटो-रिक्शा के रुकने की आवाज आई। कुंडा खुला। बंद हुआ। फिर सीढ़ियों पर प्रकाश की सीमा में जित्तन की आकृति आ गई।

'हैलो गुल्लू। कैसे हो?' उनकी आवाज वैसी नहीं थी, जैसी हमेशा होती थी। कहीं कुछ अंतर लगा।

'ठीक हूं। कहां थे आप? हम लोग कब से इंतजार कर रहे हैं।'

'बस, ऐसे ही···'

वे निकट आए, तो सांस से व्हिस्की की गंध आई।

कुछ पलों के मौन में हमने एक-दूसरे को देखा। उनके चेहरे पर संजीदगी थी। ठंडक से मिलीजुली। आंखों में आहत भाव भी था और सूक्ष्म आरोप भी।

लगा कि मैं कुछ कहने को हूं।

तभी यकायक झटके से उन्होंने कलाई देखी, 'अच्छा यार, वक्त बहुत कम है। मैं जरा सामान देखूं।

'तुम्हारी पैकिंग मैंने कर दी है।' बिंदो ड्राइंगरूम के दरवाजे पर आकर खड़ी हो गई थी, 'एक सूटकेस में गर्म कपड़े, एक में सूती।

होल्डॉल में कंबल और लिहाफ भी रख दिया है। फिर भी एक बार तुम देख लो, और कुछ तो नहीं चाहिए।'

जित्तन ने उड़ती-सी नजर से बिंदो को देखा। फिर अंदर चले गए।

ममा रसोई की ओर से आईं, 'जित्तन आ गए क्या ?'

'हां।' मैंने कहा।

तभी जित्तन गलियारे से निकले—दोनों हाथों में एक-एक सूटकेस पीछे सोमू। चेहरे पर ऐसा भाव, जैसे जो कुछ घट रहा है, वह उसकी समझ में नहीं आ रहा।

ममा मुस्कान से मुड़ीं, 'खाना खा लो जित्तन ! तैयार है।'

'मैंने खा लिया है।'

'अभी से कहां से खा लिया ? थोड़ा-सा कुछ···'

'बहुत खाया है इस घर में। शुक्रिया, बहुत-बहुत शुक्रिया।'

जित्तन बरामदे से उतरकर गेट तक पहुंच गए।

मैंने अंदर से बेडिंग उठाया और बाहर रखा। जब अंदर पहुंचा तो जित्तन झुके हुए नंबर डायल कर रहे थे।

'सोमू ने भी नहीं खाया। तुम्हारे ही साथ खा लेगा थोड़ा-सा।'

'टैक्सी भेजिए, इक्कीस नंबर पर···' जित्तन रिसीवर रखकर सीधे हुए, मेरे जाने के बाद खा लेगा। वैसे भी अब इसे आदत डालनी चाहिए मेरे बिना !' उन्होंने सोमू के सिर पर हाथ रखा और उसके बाल सहला दिए, 'गर्मियों की छुट्टियों में आएगा पापा के पास ?'

सोमू ने बड़ी-बड़ी आंखों की कातर दृष्टि से देखा उनकी ओर और हामी में सिर हिला दिया।

पल भर चुप्पी रही।

'अच्छा···'

ममा की ओर देखते हुए जित्तन बोले और बाहर निकल आए।

तभी लंबे हॉर्न के साथ बाहर टैक्सी रुकी। ड्राइवर उतरा और डिक्की खोलने लगा। जित्तन ने फुर्ती से दोनों सूटकेस रख दिए। मैंने बेडिंग। फिर सड़क वाले दरवाजे से अंदर बैठ गया।

जित्तन ने झुक कर सोमू का माथा चूमा, 'अच्छा बेटे···' सीधे हुए और एक बार पीछे देखा।

विंदो गेट के पीछे खड़ी थी और ममा गेट के बाहर।

जित्तन ने ममा की ओर देखा और हाथ जोड़ दिए, 'अच्छा, नमस्ते।'

लगा कि ममा कुछ कहने को हुईं, फिर रुक गईं।

जित्तन ने खट् से दरवाजा खोला और पीछे बैठ गए। इंजन स्टार्ट होने के साथ पीछे सोमू की ओर देखा और हाथ हिलाया, 'अच्छा बेटे ? टा टा···'

रास्ते में जित्तन से कोई बात नहीं हुई। वे खिड़की पर बांह टिकाए थे और सिर भी कांच से सटा हुआ था। आंखें कुछ मुंदी, जैसे गहरी चिंता में डूबे हों। एकाध बार मन में आया कि उनसे कुछ कहूं, माफी-सी कुछ मांगू कि मुझे गलत मत समझिए, पर उनके चेहरे के भाव से लगा कि सब व्यर्थ होगा। कम से कम इस समय।

कुछ वक्त बीतने दो। शायद इसके बाद···

अपनी तरफ की खिड़की पर झुका रहा। तेजी से नीचे फिसलती सड़क। मुंह पर लगते हवा के थपेड़े।

पोर्टिको में टैक्सी के रुकते-न-रुकते एक कुली लपका और गाड़ी का नाम पूछा। जवाब सुनकर वह बदहवासी से सामान की ओर लपका।

'दौड़ कर चलिए। छूटने ही वाली है।'

दौड़कर ही हमने पुल पार किया। इस ओर से जाते लोगों से कतराना। सामने वालों से तिरछे हो बचना। नेपथ्य में शंटिंग, सीटी, चीख-पुकार। दुलकी चाल से सीढ़ियां उतरना। जोर-जोर से धड़कता दिल। माथे पर पसीने की नमी···

जित्तन ने दो पल ठिठक कर दो डिब्बों पर चिपके चार्ट में नाम देखा। तभी एक लंबी सीटी हुई।

'इसी में घुस जाइए, बाद में···' कुली बदहवास-सा पीछे से

चिल्लाया।

गाड़ी का रेंगना शुरू होने के साथ जिलन ने अपना चार्ट देखा।

'यही है।' वे हाथ हिलाते हुए चिल्लाए और लपककर चढ़ गए। कुली ने पहले होल्डॉल फेंका, फिर सूटकेस। तब तक जिलन ने जेब से एक नोट निकाल लिया था। दूसरा सूटकेस कुली से लेते हुए उन्होंने नोट उसे थमा दिया।

'अच्छा गुल्लू!' जैसे सहसा याद आ जाने पर उन्होंने पीछे देखा।

'अच्छा...' मैंने हाथ हिलाया।

दो क्षण में खटाखट करते डिब्बे निकल गए। पीछे की लाल बत्ती जल रही थी और वह भी बहुत जल्दी ओझल हो गई।

कमरे में दाखिल हुआ, तो नलिनी आरामकुर्सी पर बैठी किताब पढ़ रही थी।

'हाइ...' मैंने प्रफुल्ल हांक लगाई।

उसने मुस्कान के साथ किताब बंद की।

'पूरी हो गई किताब?'

'कहां।' मैं तो सो रही थी।

'सचमुच?'

'हूं, अभी आध घंटा पहले उठी हूं।' क्षण भर के मौन के बाद कहा, 'चलें?'

सहमति में सिर हिलाकर उठ खड़ा हुआ।

वातावरण में गंध थी—दवा की, रोग की।

नलिनी ने एयरबैग कंधे पर डाला, पर्स हाथ में लिया और आगे को आ गई। दरवाजे से निकलते-निकलते उसने अपना बटुआ मेरी जेब में खिसका दिया।

रिसेप्शनिस्ट ने बिल तैयार कर रखा था। मैंने नोट उसकी ओर बढ़ा दिए। कुछ बचे पैसे निकालते हुए उसने पूछा, फिर बोला [illegible] 'आपके लिए टैक्सी मंगा दूं?'

'प्लीज...'

चिल्लाया।

गाड़ी का रेंगना शुरू होने के साथ जित्तन ने अगला पार्ट देखा।

'यही है।' वे हाथ हिलाते हुए चिल्लाए और लपककर चढ़ गए। कुली ने पहले होल्डॉल फेंका, फिर सूटकेस। तब तक जित्तन ने जेब से एक नोट निकाल लिया था। दूसरा सूटकेस कुली से लेते हुए उन्होंने नोट उसे थमा दिया।

'अच्छा गुल्लू!' जैसे सहसा याद आ जाने पर उन्होंने पीछे देखा।

'अच्छा...' मैंने हाथ हिलाया।

दो क्षण में खटाखट करते डिब्बे निकल गए। पीछे की लाल बत्ती जल रही थी और वह भी बहुत जल्दी ओझल हो गई।

कमरे में दाखिल हुआ, तो नलिनी आरामकुर्सी पर बैठी किताब पढ़ रही थी।

'हाइ...' मैंने प्रफुल्ल हांक लगाई।

उसने मुस्कान के साथ किताब बंद की।

'पूरी हो गई किताब?'

'कहां।' मैं तो सो रही थी।

'सचमुच?'

'हूं, अभी आध घंटा पहले उठी हूं।' क्षण भर के मौन के बाद कहा, 'चलें?'

सहमति में सिर हिलाकर उठ खड़ा हुआ।

वातावरण में गंध थी—दवा की, रोग की।

नलिनी ने एयरबैग कंधे पर डाला, पर्स हाथ में लिया और आगे को आ गई। दरवाजे से निकलते-निकलते उसने अपना बटुआ मेरी जेब में सिरका दिया।

रिसेप्शनिस्ट ने बिल तैयार कर रखा था। मैंने नोट उसकी ओर बढ़ा दिए। कुछ बचे पैसे निकालते हुए उसने पूछा, सिर नीचा किए ही, 'आपके लिए टैक्सी मंगा दूं?'

'प्लीज़...'

'थोड़ी देर कहीं बैठें ?'

'हां, हां।'

चौराहे का गोल चक्कर काटते हुए उसने मंडी हाउस गेट पर के किओस्क की तरफ इशारा किया, 'यहां···' और ड्राइवर की ओर उन्मुख हुई, 'बस···'

'कभी-कभी चीजें कितनी बेमानी लगती हैं।' नलिनी धीमे स्वर में बोली। वह हाथ गोद में रखे थी। और पीछे गेट के जंगले से सिर टिकाए थी। निगाह सामने, अनमनी, जहां गोल चक्कर में जहां-तहां रोशनियां थीं और ट्रैफिक का कभी कम और कभी ज्यादा आवाज के साथ लगातार बहाव था।

मन ही मन कितनी देर से इस तरह की बात की बाट जोह रहा था, लेकिन फिर भी सुनकर अच्छा नहीं लगा। अपनी अपेक्षा के साबित होने का हलका दर्प नहीं, बल्कि मद्धिम कातरता के साथ मिली उदासी। और उसे पल-पल दबाता भारीपन।

'आपरेशन-टेबिल पर लेटते समय मुझे रोहतक रोड के उस कमरे की याद आई। उस आवेग और उन्माद का ऐसा बेतुका अंजाम। लगा कि बदन की ही नहीं, दुनिया की भी पूरी बनावट ही गलत है।' नलिनी ने ऐसा मुंह बनाया, जैसे कोई कड़वी चीज दांतों तले आ गई हो, 'सोचती रही कि अगर उस समय पता होता कि यह होने वाला है, तो क्या वह करती जो किया ?' इस बार नलिनी का स्वर धीमा था—बिना चढ़ाव-उतार के। सधा। समतल, 'उस समय प्रक्रिया से निकलते हुए लग रहा था कि नहीं, बिल्कुल नहीं। पर अब लग रहा है कि हां, क्यों नहीं, लेकिन किसी तरह की बुनियादी खुशी के साथ नहीं। बस, एक फर्ज है, जैसे और बहुत कुछ करते हैं, उसी तरह।'

हवा थी, इसलिए दो तीलियों के बाद सिगरेट जल पाई। चाय का एक बड़ा घूंट लिया।

जंगले के पीछे जमीन का लंबा टुकड़ा था, जहां घास थी, और यहां-वहां कुछ पौधे। पीछे मद्धिम रोशनी थी, जिसके पीछे अंधेरा तीलियों की तरह अटका था।

कि कहना चाहिए । उसकी ओर देखा । सोचा कि शायद
सुनने की अपेक्षा है । पर तभी उसके होंठ फिर हिल उठे ।
से मैंने अपने को कैसे लुका-छिपाकर रखा है ।' शायद अपने
हंसने वाले भाव की कचोट के साथ, 'संस्कार ही ऐसे थे ।'
लिनी की आंखों में वह छाया थी, जो अतीत में दूर तक झांकने
खाई देती है—व्यवधान और विकृति में अपने को पहचानने की
श करती, लगाव व विद्रूप के बीच कहीं ।

'इस पल दोनों ही बातें व्यर्थ लग रही हैं—अपने को जकड़कर
ना भी, और अपने को बिल्कुल ढीला छोड़ देना भी ।

कुछ ठहरकर कहा, 'तलाश इसी तरह तो चलती है ।' और सामने
कायक एक शाम कौंध गई, जब मैं घर में घुस रहा था, और बिंदो
बाहर निकल रही थी—चौड़ी बेल्ट के साथ सिल्क की मैक्सी पहने,
अच्छी लंबाई को प्लेटफार्म व्हील में और ऊंचा बनाए । कंधे पर पर्स
और आतुरता में पैर बरामदे की सीढ़ी पार करते । वह एक क्षण जैसे
फ्रीज हो गया—आंखें वक्र, होंठ मुस्कुराहट में खिंचे । उसके चेहरे पर
वैसी आभा कभी नहीं देखी । पुरानी बिंदो के खोल से यह नयी बिंदो
निकल आई थी—अतीत की परतों को रगड़-रगड़कर त्वचा से उतारती ।
मन की सबसे निजी सतह पर किसी और के लिए सांस लेती । घर की
चारदीवारी में भी किसी और की निकटता से दीप्त ।

'तलाश...' नलिनी ने जैसे तोलते हुए कहा ।

क्षण भर के लिए हमारी दृष्टि मिली रह गई ।

गेट के निकट आकर हम ठिठके ।

'अच्छा...' मैंने कहा ।

नलिनी ने बहुत बारीक स्मित दी ।

आसपास ऊंचे पेड़ थे । और उनके नीचे सिमटा अंधेरा ।
हॉस्टल के बरामदे में जलती रोशनी । आसमान पर फीका-सा
और पूरे दृश्य पर हलकी-सी अयथार्थता की पर्त—जैसे मैं ख
दृश्य का एक हिस्सा नहीं हूं, बल्कि दूर कहीं पर्दे पर यह सब दे

अंधेरे से परे

हूं—अपने समेत।

पहले नलिनी तनिक-सी आगे झुकी, या शायद मैं, या शायद दोनों ही।

बहुत छोटा, संक्षिप्त चुंबन था—अपनी पूरी शारीरिकता से कटा हुआ। जिस्म की किसी भी तरह की अनुभूति के बिना। बराबरी व साझेदारी की मुहर की तरह।

स्कूटर से वापस आते समय थोड़ी देर चुप्पी रही।

'फिल्म कैसी लगी सोमू ?'

पल भर उसके चेहरे पर कहीं दूर होने का भाव रहा। फिर धीमे स्वर में बोला, 'अच्छी थी।'

स्टेट्समैन पर लाल बत्ती थी।

'गुल्लू मामा।'

'हूं ?'

'मम्मी कहां है ?'

क्षण भर ठहरकर कहा, 'अपने एक दोस्त के पास। रात तक आ जाएगी।'

'कौन ?'

'तुम जानते नहीं।'

'आदमी है ?'

'हां।'

बत्ती हरी हुई, तो एक हिचकोला लेकर स्कूटर बायीं ओर घूम गया। कुछ क्षणों बाद कर्ज़न रोड पर फिर लाल बत्ती।

'पापा का घर कैसा है ?'

'मैंने देखा नहीं।'

'मालूम है, कितना बड़ा है ?'

'शायद एक कमरा है।'

कुछ पल थमने के बाद जनपथ से पहले लाल सिग्नल।

'मैं गर्मियों में आऊंगा ?'

रुककर कहा, 'हां ।'

सोमू तनिक ठहरा, 'मम्मी नहीं जाएगी ?'

'नहीं ।'

जब दरवाजे पर हलकी खट्-खट् हुई, तो अवस्था सोने और जागने के बीच की थी—सोने की ओर कम, जागने की तरफ ज्यादा ।

'हां...' सामने देखते हुए कहा ।

दरवाजा खुला और पर्दे के बीच विदो का चेहरा झलका, 'गुड मार्निग...'

ताजा । तैयार । स्कीवी और फ्लैयर्स । दोनों हाथों में कप ।

'कहां जा रही हो सुबह-सवेरे ?'

'सूरजकुंड !' घड़ी की ओर देखा, 'पांच-दस मिनट बाद अमित पिक करेंगे ।' एक कप से एक घूंट लिया ।

'अच्छा...' पीछे टेक लगाकर बैठ गया ।

'लो, थोड़ी-सी ब्रश किए बिना ही पी लो ।' उसने दूसरा कप आगे बढ़ाया ।

'मुंह के बासीपन को चीरती हुई गरमाहट ।

'तुम्हारा क्या प्रोग्राम है ?'

पल भर ठिठका—सोमू ?

'नहीं, उसकी कोई मुश्किल नहीं । थोड़ी बाद बालभवन ज है । लौटकर बबलू के साथ रुद्रा के यहां चला जाएगा । चार वापस आऊंगी, तो ले लूंगी ।' विदो मेज के किनारे से टिक 'ममा का लंच तो कहीं बाहर है—कॉफीसेशन के बाद कहीं । करोगे ? दो-तीन सैंडविचेज मैंने रख दी हैं । अभी बनाई थीं

'देख लूंगा ।'

'वैसे रात की सब्जी रखी है । दही भी ।'

'ठीक है ।'

गमी होंने बजा। छोटा। फिर लंबा।

'अच्छा···' बिंदो सीधी हुई।

'ओक्के···'

घड़ी देखी। ग्यारह। सिर्फ ग्यारह बजे थे।

शुरू से आखिर तक दो अखबार पढ़ लिए थे। शेव करके नहा लिया था। नाश्ता कर चुका था। दो-चार छोटे-छोटे कपड़े धो लिए थे। कमरा थोड़ा-सा ठीक कर लिया था। और केवल ग्यारह बजे थे। एक कप कॉफी बनाई और बाहर निकल आया। धूप उजली थी। शुरू अप्रैल की गर्माहट के साथ। इतवार की सुबह में हलकेपन से मिलीजुली।

धीमी हवा। कभी-कभी किसी पत्ते का झरना।

सड़क पर थोड़ा ट्रैफिक। रोज से कम। कुछ धीमा।

पर कुछ अजीब ढंग से खामोश था—मनहूस-सा। खाली बरामदा। *खाली कमरे। कुर्सी। मेहरी। और ऑफिस।*

देखते-देखते यकायक लगा कि नहीं, अब और नहीं।

तेज-तेज अंदर आया। फोन के पास रुका। नंबर डायल करने लगा।

'नलिनी है?'

एकाध मिनट के बाद नलिनी की आवाज सुनाई दी, 'हैलो···'

'क्या कर रही हो?'

'कुछ नहीं।'

'बाहर आओगी?'

'जरूर।'

'थोड़ी देर बैठेंगे। दोपहर के शो में कोई फिल्म देखेंगे।'

'ओक्के···'

'पंद्रह-बीस मिनट बाद रेडिय···'

'ठीक।'

आलमारी से पर्स लिया। मेज की चाबी घुमाई। और बड़े-बड़े कदमों से बाहर निकल आया।